अक्टूबर - ९४
महालक्ष्मी विशेषांक
मूल्य - १५/-
मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
सर्वथा गोपनीय
भगवती महालक्ष्मी के
१०८
सिद्ध सचोट सफल प्रयोग

आह्लाद शक्ति उत्सव

ललिताम्बा षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना

(६ से १२ अक्टूबर १९९४)

लखनऊ

सांस्कृतिक कार्यक्रम

- छत्तीस गढ़ के कलाकारों द्वारा कृष्ण कथा का सजीव प्रस्तुतिकरण।
- नवोदित साधिकाओं द्वारा आकर्षक सामूहिक नृत्य व गान।

और इस उल्लास के पर्व में आप के पांव भी तो थिरक रहे होंगे।

विलक्षण होंगे ये प्रयोग

लक्ष्मी कल्पवृक्ष प्रयोग
सिद्धाश्रम गमन प्रयोग
रति काम सौन्दर्य प्रयोग
बगलामुखी देह स्थापन प्रयोग
स्वामी सच्चिदानन्द हृदयस्थ प्रयोग

नवरात्रि को मनाने का एक नवीन क्रम, एक अनूठी शैली उन विलक्षण प्रयोगों के साथ, जो साधना ग्रंथों में नहीं वरन गुरु परम्परा में मिलते हैं। श्री विद्या साधना, श्री यंत्र साधना की गोपनीय परम्पराओं में मिलते हैं, तभी तो **पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी** के सान्निध्य में सम्पन्न हो रहे हैं वे दुर्लभ प्रयोग, जो गोपनीय रहे हैं, जो संन्यस्त साधकों की सम्पदा रहे हैं, क्योंकि यह एक साधना शिविर ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जीवन क्रम होगा, जीवन के सभी पक्षों को स्पर्श करता हुआ, किसी भी असुविधा से बचने के लिए। समय से काफी पूर्व सम्पर्क कर अपना स्थान आरक्षित करा लें।

सम्पर्क

डॉ० एस. के. बनर्जी, आनन्द होमियो हॉल, फैजाबाद, (उ. प्र.), फोन : ०५२७-८१२५६५
श्री एस. के. मिश्रा, ३१७, मधवापुर, इलाहाबाद (उ. प्र.)
श्री सी. डी. शर्मा, लखनऊ, फोन : ०५२२-३८३६००
श्री वेद प्रकाश शर्मा, सी. २१/११, पेपर मिल कॉलोनी, निशात गंज, लखनऊ
श्रीमती मनमोहिनी शर्मा, लखनऊ, फोन : ०५२२-७२४९८
श्री एस. सी. कालरा, फोन : ०५३६-७२१६, ७२३७

शिविर शुल्क - ६६०/-

आयोजन स्थल : कमर्शियल काम्पलेक्स, विश्वास खंड - ३, गोमती नगर, लखनऊ

अजयकुमार उत्तम "निखिल"

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

प्रार्थना

सर्व मंगल मांगल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते।।

हे भगवती नारायणी! आप समस्त संसार के प्राणियों के मनोरथ सिद्ध करें और उनका मंगल करें, हम सभी आपकी शरण में हैं, आपको नमस्कार है।

नियम

अनुक्रमणिका

साधना

कथ्य

स्तम्भ

रोमांचक

ज्योतिष/साक्षात्कार

सद्गुरुदेव

चिकित्सा

विवेचनात्मक

विशेष

पाठकों के पत्र

● मैंने इलाहाबाद शिविर में गुरु दीक्षा और सिद्धाश्रम दीक्षा प्राप्त की और नियमित रूप से घर आकर गुरु मंत्र का जप करता रहता हूं। एक दिन मेरी पत्नी की तबियत अचानक बहुत ज्यादा खराब हो गयी। गुरु मंत्र से अभिमंत्रित कर जल पिलाया तो वह ठीक हो गयी। मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि गुरु मंत्र द्वारा बीमारी भी ठीक की जा सकती है। क्या मुझे नियमित रूप से गुरु मंत्र का जप करते रहना चाहिए?

संजय कुमार मिश्र
आनन्दबाग, कानपुर

आप नियमित रूप से गुरु मंत्र का जप करते रहें और आप के लिए ज्यादा अनुकूल होगा यदि आप गुरु मंत्र के सवा लाख मंत्र जपअनुष्ठान सम्पन्न कर लें।

– उप सम्पादक

● **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका का मैं सन् १९९३ से सदस्य हूं। इसमें दी गयी साधना **कामाख्या तंत्र** (फरवरी ९४) को सम्पन्न करने के बाद से मुझ बेरोजगार को रोजगार प्राप्त हो गया है। हे दयानन्द! आपके चरणों में मेरा बार-बार प्रणाम स्वीकार हो। अपने जीवन को प्रत्येक प्रकार से सुखी रखने के लिए किस साधना को करना उचित रहेगा?

बालाराम ध्रुव, ग्राम अरोद,
जिला- रायपुर (म० प्र०)

यक्षिणी साधना आपके लिए अनुकूल रहेगी।

– उप सम्पादक

● मैं तथा मेरे परिवार के सभी लोग **जनवरी ९४ से मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका के नियमित पाठक हैं। यह पत्रिका हमारे जीवन में सुख और सौभाग्य भरे क्षण लेकर आयी है। विगत दो वर्षों से हम सभी मानसिक, आर्थिक व व्यवसायिक रूप से काफी परेशान रहे, आपके प्रसाद स्वरूप पत्रिका को प्राप्त कर हम सभी को बहुत शान्ति मिली है। आप के आशीर्वाद का आकांक्षी।

उदीप्त अग्निहोत्री
मेसर्स, नानक बाबा सर्विस,
खारी (यू० पी०)

● सितम्बर का अंक घर में आते ही ऐसा लगा जैसे कि मां भगवती जगदम्बा स्वयं साक्षात् रूप में हमारे घर आ गयी हैं। हम बहुत देर तक मुख पृष्ठ को देखते रह गए। इतनी आकर्षक पत्रिका (जो कि हमारी पत्रिका है) के लिए आप सभी धन्यवाद स्वीकार करें।

मदन मोहन पाठक,
पटना, बिहार

● **भगवती जगदम्बा विशेषांक** में प्रकाशित लेख **''जैन तंत्र सम्पूर्ण तंत्र''** पढ़ कर जैन साधनाओं के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त हुयी। इसके अन्तर्गत दिए गए **''सर्वकार्य सिद्धि दायक''** प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद आश्चर्यजनक रूप से मेरा एक रुका हुआ कार्य पूरा हो गया, जिसके लिए मैं पूरी तरह हताश हो चुका था।

राधाचन्द्र नौटियाल,
गुड़गांव (हरियाणा)

● पत्रिका में मेरा प्रिय स्तम्भ है **''राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट''** सितम्बर के अंक में इस स्तम्भ की कमी बहुत कष्टदायक लगी। कृपया आप इस स्तम्भ के प्रेमियों के साथ ऐसा अन्याय न करें।

चेतन सिंह 'सोनकर',
ठाणे, बम्बई

● मैंने पत्रिका की वार्षिक सदस्यता मार्च ९४ से ग्रहण की। जुलाई तक सभी अंक नियमित रूप से मिले, किन्तु अगस्त का अंक प्राप्त नहीं हुआ। इस प्रकार की अव्यवस्था से हमें कष्ट होता है। कृपया इस तरफ ध्यान दें।

अशोक दीक्षित,
राजाजी पुरम, लखनऊ

कार्यालय द्वारा प्रत्येक सदस्य को नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाती है। मार्ग में, हो सकता है किसी ने आप की पत्रिका ले ली हो। आप के लिए ज्यादा उचित होगा यदि आप रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगायें।

– उप सम्पादक

● सितम्बर के अंक में जब मैंने पढ़ा कि दीपावली पर जोधपुर में शिविर लगाया जा रहा है तो मैं खुशी से झूम उठा, क्योंकि बहुत प्रतिक्षा के बाद जोधपुर में शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

आनन्द
इन्दौर (म० प्र०)

● लखनऊ में नवरात्रि शिविर का आयोजन होने जा रहा है। यह जानकर मेरा हृदय आनन्द से भर गया। अपने इस सेवक को चरणकमल में सेवा का अवसर प्रदान करते हुए आज्ञा देने की कृपा करें। अपनी अवध नगरी में, श्री राम के सेवक व सहचर की नगरी में हम आप का स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं।

राकेश कुमार दीक्षित,
हरि नगर, लखनऊ

आपके हृदय में गुरु-सेवा करने की भावना प्रस्फुटित हो रही है, जानकर हमें प्रसन्नता हुई। आप भारत के अध्यात्म जगत की धरोहर इस पत्रिका को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करके, अपनी सेवा गुरु चरणों में समर्पित कर सकते हैं।

– उप सम्पादक

● पिछले वर्ष आपने **'साबर साधना विशेषांक''** प्रकाशित किया था, हमारी इच्छा है कि इस वर्ष पुनः साबर साधना तथा सम्मोहन के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करता हुआ विशेषांक प्रकाशित करें।

शैलेन्द्र कुमार सिंह,
शहडोल (म. प्र.)

वर्ष १४ | **अंक १०** | **अक्टूबर ९४**

प्रधान संपादक - नन्दकिशोर श्रीमाली

सह सम्पादक मण्डल - डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरुसेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई

संयोजक - कैलाश चन्द्र श्रीमाली, **वित्तीय सलाहकार** - अरविन्द श्रीमाली

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - ३४२००१ (राज.), फोन : ०२९१ - ३२२०९

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - ११००३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००
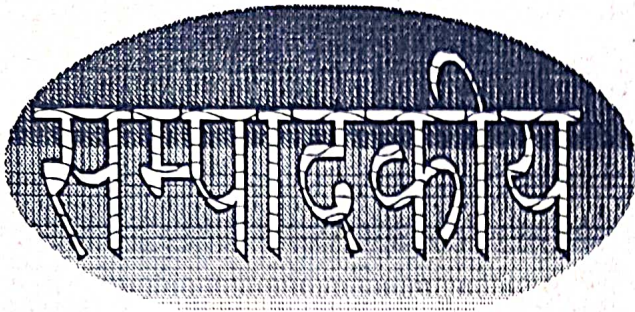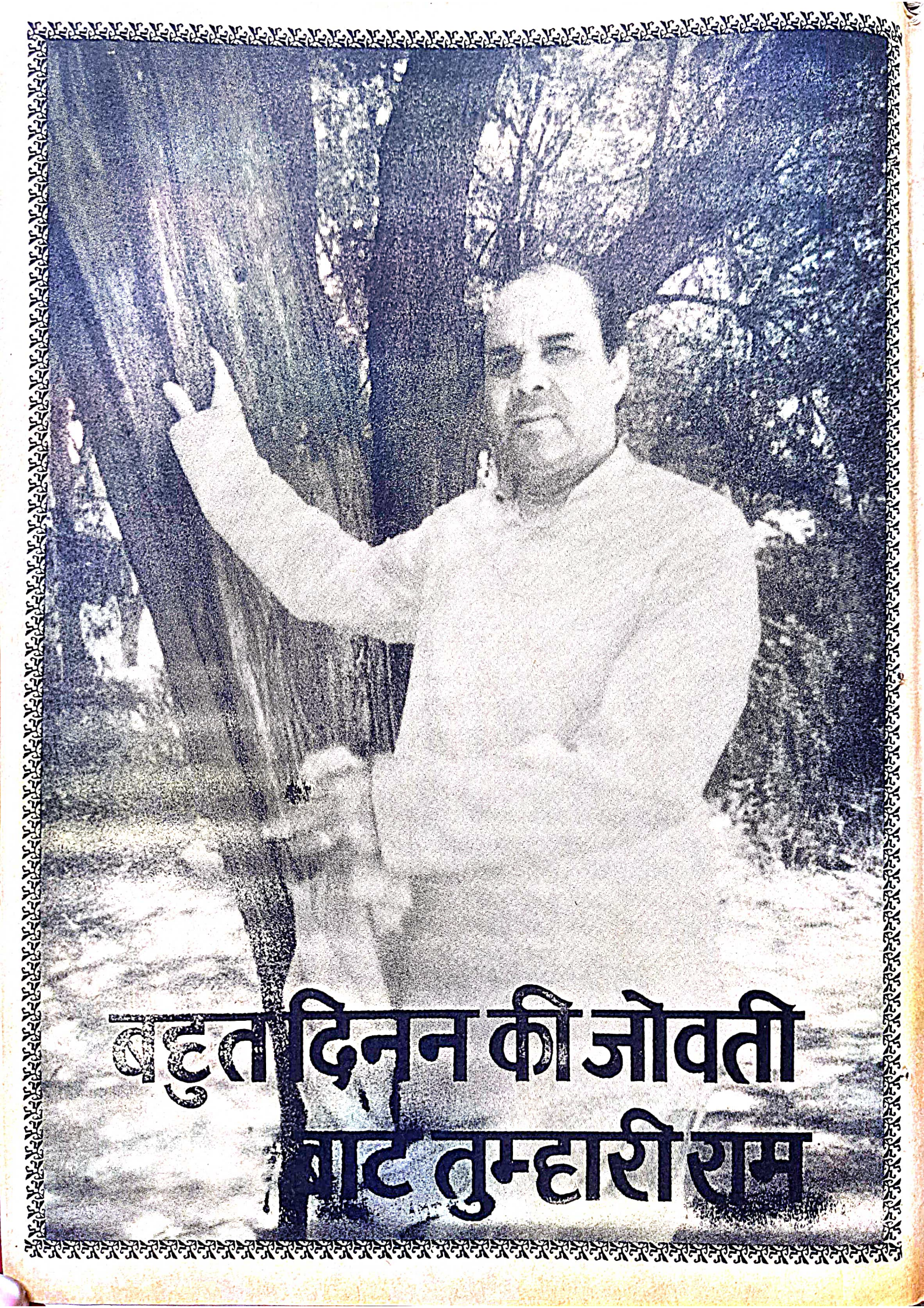
उत्सव वर्ष का एक प्रमुख पर्व दीपावली हमारे और आपके सामने आ गया। यूं तो दीपावली का पर्व हर वर्ष हमारे सामने आता है और हर वर्ष ही हम उसको परम्परागत रूप से मनाते आए हैं, किन्तु जो पूज्यपाद गुरुदेव के शिष्य हैं उनके लिए हर पर्व, हर उत्सव एक नूतन ढंग से प्रस्तुत होता है , वे उस पर्व को एक नूतन ढंग से मनाते हैं क्योंकि नूतनता की परम्परा ही गुरुदेव की परम्परा है। हमारे और आपके जीवन में साधना का बल हो, साधना ही वह विराट दीपक है, जिनके माध्यम से आह्लाद, उमंग, उत्साह हमारे आपके जीवन में निरन्तर झिलमिल प्रकाश को बिखेरता रहता है और ऐसे ही अनेक दीपकों को जलाने का अवसर बन करके, इस **''महालक्ष्मी विशेषांक''** को आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष महसूस हो रहा है।

पिछले वर्ष हमने महालक्ष्मी के १०८ प्रयोग प्रकाशित किए थे और जिन पाठकों ने इसका लाभ लिया उन्होंने अनुभव किया कि ये कितने ज्यादा उपयोगी प्रयोग हैं। पाठकों की यह निरन्तर मांग आ रही थी, कि हम उस क्रम को और आगे बढ़ायें और इस बार भी ऐसे ही प्रयोग प्रस्तुत करें। उसी क्रम में इस वर्ष भी **''भगवती महालक्ष्मी के १०८ सिद्ध सफल सचोट प्रयोग''** प्रस्तुत किये जा रहे हैं, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह उन्हीं प्रयोगों का पुनः प्रस्तुतिकरण है। ये सर्वथा नवीन प्रयोग हैं, क्योंकि जहां ज्ञान की परम्पराएं हैं, जहां साधना की परम्पराएं हैं वहां पर पुनरावृत्ति जैसी कोई बात ही नहीं होती। साधक के जीवन में पुनरावृत्ति जैसी कोई बात ही नहीं होती है। साधक तो नित्य नवीन होता हुआ उस आनन्द की प्राप्ति में संलग्न रहता है, जो कि चिरआनन्द कहा गया है, जो भारतीय जीवन की मूल परम्परा है, यही भक्त और साधक का मूल अन्तर है।

इस वर्ष इन्हीं सब भावनाओं से ओत - प्रोत होकर आपके समक्ष **''महालक्ष्मी विशेषांक''** प्रस्तुत हो रहा है। इसमें **''सर्वथा गोपनीय भगवती के १०८ सिद्ध सफल सचोट प्रयोग'', अष्ट लक्ष्मी स्वरूप साधना, आप मात्र पांच दिनों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच सकते हैं, जैन ग्रंथों में गोपनीय लक्ष्मी प्रयोग, धन-प्रदाता अप्सरा** जैसे लेख तो हैं ही, दूसरी ओर जीवन के विविध पक्षों को समाहित करता हुआ ज्योतिष, प्राण विज्ञान, लघु प्रयोग, सद्गुरुदेव सम्बन्धी विवेचनात्मक लेखों को भी यह अंक अपने-आप में समाहित कर रहा है। इस अंक का प्रमुख लेख है **'धनाक्ष स्थापन उत्सव'** जिसको कि प्रत्येक साधक को अपने जीवन में स्थान देना ही चाहिए। न केवल नए साधकों को अपितु जो हमारे सिद्ध साधक हैं उनको भी यह अनुभव करना चाहिए कि साधनाओं के क्षेत्र में जो नवीन प्रयोग हो रहे हैं उनका क्या महत्व होता है।

दीपावली तो प्रत्येक व्यक्ति मनाता है और आप तो साधक हैं। आपको चाहिए कि आप इस पूरे माह के एक-एक दिन को सफल बनायें, एक-एक दिन का उपयोग करें। इन्हीं भावनाओं से ओत-प्रोत होकर यह विशेषांक आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

आपका

नन्दकिशोर श्रीमाली

बहुत दिनन की जोवती
बाट तुम्हारी राम

यह संसार इसके समस्त क्रिया-कलाप वास्तव में एक निश्चित चक्र में गतिशील हैं। एक वर्तुल अदृश्य रूप से घूम रहा है। इसी घूमने के कारण प्रतिदिन सुबह होती है, सायं होती है और पुनः रात्रि के बाद प्रातः आती है। मनुष्य का संसार में शिशु रूप में जन्म होता है, आयु विशेष आने पर वह युवा होता है, वृद्ध होता है और अंत में शरीर त्याग कर पुनः इस चक्र में आ जाता है। ऋतुओं का आगमन, राष्ट्रों का बनना-बिगड़ना, इस पृथ्वी और ब्रह्माण्ड में निरन्तर परिवर्तन होना, मानो कोई अदृश्य सत्ता सभी को नचा रही हो। श्रद्धालु इसे आस्था की दृष्टि से देखते हैं और विज्ञान को मानने वाले अथवा तार्किक इसका विश्लेषण करना चाहते हैं, किन्तु उसे भी अन्ततोगत्वा किसी अदृश्य सत्ता का अस्तित्व मानना ही पड़ता है, जिसे वह अणुओं का संयोजन-वियोजन कहता है, उसको संचालित करने वाले 'किसी' को स्वीकार करना ही पड़ता है। विज्ञान को ज्ञान की ओर झुकना ही पड़ता है, और आधुनिक भौतिक शास्त्र के पितामह कहे जाने वाले प्रख्यात वैज्ञानिक नोबल पुरस्कार विजेता अल्बर्ट आइन्स्टीन ने भी अपने जीवन के अंतिम दिनों में यह स्वीकार किया कि वे ज्ञान के जिन बिन्दुओं तक पहुंचे, वहां तक तो भारतीय योगी कब के पहुंच चुके थे। उन्हें अपने जीवन के अंतिम दिनों में सिद्धाश्रम व उसमें ज्ञान के अनेक पक्षों पर शोधरत योगियों का भी ज्ञान हुआ था, और उन्होंने बड़े खेद के साथ स्वीकार किया था, कि यदि उनके जीवन के कुछ दिन और शेष रहते तो वे सशरीर सिद्धाश्रम पहुंचने की चेष्टा करते।

इस स्वीकारोक्ति से पाश्चात्य वैज्ञानिक जगत में हलचल मच गई और अनेक प्रख्यात वैज्ञानिक अपनी गर्व भरी दृष्टि को भारत के प्रति नम्र करने के लिए विवश हुए।

ज्ञान के जगत को, ज्ञान की सत्ता को इसी प्रकार दृष्टि नम्र करके ही समझा जा सकता है, यदि यहां भी उसी प्रकार तर्कों का बोलबाला रहे, तो इसका विज्ञान से भेद ही क्या? क्योंकि इसी ज्ञान के जगत की ही सत्ता है, जो इस समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी चेतना, अपनी तपः ऊर्जा और अपने आग्रह द्वारा नियमित व नियन्त्रित करता है। केवल पृथ्वी का दिन-रात घूमना नहीं, केवल ऋतुओं का समय पर आना और जाना नहीं, वरन् इस समस्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी घटित हो रहा है, जो कुछ भी छल, कपट, व्यभिचार एवं हिंसा व्याप्त हो रही है और धर्म का निरन्तर क्षय होकर धर्म के नाम पर भी असत् की सत्ता व्याप्त हो रही है, उसको नियंत्रित करने का कार्य यही ज्ञान का जगत करता है, जिसे प्राचीन भारतीय साधनात्मक ग्रंथों में अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान के साथ ज्ञानगंज (सिद्धाश्रम) की संज्ञा दी गई है।

धर्म का तात्पर्य भौतिकता का विनाश नहीं होता, जैसा कि अधिकांश सम्प्रदाय चीख-चीख कर कहते हैं वरन् धर्म का, अध्यात्म का सही तात्पर्य यही होता है कि इस पृथ्वी पर भौतिकता व आध्यात्मिकता के मध्य जो असंतुलन समाप्त हो गया हो, उसे नियंत्रित किया जाए। यह जीवन के सर्वथा व्यवहारिक

"ज्ञान के जगत को, ज्ञान की सत्ता को दृष्टि नम्र करके ही समझा जा सकता है, यदि यहां भी उसी प्रकार तर्कों का बोलबाला रहे, तो इसका विज्ञान से भेद ही क्या? क्योंकि इसी ज्ञान के जगत की ही सत्ता है, जो इस समस्त ब्रह्माण्ड को अपनी चेतना, अपनी तपः ऊर्जा और अपने आग्रह द्वारा नियमित व नियन्त्रित करता है। केवल पृथ्वी का दिन-रात घूमना नहीं, केवल ऋतुओं का समय पर आना और जाना नहीं, वरन् इस समस्त ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी घटित हो रहा है, जो कुछ भी छल, कपट, व्यभिचार एवं हिंसा व्याप्त हो रही है, और धर्म का निरन्तर क्षय होकर धर्म के नाम पर भी असत् की सत्ता व्याप्त हो रही है, उसको नियंत्रित करने का कार्य यही ज्ञान का जगत करता है, जिसे . . . ."

पक्ष को सामने रखता है और इसी की यथार्थ प्रस्तुति समाज के मध्य हो सके, इसके लिए अपने मध्य से समय-समय पर उच्चकोटि के योगियों, महर्षियों एवं तपस्वियों को इस धरा पर भेजता रहता है, चाहे वह भगवान श्री कृष्ण का हमारे समक्ष उदाहरण हो या भगवान बुद्ध का अथवा भगवत्पाद आद्य शंकराचार्य का, और यह क्रम अक्षुण्ण है। ध्यान देने की बात है कि ऐसे प्रत्येक अवतरण एक निश्चित अंतराल पर ही होते हैं अर्थात् ढाई हजार वर्ष बाद ही एक अवतरण अस्तित्व में आता है, जिसे उसके जाने के बाद जनता ईश्वर मान कर पूजती है। भगवान श्रीकृष्ण के ढाई हजार वर्ष बाद भगवान बुद्ध का अवतरण इस धरा पर सम्भव हुआ और उसके ढाई हजार वर्ष बाद अब. . .!

क्या रहस्य है इस निश्चित अंतराल का?

निश्चय ही इस वर्तुल के पीछे भी प्रकृति का कोई रहस्य

छिपा ही हुआ है। अनेक साधकों ने इस तथ्य को ध्यान में रख इसका रहस्य खोजना चाहा, किन्तु इसका प्रामाणिक उत्तर यदि मिलता है, तो महर्षि विश्वामित्र के द्वारा, जहां उन्होंने एक श्लोक में स्पष्ट कहा है—

अर्थात् "प्रत्येक ढाई हजार वर्ष बाद ग्रहों का एक निश्चित संयोजन इस ब्रह्माण्ड में होता है और तब कोई दिव्य आत्मा सामान्य मनुष्य की ही भांति मानव गर्भ का आश्रय लेकर इस धरा पर अवतरित होती है।"

आगे महर्षि विश्वामित्र ने इस बात को अपने ग्रंथ में जन्मकुण्डली के माध्यम से भी स्पष्ट किया है, जिसके अनुसार भगवान श्रीकृष्ण एवं भगवान बुद्ध की जन्मकुण्डलियों में आश्चर्यजनक समानता है, और ठीक यही स्थिति वर्तमान में पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी की जन्मकुण्डली में भी है। ग्रहों का इतना आश्चर्यजनक मेल अपने-आप में एक विलक्षण घटना ही है, यद्यपि जो पूज्य गुरुदेव से परिचित हैं, उनके लिए इसमें कोई नवीनता नहीं क्योंकि वे तो वर्षों से उन्हें प्रखर तेजस्वी स्वरूपों में एक साथ ज्योतिष मर्मज्ञ, मंत्रवेत्ता, तंत्र अध्येता, आयुर्वेदज्ञ और भी न जाने कितने ही रूपों में देखते ही चले आ रहे हैं।

प्रत्येक ढाई हजार वर्ष बाद ग्रहों का एक निश्चित संयोजन इस ब्रह्माण्ड में होता है और तब कोई दिव्य आत्मा सामान्य मनुष्य की ही भांति मानव गर्भ का आश्रय लेकर इस धरा पर अवतरित होती है।

जन्मकुण्डली तो एक प्रकार से दर्पण होती है, जिसमें व्यक्तित्व को देखा जा सकता है, किन्तु जिसका व्यक्तित्व स्वयं निर्मल दर्पण की भांति स्वयं का सौन्दर्य झिलमिला कर रख दे रहा हो उसके लिए किसी अन्य उपाय की क्या आवश्यकता, किन्तु जो शास्त्रों का वचन है और जिसकी कसौटी पर कुछ कसकर देखा जा सकता है, उस शास्त्र का भी वर्णन कर ही देना चाहिए, क्योंकि मूढ़ व्यक्ति प्रमाणों के माध्यम से ही संतुष्ट होता है, जबकि ज्ञानी अपनी अन्तश्चेतना के स्वर को सुनता है, और **जिन्होंने इस व्यक्तित्व के पास आकर अपनी अन्तश्चेतना के स्वर को सुना है, उन्हें स्पष्ट आभास हुआ है कि सामान्य देह में उनके समक्ष कोई दिव्यात्मा ही बैठी है,** और जो वास्तव में दिव्यात्माएं होती हैं, वे इसी प्रकार सबके समक्ष होती हैं, उनके मध्य में उन्हीं के समान ही होती हैं।

भगवान बुद्ध ने कहां अपने को सामान्य जन से दूर रखा? वे तो राजमहल और राजपद छोड़कर आ गए।

भगवान श्रीकृष्ण ने ग्वालों के संग जीवन बिताया, उन्हीं के मन के अनुकूल रास-रंग की लीलाओं में भाग लिया।

दूर रहने वाले, केवल मंचों पर चढ़ कर बात करने वाले महंत तो हो सकते हैं, सद्गुरु अथवा गुरु कदापि नहीं।

इस चर्चा के उपरांत भी एक जिज्ञासा शेष रह जाती है कि जब-जब ढाई हजार वर्ष बाद इस प्रकार का दिव्य अवतरण होता है, तो उसका व्यापक अर्थ क्या होता है? क्या वे मात्र धर्म की नवीन व्याख्या करने या नवीन मत देने के लिए ही अवतरित होते हैं अथवा उनका उद्देश्य केवल अधर्मी व्यक्तियों का नाश कर धर्म की स्थापना करना होता है। वास्तव में ये सभी व्याख्याएं अधूरी हैं। **धर्म की हानि होने पर तो ईश्वर स्वयं मानव रूप में आते हैं, साथ ही वे अपनी विशिष्टता के द्वारा मनुष्य को केवल आध्यात्मिक उपदेश ही नहीं वरन् सही आध्यात्मिकता से परिचित कराने की क्रिया सम्पन्न कर जाते हैं,** और यह क्रिया होती है कुण्डलिनी जागरण द्वारा व्यक्ति के आज्ञा चक्र को चैतन्य करने की। यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि हमारे पूर्वजों की कुण्डलिनी जाग्रत रहती थी, और जब वे अगला जन्म लेते थे, तो उन्हे दस-बारह वर्ष की अवस्था होते-होते अपना पिछला जीवन याद आ जाता था, क्योंकि एक जन्म में जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति दूसरे जन्म में भी साथ रहती है, और जन्म के दोनों ओर-छोर देखने के कारण उनके जीवन में आपाधापी, तनाव अथवा कलह जैसी स्थितियां थी ही नहीं। आर्यों का वर्णन कहीं भी इस रूप में नहीं मिलता कि वे बड़े दीन-हीन, दुखी या दरिद्र थे, अपितु सर्वत्र उन्हें गीत गाने वाला बलिष्ठ, सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति कह कर ही चित्रित किया गया है, और इसका कारण केवल जाग्रत आज्ञा चक्र ही होता था।

आज्ञा चक्र जागरण का केवल यह अर्थ नहीं होता कि व्यक्ति इसके माध्यम से अपने भूत और भविष्य को जानने की क्रिया सम्पन्न कर लेता है, वरन् **आज्ञा चक्र जागरण तो अपने-आप में सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था का जागरण है। आज्ञा चक्र के जागरण का अर्थ है जीवन में सम्पूर्ण आध्यात्मिक व भौतिक क्षमताओं का जागरण।** आज्ञा चक्र का आकार भगवान शिव के तृतीय नेत्र के रूप में वर्णित किया गया है, जो खड़े आकार में माथे पर दोनों भौहों के मध्य गुप्त रूप से अवस्थित है। इसके एक किनारे पर अठारह भौतिकता से सम्बन्धित बिन्दु हैं एवं दूसरे किनारे पर आध्यात्मिकता से सम्बन्धित अठारह बिन्दु। ये बिन्दु इस प्रकार हैं—

भौतिकता के बिन्दु

१. सुख, २. ऐश्वर्य, ३. भोग, ४. विलास, ५. रस (कला, संगीत, गायन) ६. तृप्ति (सुस्वादु भोजन) ७. चैतन्यता ८. माधुर्य (मनोवांछित साधनात्मक सफलता), ६. निर्झर १०. देवत्व (अकार्षक स्वरूप), ११. श्री, १२. काम (श्रेष्ठ पत्नी सुख), १३. विख्याति (यश, सम्मान, पद), १४. पुष्टि, १५. तुष्टि, १६. शांति (तनावमुक्ति), १७. औदार्य (दान आदि करने की पात्रता), १८. वर्चस्व (नेतृत्व)

आध्यात्मिकता के बिन्दु

१. दया, २. ममता, ३. करुणा, ४. प्रेम, ५. स्नेह (अपनत्व), ६. आनन्द, ७. योग विभूति (अष्टादस सिद्धियां), ८. निस्पृहता, ६. मोक्ष, १०. देहसिद्धि (शून्य गमन आदि विधाएं), ११. आप्तकाम (विचार शून्य मन), १२. जरा व्याधि मुक्ति, १३. ध्यान, १४. धारणा, १५. समाधि, १६. मुदिता, १७. मैत्री, १८. कुण्डलिनी जागरण।

इन छत्तीस बिंदुओं को जाग्रत करने की क्रिया केवल दीक्षा ही है, जो अपने-आप में उच्च स्वरूप में शक्तिपात का रूप ग्रहण कर लेती है। **इन्हीं छत्तीस बिन्दुओं में से अलग-अलग बिंदु को स्पर्श कर सद्गुरु अपने तपस्यात्मक बल द्वारा अपने शिष्य की समस्या का समाधान करते हैं।** उपरोक्त वर्णित सभी नाम प्राचीन काल के शास्त्रों में वर्णित हैं, जो उस युग की समाज व्यवस्था के अनुकूल हैं, और बगल में उनका आज के अर्थों में सरल शब्दों में भावार्थ बताया गया है, क्योंकि समाज का मूल स्वरूप तो नहीं बदला है। व्यक्ति की आज भी वे इच्छाएं, कामनाएं और समस्याएं हैं, जो कि प्राचीन काल में होती थीं। इन बिन्दुओं के माध्यम से जब तक व्यक्ति की समस्त भौतिक कामनाएं और सम्पूर्ण आध्यात्मिक भाव-भूमि जाग्रत नहीं कर दी जाती, उसे संतुष्ट नहीं कर दिया जाता, तब तक वह पूर्णता प्राप्त कर ही नहीं सकता।

भगवान श्रीकृष्ण ने इसी क्रिया को सम्पन्न करने के लिए आधार लिया ''रास'' का, जिसमें वे उन्मत्त स्त्री-पुरुषों के आज्ञा चक्र पर ध्यान केंद्रित कर, अपनी प्राण ऊर्जा को शक्ति के प्रवाह में बदल कर, आध्यात्मिक बिन्दुओं पर आघात कर उन्हें सूक्ष्म रूप से आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करते थे, और उनके ढाई हजार वर्ष बाद पुनः भगवान बुद्ध ने यही क्रिया अपने धर्म चक्र प्रवर्तन के माध्यम से की। भगवान श्रीकृष्ण अथवा भगवान बुद्ध की आंखों में जिस मोहिनी शक्ति का उल्लेख कथाओं में यत्र-तत्र मिलता है, उसके पीछे यही रहस्य था कि उनकी प्राण ऊर्जा शक्ति का प्रवाह बन कर नेत्रों के माध्यम से प्रवाहित होती रहती थी, और इसी कारण दोनों ही युग प्रवर्तक महापुरुष, साक्षात् भगवान की संज्ञा से विभूषित किए गए. . . किन्तु चले जाने के बाद।

आज पूज्यपाद गुरुदेव भी निरन्तर यही क्रिया दीक्षाओं के एवं शक्तिपात के माध्यम से सम्पन्न करते जा रहे हैं, और इस क्रिया को सम्पन्न करने में कितना अधिक परिश्रम करना पड़ता है. . . व्यक्ति इसका अनुमान ही नहीं लगा सकता, क्योंकि वह चेतना की उस भूमि पर ही नहीं खड़ा होता।

प्रत्येक व्यक्ति की चेतना का मूल केन्द्र होता है उसका नाभि-कुण्ड, जिसे साक्षात् अमृत-कुण्ड की संज्ञा दी गई है, और जो केवल ऐसे ही दिव्य अवतरणों में पूर्णरूप से जाग्रत व हिलोर लेता हुआ होता है। जिस क्षण व्यक्ति सद्गुरु के समक्ष अपनी समस्या लेकर उपस्थित होता है अथवा किसी विशेष मनोकामना या दीक्षा की प्रार्थना करता है, उस क्षण विशेष में वे अपने नाभि-कुंड के अमृतकणों को आलोड़ित कर शक्ति के प्रवाह के रूप में नेत्र के माध्यम से व्यक्ति के आज्ञा चक्र के उस बिन्दु पर प्रवाहित कर देते हैं, क्योंकि उन्हें ज्ञात होता है कि किस बिन्दु पर दबाव देकर क्या कुछ सम्पन्न किया जा सकता है अथवा सामने वाले के अंदर वह विशेषता उत्पन्न की जा सकती है।

यह योग की अत्यंत दुरूह एवं अगम्य प्रक्रिया है, इसी कारणवश इसे साक्षात् परमेश्वर की लीला की संज्ञा दी गई है। **इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में गुरु को बहुत कठिन प्रक्रिया करनी होती है, किन्तु वे फिर भी अपने अंदर के अमृत-कुंड को निरन्तर शिष्यों और साधकों पर उड़ेलते हुए उनके विष को पीते रहते हैं।** इसी कारणवश आज्ञा चक्र को भगवान शिव का स्थान कहा गया है। भगवान शिव ने जिस प्रकार मंथन के समय एक बार. . . विषपान किया. . . सद्गुरु उसे प्रत्येक क्षण करते रहते हैं।

—योगी चेतनानन्द

भगवान का प्यार

अर्जुन ने एक बार कृष्ण की बांसुरी से पूछा — सुभगे! तुम्हें कृष्ण स्वयं हर समय होठों से लगाये रहते हैं। हम सब उनकी कृपा पाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं परन्तु सफल नहीं होते, जबकि तुम बिना प्रयत्न किए ही उनके अधरों पर रहती हो।

''बिना प्रयत्न किये नहीं अर्जुन'' मैंने भी प्रयत्न किया है। जानते हो मुझे मुरली बनने के लिए अपना मूल अस्तित्व ही खो देना पड़ा है!

अर्जुन को तब समझ आई। बांसुरी अपने- आप में खाली थी, उसमें स्वयं का कोई स्वर नहीं गूंजता था, बजाने वाले के ही स्वर बोलते थे।

बांसुरी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वह कभी बांस रह चुकी है, क्योंकि न तो उसमें कोई गांठ थी और न कोई अवरोध। अर्जुन को भगवान का प्यार पाने का अनूठा सूत्र मिल गया।

निःशुल्क अमूल्य उपहार पत्रिका की तरफ से
समस्त शिष्यों, साधकों एवं पाठकों के लिए . . .

वर्ष का
श्रेष्ठतम पर्व

धनाक्ष स्थापन उत्सव

२३.१०.९४
(रविवार)

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी, रविवार संवत् : २०५१

वर्ष का सर्वश्रेष्ठ त्यौहार न दीपावली होता है, न होली होता है, न रक्षा-बन्धन होता है, न अक्षय तृतीया होती है और न ही कोई अन्य पर्व होता है। यदि सही दृष्टि से देखा जाए, तो पूरे वर्ष का सर्वश्रेष्ठ त्यौहार ''यक्ष-महोत्सव'' होता है। श्रेष्ठ ग्रन्थों में इस यक्ष महोत्सव के बारे में बताया गया है – **जब तक घर में ''यक्ष-महोत्सव'' सम्पन्न नहीं किया जाता या यक्ष की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक न तो लक्ष्मी पूजा सम्पन्न हो सकती है और न लक्ष्मी पूजा में सफलता प्राप्त हो सकती है**। एक तरह से दीपावली पर लक्ष्मी पूजन व्यर्थ सा हो जाता है।

प्रत्येक वर्ष कार्तिक कृष्ण चतुर्थी अर्थात् दीपावली से लगभग ग्यारह दिन पहले यक्ष - महोत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष **कार्तिक कृष्ण चतुर्थी २३ अक्टूबर ९४** को सम्पन्न हो रहा है, और यह अत्यन्त श्रेष्ठ मुहूर्त है, जिस दिन घर में **''धनदा-यक्ष''** की स्थापना की जाएगी।

यक्ष का तात्पर्य है धन प्रदायक देवता। कुबेर से भी उच्चकोटि का देवता, जो आकस्मिक धन, व्यापार-वृद्धि, आर्थिक उन्नति, सफलता एवं मनोवाञ्छित कार्यों को पूर्णता देने में सहायक होता है। यक्ष को भगवान विष्णु का 'द्वारपाल' कहा गया है और भगवती लक्ष्मी का 'अग्रज' अर्थात् भाई माना गया है। साथ ही यह कहा गया है कि जब तक मनुष्य यक्ष का स्थापन अपने घर में नहीं करता, तब तक उसका लक्ष्मी पूजन अपने - आप में निष्फल सा हो जाता है।

कार्तिके कृष्ण चातुर्थ्यं धनाक्षोद्भव निश्चय।
बिना धनाक्ष स्थापेय लक्ष्मी पूजा च निष्फल।।
धनार्थी लभते द्रव्यं, रोगार्थी रोग मुच्यते।
शिक्षार्थी प्राप्यते शिक्षा, सौभाग्यं भवते ध्रुवम्।।
बिना धनाक्ष यंत्रेश्च स्थापयेत् यदि स नरः।
निष्फला लक्ष्मी पूजाश्च न दीपोत्सव मुच्यते।।

– तंत्र सार

अर्थात् कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्थी को **''धनाक्ष यंत्र''** स्थापित करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य माना गया है, बिना धनाक्ष की स्थापना (धनाक्ष यंत्र- जो मंत्र-सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त ताम्र पत्र पर श्रेष्ठ मुहूर्त में उत्कीर्ण हो) के यदि लक्ष्मी पूजा की जाती है, तो वह निष्फल होती है।

धनाक्ष (अर्थात् धन से सम्बन्धित यक्ष, जो विष्णु का द्वारपाल एवं भगवती लक्ष्मी का अग्रज है) स्थापित करने से धन चाहने वाले को धन प्राप्त होता है, रोगी व्यक्ति रोग से मुक्त हो जाता है, शिक्षा प्राप्त करने वाला व्यक्ति शिक्षा एवं परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है एवं नारी इस प्रकार का यंत्र घर में स्थापित करती है, तो वह पूर्ण सौभाग्यवान बनती है।

बिना धनाक्ष यंत्र की स्थापना के यदि व्यक्ति लक्ष्मी पूजा दीपावली पर्व पर करता है, तो वह लक्ष्मी पूजा निष्फल एवं व्यर्थ ही होती है।

ऊपर जो श्लोक दिया गया है, वह इस बात का साक्षी है कि धन प्रदायक यक्ष लक्ष्मी को देने वाला है, ऋण-मुक्ति और जीवन की दरिद्रता समाप्त करने वाला है, भोग और मोक्ष देने में समर्थ है, इसकी स्थापना से घर के बालक शिक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं। जो रोगी हैं, इसकी स्थापना से घर से रोगों का नाश हो जाता है। सौभाग्यवती स्त्रियां यदि इस यन्त्र का स्थापन करती हैं, तो उन्हें पूर्ण सौभाग्य प्राप्त होता है। इसीलिए दीपावली से लगभग दस-ग्यारह दिन पहले ही इस यंत्र को प्राप्त कर पूरे विधि-विधान के साथ अपने घर में स्थापित कर देना चाहिए।

यह यन्त्र ताम्रपत्र पर अंकित होता है और विशेष मुहूर्त में सही तरीके से इस धन प्रदायक यंत्र को उत्कीर्ण किया जाता है। इसके बाद इसे मंत्र - सिद्ध और विशेष मंत्रों से प्राणश्चेतना युक्त बनाया जाता है, जिससे कि यह पूर्ण सफलतादायक बन सके और लाभ दे सके।

पत्रिका की नीति यह रही है कि जीवन में दरिद्रता का नाश हो, सौभाग्य का उदय हो, सफलता प्राप्त हो, निरन्तर उन्नति हो और मानव की जो इच्छायें हैं, वे यथासम्भव पूर्ण हों। हम यह दावा नहीं करते कि यंत्र की स्थापना से ही सब कुछ प्राप्त हो जाता है। यदि व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा और आस्था के साथ यंत्र को स्थापित करता है या मंत्र-जप करता है, तो उसका लाभ उसे अवश्य ही प्राप्त होता है।

इस बार हमने इस यंत्र को सर्वथा निःशुल्क अपने शिष्यों, साधकों व पाठकों को प्रदान करने का निश्चय किया है, जिससे कि यह पूरा वर्ष उनके लिए उन्नतिदायक हो सके, सम्पूर्णतादायक हो सके।

इस वर्ष यह पर्व २३.१०.९४ को आ रहा है, जिसे यक्ष-पर्व या यक्ष-महोत्सव शब्द से सम्बोधित किया गया है। इसे धनाक्ष कहा गया है — **धन + यक्ष** अर्थात् **''धनाक्ष''।**

प्रातः काल उठकर, स्नान कर, साधक इस यंत्र को दूध से, घृत से, शहद से और शर्करा से स्नान कराए, फिर शुद्ध जल से धोकर, पोंछ कर अपने घर के पूजा स्थान में स्थापित कर दे, इस क्रिया को प्रातः काल किसी भी समय सम्पन्न किया जा सकता है। यंत्र के सामने अगरबत्ती और दीपक लगा ले, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके किसी भी प्रकार के आसन पर बैठे। पीला रंग लक्ष्मी के लिए शुभ माना गया है अतः पीला आसन हो तो ज्यादा उचित रहता है।

फिर यंत्र पर चन्दन या केसर लगाए और यंत्र के सामने हाथ जोड़ कर प्रार्थना करे कि — **''हे धनाक्ष! आप भगवान विष्णु के द्वारपाल हैं, आप धन प्रदायक हैं, आप ऋणहर्ता हैं, आप जीवन में पूर्ण मनोकामना सिद्धि प्रदान करने वाले हैं, आप मेरे घर में स्थापित हों, मेरे जीवन की समस्याओं को दूर करें, मेरे जीवन की इच्छाओं की पूर्ति करें, जिससे मैं आर्थिक दृष्टि से पूर्ण उन्नति कर सकूं, अपने परिवार को सुखी रख सकूं तथा साथ ही साथ अपने समाज व देश का भी कल्याण कर सकूं।**

ऐसी स्तुति करे, फिर लक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर के प्रसाद वितरित करे, साथ ही साथ उसी आसन पर बैठ कर **स्फटिक माला से या हकीक माला** से एक माला मंत्र-जप करे, जिसे 'धनाक्ष मंत्र' कहा गया है, इसमें सिर्फ एक माला मंत्र-जप का ही विधान है, जिसे परिवार का चाहे कोई भी सदस्य करे, इसके अलावा इसका कोई विधान नहीं है।

जब दीपावली का पूजन हो तब भगवती लक्ष्मी की पूजा के साथ-साथ इस **'धनाक्ष-यंत्र'** की भी पूजा सम्पन्न होती है, मगर शास्त्रों में कहा गया है कि यह आवश्यक नहीं है, कि दीपावली की रात्रि को ही इसका पूजन हो सके, क्योंकि धनाक्ष-महोत्सव पर जब इस की स्थापना कर दी जाती है, तभी यह स्वयं में पूर्ण चैतन्य हो जाता है, इस के बाद साधक चाहे तो दीपावली की रात्रि को भी इसका पूजन सम्पन्न करे या अपने गुरु-गृह में जाकर लक्ष्मी पूजन महोत्सव में भाग ले, जैसे भी साधक या यजमान चाहे इसे सम्पन्न कर सकता है।

यद्यपि यह विधि दिखने में अत्यन्त सरल है परन्तु अपने-आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है, **क्योंकि इस पूरे क्रम में यंत्र की स्वयं में विशेष महत्ता है, और यंत्र के सम्मुख एक माला मंत्र-जप करना अत्यधिक श्रेष्ठ कहा गया है।** ''धनाक्ष मंत्र'' इस प्रकार है —

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं धनाक्षै वर-वरद कार्य सिद्धये फट् ।।

हमने इस वर्ष यह धनाक्ष यंत्र सर्वथा निःशुल्क भेजने का निश्चय किया है, इस के लिए ऐसा विचार किया गया है जिससे कि प्रत्येक साधक इस यंत्र को प्राप्त कर अपने घर में स्थापित कर सके।

इस पत्रिका के अन्तिम पृष्ठ पर पोस्ट कार्ड छपा है, आप उस पोस्ट कार्ड को भर कर भेज दें, अपना नाम, पूरा पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें। इसमें दो पते लिखे हुए हैं — पहला पता तो आपका खुद का होगा, जिसके ऊपर लिखा है कि यंत्र मेरे नाम से नीचे लिखे पते पर भेजा जाए और दूसरा पता इसलिए लिखा गया है कि यदि आप पत्रिका के सदस्य हैं, तो अपने किसी मित्र या स्वजन को पत्रिका सदस्य बना दें, उसका पता दूसरे स्थान पर लिख दें।

हम आप को यह यंत्र १५०/- जो पत्रिका का वार्षिक शुल्क है तथा २०/- डाक व्यय की वी.पी.पी. से भेज देंगे। जब पोस्ट मैन आपके दरवाजे पर यह यंत्र का डिब्बा लेकर आये, तब आप उसे यह धनराशि दे कर, वह डिब्बा प्राप्त कर लें, जिसके अन्दर यह मंत्र-सिद्ध यंत्र सुरक्षित है।

जब वी. पी. पी. छूटने की सूचना कार्यालय में आएगी, तब आपने जिस मित्र, स्वजन या सम्बन्धी, वह चाहे आपके गांव का हो, चाहे दूर रहने वाला हो, पर भारत में रहता हो, उसको पत्रिका का सदस्य बना कर पूरे वर्ष भर निःशुल्क पत्रिका भेजी जाएगी व उसकी रसीद आपको भेज दी जाएगी। इससे वह पूरे वर्ष भर पत्रिका का लाभ उठा सकेगा और इस प्रकार से एक महत्वपूर्ण कार्य आप के हाथों से सम्पन्न हो सकेगा।

परन्तु इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रहे, कि आप अपना पता हिन्दी या अंग्रेजी में साफ-साफ अक्षरों में लिखें और साथ ही साथ आप जिसको भी पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, उसका भी पता पूरी प्रामाणिकता के साथ लिखा होना चाहिए।

सही अर्थों में देखा जाए, तो यह यंत्र आपको सर्वथा निःशुल्क मिल रहा है, क्योंकि जो १५०/- आप व्यय कर रहे हैं, वह तो अपने स्वजन को उपहार स्वरूप पत्रिका सदस्य बना कर दे रहे हैं। आप चाहें तो उससे ये रुपये प्राप्त कर सकते हैं। आप चाहें तो उनका उद्धार हो सकता है, क्योंकि एक प्रकार से यह उनके जीवन की अमूल्य स्थिति बनेगी, और जीवन पर्यन्त उन के घर का वातावरण आध्यात्मिक हो सकेगा और आप को यह यंत्र सुरक्षित रूप से निःशुल्क प्राप्त हो सकेगा।

यह ध्यान रखें कि यह पर्व २३ अक्टूबर को है और पोस्ट कार्ड भर कर भेजने तथा यहां से यंत्र तैयार कर के आप
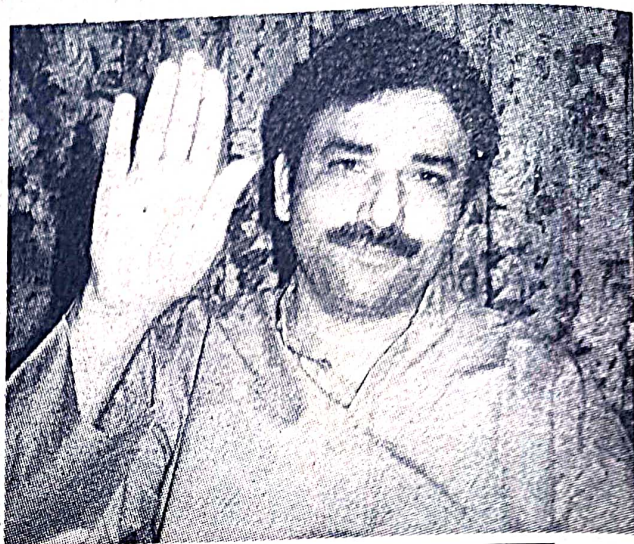
(पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी)

के नाम से वी. पी. पी. करने में और आप तक पहुंचने में एक माह से भी अधिक समय लग जाता है। इसलिए यदि आप पोस्ट कार्ड विलम्ब से भेजते हैं, तो हो सकता है कि २३ अक्टूबर के बाद यह यंत्र आप को प्राप्त हो, तब सब कुछ व्यर्थ होगा। अतः ज्यादा उचित होगा कि ज्यों ही पत्रिका आप के हाथ में आती है, त्यों ही आप सबसे पहले उस पोस्ट कार्ड को भर कर **अपने हाथों से ही सबसे पहले डाकखाने में डाल दें,** जिससे कि कार्यालय को तुरन्त प्राप्त हो सके, और समय पर हम उस यंत्र को आप के पास पहुंचा सकें।

अन्यथा आप सोच-विचार करते ही रह जाते हैं कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो एक सप्ताह बाद भेजेंगे, अभी तो बहुत समय है और ऐसा करने पर बहुत विलम्ब हो जाता है। अतः आप लौटती डाक से ही इस पोस्ट कार्ड को भेज दें। इस कार्ड पर टिकट लगाने की आवश्यकता नहीं है, टिकट का व्यय भी पत्रिका कार्यालय वहन करेगा।

मैं एक बार फिर आप सब को आग्रह करूंगा, कि ऐसे महोत्सव पर इतने उत्तम यंत्र को आप प्राप्त करें, जिससे कि आप के जीवन में सभी दृष्टियों से सुख, सफलता, सौभाग्य व आर्थिक अनुकूलता प्राप्त हो सके।

घुमक्कड़ प्रसिद्ध स्वामी सहजानन्द जी ने यह दुर्लभ प्रयोग, मंत्र व विधि हमें भेजी, उसके लिए हम उनके आभारी हैं कि उन्होंने जन कल्याण के लिए इस प्रकार के दुर्लभ यंत्र पूजन की विधि समझाई और इस दुर्लभ महोत्सव के बारे में बताया तथा प्रामाणिकता के साथ उन्होंने जो कुछ स्पष्ट किया, उसे हमने पत्रिका-पाठकों को इस दृष्टि से लिखा है, जिससे प्रत्येक शिष्य, साधक व पाठक इसका लाभ उठा सकें और अपने-आप को पूरे वर्ष सुखी, समृद्ध व ऐश्वर्यवान बना सकें। ◆

प्रथम बार प्रकाशित

सर्वथा गोपनीय भगवती महालक्ष्मी के १०८ सिद्ध सचोट सफल प्रयोग

पिछले वर्ष अक्टूबर माह में **महालक्ष्मी विशेषांक** प्रकाशित करते समय हमने उसमें भगवती लक्ष्मी से सम्बन्धित ऐसे १०८ प्रयोग दिये थे जो अत्यन्त लघु थे, जो कम श्रमसाध्य तथा कम समय में ही सिद्ध होने वाले थे। कहना न होगा कि पाठकों ने उनका अत्यन्त ललक के साथ स्वागत किया और दीपावली के चैतन्य मुहूर्त में उन्हें प्रयोग में लाकर हाथों - हाथ लाभ प्राप्त किया।

हमारे अनेक नवीन पाठक, जिन्हें यह ज्ञात हुआ कि पिछले वर्ष ऐसा विशेषांक प्रकाशित हुआ था, उनका निरन्तर अनुरोध आ रहा था कि हम पुनः इस वर्ष दीपावली के पूर्व ऐसे ही सिद्ध सफल प्रयोग प्रकाशित करें और जो उनका पिछले वर्ष लाभ नहीं ले सके थे, वे इस वर्ष लाभाविन्त हो सकें। साथ ही पुराने पाठकों की मांग आ रही थी कि इस नूतन वर्ष में पुनः भगवती महालक्ष्मी से सम्बन्धित लघु प्रयोगों की परम्परा स्थापित रखी जाए।

ये समस्त १०८ प्रयोग पिछले प्रयोगों की पुनरावृत्ति नहीं है, वरन् इनमें से प्रत्येक प्रयोग सर्वथा नवीन है जो पूरे वर्ष भर शोध करने व योगीजन से विचार - विमर्श करने के बाद ही प्रकाशित किया जा रहा है।

गुणनिधि यंत्र

१. गुणनिधि यंत्र वास्तव में नवनिधि यंत्र ही है जिसका स्थापन मात्र ही पर्याप्त कहा गया है।

२. गुणनिधि यंत्र को दुकान अथवा फैक्टरी में रखने पर अनावश्यक विघ्न - बाधाओं, उपद्रवों से पूर्ण मुक्ति मिलती है।

३. यही एक मात्र ऐसा यंत्र है जिसकी स्थापना से जमा - पूंजी में निरन्तर वृद्धि होती ही रहती है।
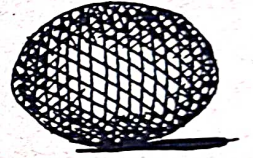
४. गुणनिधि यंत्र की यह भी विशेषता है कि यह अन्य यंत्रों के विपरीत केवल साधक के प्राणों से ही सम्बन्धित न होकर पीढ़ियों तक के लिए लाभदायक होता है।

५. गुणनिधि यंत्र ही वह यंत्र है जिसके ऊपर भूगर्भ साधना सफलतापूर्वक सम्पन्न की जा सकती है।

धनवर्षिणी यंत्र

६. घर में यदि आय का स्थायी स्रोत न हो तब दीपावली के दिन इसकी विधि - विधान से स्थापना अवश्य ही करनी चाहिए।
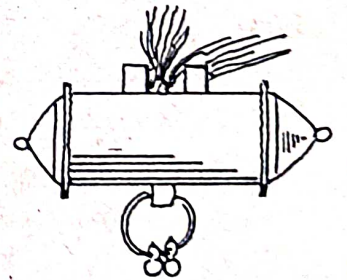
७. बेरोजगार युवकों को इसी यंत्र पर दीपावली की रात्रि में पूजा करने से अत्यन्त श्रेष्ठ फल शीघ्र ही प्राप्त होता है।

८. यदि आय का स्थायी स्रोत हो किन्तु धन टिकता न हो, तब इसी यंत्र पर दीपावली की रात्रि में **ग्यारह लघु नारियल** निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ चढ़ायें।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रियै नमः

९. व्यापार स्थल पर स्थापित करने के लिए धनवर्षिणी यंत्र को उच्चकोटि का यंत्र माना गया है।

१०. यह यंत्र कौटुम्बिक सुख का भी प्रतीक है।

रत्नपात्र

११. समुद्र से प्राप्त होने वाली यह प्राकृतिक वस्तु साक्षात् लक्ष्मी की सहोदर (भाई) ही कही गयी है।

१२. रत्नपात्र अपने- आप में अपने नाम के ही अनुरूप गुणों (रत्नों) का संग्रह एवं सुख - सौभाग्य का स्थापन ही है।

१३. रत्नपात्र में यदि चावल के कुछ बिना टूटे दाने रख सफेद कपड़े में बांध अनाज के भण्डार में रख दिया जाए तो साक्षात् अन्नपूर्णा का ही वास होता है।

१४. प्रत्येक लक्ष्मी साधना में रत्नपात्र की उपस्थिति उतनी ही आवश्यक मानी गयी है, जितनी शालीग्राम की।

१५. यदि दीपावली की रात्रि में इसे सामने रख एक माला निम्न मंत्र की सम्पन्न कर ली जाए तो धन - सम्पत्ति में स्थायित्व प्राप्त होता है।

मंत्र - ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं

स्वर्णचक्र

१६. दीपावली का पूजन वास्तव में इसकी स्थापना के बिना अधूरा ही है।

१७. स्वर्णचक्र वास्तव में भगवती लक्ष्मी के कनकवर्षिणी स्वरूप का पूर्णता से स्थापन है।

१८. जैन तंत्र का तो आधार ही है स्वर्णचक्र, जिसके माध्यम से वे चक्रेश्वरी देवी की स्थापना कर अतुलनीय ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं।

१९. वैष्णव तंत्र की भी समस्त उच्च कोटि की लक्ष्मी साधनाओं का आधार यही चक्र है, जिसके माध्यम से घर में धन - धान्य की कभी भी कमी नहीं होती।

२०. उच्च कोटि के वैष्णव साधक इसे भगवान श्री विष्णु के चार आयुधों — शंख, चक्र, गदा, पद्म में से एक अर्थात् चक्र का प्रतीक मानते हैं, जिसकी स्थापना मात्र से ही सुख - सौभाग्य की प्राप्ति एवं विघ्नों की समाप्ति होती है।

सौभाग्यवर्धिनी

२१. सौभाग्यवर्धिनी विवाहित महिलाओं के लिए तो एक वरदान ही है। जिसको धारण कर वे अखण्ड सौभाग्य की स्वामिनी बनी रह सकती हैं।

२२. जिनके भाग्योदय में बार - बार अड़चन आ रही हो उन्हें भी इसी रत्न को अंगूठी में जड़वा कर धारण करना चाहिए।

२३. व्यवहारिक जीवन में प्रगति रुक गयी हो, प्रमोशन निश्चित होते हुए भी न मिल पा रहा हो तब दीपावली की रात्रि में इसका पञ्चोपचार पूजा कर धारण करना एक परीक्षित उपाय है।

२४. राज्य - बाधा हो अथवा राज्य - पक्ष की ओर से किसी संकट में फंस गये हों तथा घर की सम्पत्ति नष्ट हो रही हो तब इसी रत्न को एक पीले वस्त्र में बांध किसी अशोक वृक्ष के नीचे दबा देना चाहिए।

२५. कई - कई नवयुवक इन्टरव्यू अथवा स्व व्यवसाय आरम्भ करने के प्रयास में सफलता के बहुत निकट पहुंचने के बाद भी असफल रह जाते हैं, उन्हें भी चाहिए कि वे इसी रत्न को मुद्रिका में जड़वा कर पहनें।

क्षीरोद्भवा

२६. क्षीरोद्भवा वास्तव में लक्ष्मी का अत्यन्त प्रखर एवं तीव्र स्वरूप है, जिसके आगमन मात्र से ही घर में आय के अनेक स्रोत उत्पन्न हो जाते हैं।

२७. समुद्र के गर्भ से उत्पन्न होने के कारण यह अपने साधनात्मक प्रभाव में रत्न के समान ही फलदायी एवं महत्वपूर्ण है।

२८. यदि दीपावली की रात्रि में इस पर एक कमल चढ़ा कर विधिवत् पूजन किया जाए तो 'श्री' का स्थायी वास होता है।

२९. पीली सरसों पर स्थापित कर दीपावली की रात्रि में इसका पूजन करने से घर में व्याप्त तंत्र दोष आदि समाप्त होते हैं।

३०. घर की तिजोरी में इसे स्थापित करने पर यदि कोई बन्ध प्रयोग किया या कराया गया होता है तो समाप्त होता है।

३१. इस दुर्लभ वस्तु का स्थापन केवल घर के धन रखने के स्थान में ही करें, फैक्टरी अथवा दुकान में नहीं।

ह्रीं यंत्र

३२. जिस प्रकार 'श्री यंत्र' की महिमा अपने - आप में अवर्णनीय है ठीक उसी प्रकार "ह्रीं यंत्र" की स्थापना भी उच्चकोटि की यंत्र स्थापना है।
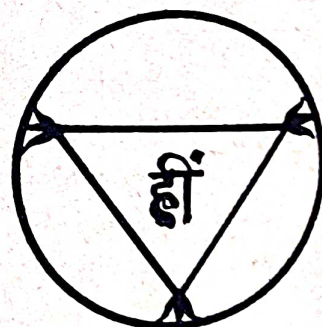
३३. उच्चकोटि की लक्ष्मी साधनाएं "ह्रीं यंत्र" की उपस्थिति में ही सम्पन्न हो पाती हैं।

३४. "ह्रीं यंत्र" पर लक्ष्मी पूजन करने से आकस्मिक धन प्राप्ति की सम्भावनाएं प्रबल होती हैं।

३५. दीपावली की रात्रि में यदि इस पर **चार लघु नारियल** चढ़ा कर **स्फटिक माला** से **'ऐं ह्रीं श्रीं'** मंत्र की एक माला मंत्र जप सम्पन्न कर लिया जाए तो चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है।

३६. "ह्रीं यंत्र" प्रबल रूप से तांत्रिक प्रयोग निवारक यंत्र भी है, जिसकी स्थापना से घर में सुख- शांति की स्थापना होती है।

३७. लक्ष्मी का "ह्रीं" स्वरूप प्रबल रूप से भौतिक सुविधाओं की सामग्री प्रदान करने वाला है और इसी लक्ष्य की पूर्ति इस यंत्र के स्थापन से होती है।

३८. अविवाहित युवतियों द्वारा "ह्रीं यंत्र" पर की गई साधना शीघ्र ही सुयोग्य वर दिलाने में सहायक होती है।

३९. मानसिक हीनता का समाधान, तनाव मुक्ति एवं मानसिक दौर्बल्य के नाश के लिए भी लक्ष्मी के 'ह्रीं' स्वरूप की साधना इसी यंत्र के माध्यम से करनी चाहिए।

विष्णुप्रिया गुटिका

४०. पति - पत्नी के विचारों में पूर्ण तादात्म्य रहे इसके लिए पूजा स्थान में इसी गुटिका की स्थापना वर्णित की गयी है।

४१. सन्तान सुयोग्य हो तथा उसकी उन्नति में कोई अड़चन न आए इसके लिए पीले कपड़े में इसी गुटिका को बांध गले में धारण करायें।

४२. यदि खेती में बार - बार हानि होती हो अथवा फसल सूख जाती हो तब एक विष्णुप्रिया गुटिका लेकर उसे अपनी कृषि भूमि पर गाड़ आएं।

४३. यदि लक्ष्मी पूजन की पूर्ण विधि न आती हो तो इसी गुटिका को स्थापित कर पंचोपचार पूजन करना सम्पूर्ण लक्ष्मी साधना कही गयी है।

४४. दीपावली की रात्रि में इस गुटिका को स्थापित कर एक घी का दीपक लगाकर **स्फटिक माला** से निम्न मंत्र का जप करना भविष्य दर्शन प्रयोग कहा गया है, जिसके फलस्वरूप साधक अपने आगामी समय को पहिचानने की क्रिया सम्पन्न कर लेता है।

मंत्र - ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः

४५. यदि वैष्णव साधक हो तब भगवान विष्णु (अथवा उनके किसी भी अवतार) की शक्ति के रूप में यही गुटिका स्थापित करनी चाहिए।

नर्मदेश्वर शिवलिंग

४६. भगवती महालक्ष्मी के 'श्री' स्वरूप की साधना का रहस्य भगवान शिव की ही साधना में निहित है।

४७. नर्मदेश्वर शिवलिंग पर पूरे कार्तिक माह चावल के १०८ बिना टूटे दाने चढ़ाने से अटूट लक्ष्मी का आगमन होता है।

४८. नर्मदेश्वर शिवलिंग पर यदि दीपावली की रात्रि में **१०८ कमलगट्टे के बीज** निम्न मंत्र द्वारा चढ़ाए जाएं तो पूर्ण सुख-सौभाग्य व चिरस्थायी लक्ष्मी की प्राप्ति होती है—

मंत्र - ॐ श्रीं श्रीं लक्ष्म्यै आगच्छ फट्

४९. दीपावली की रात्रि में नर्मदेश्वर शिवलिंग का अभिषेक गुलाब के १०८ पुष्पों द्वारा करने से शीघ्र ही उत्तम कोटि का स्वभवन निर्मित होता है।

५०. पारद महालक्ष्मी के संग नर्मदेश्वर शिवलिंग का पूजन करने से साधक को भविष्य में रसेश्वरी विद्या की पूर्णता से प्राप्ति होती है।

५१. नर्मदेश्वर शिवलिंग के रूप में लक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से धन - प्राप्ति के मार्ग में आने वाली अनेक बाधाएं स्वतः समाप्त होती चली जाती हैं।

पद्मावती फल

५२. समस्त तांत्रोक्त लक्ष्मी साधनाएं एक मात्र इसी फल के माध्यम से सम्पन्न की जा सकती हैं।

५३. यदि व्यापार बंध प्रयोग करा दिया गया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से व्यापार को विरोधियों द्वारा नीचा दिखाया जा रहा हो, तो दीपावली की रात्रि में दुकान में इसी फल को गुप्त रूप से स्थापित करें या गद्दी के नीचे गाड़ दें।

५४. यदि ऋण की समस्या बहुत बढ़ गयी हो तब एक पद्मावती फल लेकर उसे लाल कपड़े में बांध दीपावली की रात्रि में किसी तिराहे पर रख आएं।

५५. यदि सदैव दरिद्रता जैसी स्थिति बनी रहती हो तो एक पद्मावती फल ले उसे लाल कपड़े में गूंथ दांयी भुजा पर धारण करें।

५६. यदि किसी ने ऋण लिया हो और लौटा न रहा हो तो एक पद्मावती फल के साथ सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लिख सफेद धागे से बांध उसके दरवाजे पर डाल आएं।

५७. कहते हैं दीपावली की रात्रि में पद्मावती फल मनोवांछित स्त्री को किसी प्रकार भेंट देने पर वह शीघ्र ही वशीभूत होती है।

५८. जहां किन्हीं दो व्यक्तियों अथवा किसी लड़के एवं लड़की के मध्य सामाजिक दृष्टि से मतभेद पैदा करना नैतिकता पूर्ण हो, वहां दो पद्मावती फल रख प्रत्येक के नीचे कागज पर सम्बन्धित नाम लिख **मूंगे की माला** से यदि निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें एवं दोनों को नाम सहित काले कपड़े में बांध दीपावली की रात्रि में ही श्मशान अथवा किसी सुनसान स्थान पर फेंक आएं तो दोनों में मतभेद आरम्भ हो जाता है।

मंत्र - ॐ श्रीं क्लीं श्रीं महालक्ष्मै नमः

द्वेषवश अथवा व्यर्थ में किसी को हानि पहुंचाने की दृष्टि से इस प्रयोग की कोई उपयोगिता नहीं सिद्ध होती।

५६. यदि पद्मावती साधना को पूर्ण ऐश्वर्य हेतु सिद्ध करने की आकांक्षा हो तो प्रतिदिन की पद्मावती साधना से पूर्व इसी फल के समक्ष निम्न मंत्र का इक्कीस बार उच्चारण करें—

मंत्र - ॐ श्रीं ॐ

बिल्ली की नाल

६०. समस्त प्रकार की व्यक्तिगत सम्पत्ति की सुरक्षा का प्राचीन तांत्रोक्त उपाय है बिल्ली की नाल।
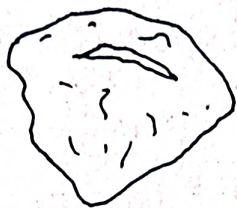
६१. दीपावली की रात्रि में एक बिल्ली की नाल रख, तेल का दीपक लगा, उसका तेल मिश्रित सिन्दूर व अक्षत से पूजन कर, शत्रु के नाम के साथ किसी सूखे कुंए अथवा सुनसान स्थान पर डाल आने से शत्रु संकट का समाधान प्राप्त होता है।

६२. बिल्ली की नाल ताबीज में धारण करने अथवा पूजा स्थान में स्थापित करने से आकस्मिक धन प्राप्ति की साधनाओं में सफलता की सम्भावना दस गुनी अधिक हो जाती है।

६३. यदि मूठ प्रहार की आशंका रहती हो अथवा पहले से ही मूठ प्रयोग की आशंका हो तो दीपावली की रात्रि में एक बिल्ली की नाल अपने मुख्य द्वार की चौखट के सामने गाड़ दें।

६४. जिस घर में भी बिल्ली की नाल होती है वहां धनागम के मार्ग में कोई भी दैवी बाधा आ ही नहीं सकती।

६५. बिल्ली की नाल अपने - आप में पूर्ण पौरुष प्रदायक, सुखदाता भी कही गयी है।

६६. किसी भवन का निर्माण प्रारम्भ करते समय जहां नींव में सुख-शांति हेतु 'श्री यंत्र' स्थापित करने का विधान है, वहीं भूमि के चारों कोनों पर एक - एक तथा एक मध्य में (अर्थात् कुल पांच) बिल्ली की नाल स्थापित करना, भवन को तंत्र दोषों से सुरक्षित करने का उपाय है।

६७. प्रवल तांत्रोक्त साधना सामग्री होने के कारण इस को घर में स्थापित करने पर यह समस्त प्रकार के भय का भी नाश करने में सहायक है।

भोगवरदा

६८. समस्त प्रकार के भोगों व सुखों की जीवन में दृढ़ता भोगवरदा के माध्यम से ही सम्भव है।

६९. शेयर मार्केट में रुचि रखने वाले समस्त व्यक्तियों को भोगवरदा अंगूठी में जड़वा कर पहन लेना चाहिए।

७०. निर्माण कार्यों से सम्बन्धित व्यक्ति (ठेकेदार वर्ग) को भी इसी विशेष रत्न का आश्रय लेना ही चाहिए।

७१. जिन व्यापारियों के व्यवसाय का चरित्र इस प्रकार का है कि उसमें दामों का निरन्तर उतार - चढ़ाव बना रहता हो, उन्हें भी यही मणि अपने गल्ले में स्थापित कर लेनी चाहिए।

७२. जहां कोई रत्न अपने अनुकूल न सिद्ध हो रहा हो वहां निःसंकोच भोगवरदा को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर दांये हाथ में धारण करना चाहिए।

७३. वसुधा लक्ष्मी की साधना भी इसी दुर्लभ मणि पर पूर्णता से सम्पन्न की जा सकती है।

७४. यह आकर्षण मणि सम्मोहन के अतिरिक्त प्रभावों से भी संयुक्त होती है।

सुखदा

७५. लक्ष्मी व गणपति के संयुक्त मंत्रों से सिद्ध यह विशेष सात्विक गुटिका है।

७६. इसके माध्यम से ऋणमोचन की कोई भी साधना सम्पन्न की जा सकती है।

७७. यह प्रकारान्तर से रोग निवारण गुटिका भी है एवं घर के शिशुओं को धारण कराने से उसे बाल रोग, नजर आदि का दोष व्याप्त नहीं होता।

७८. अनेक तांत्रिक साधक दीपावली की रात्रि में इसी को लक्ष्मी-गणेश का संयुक्त विग्रह मानकर उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न करते हैं।

७९. दुकान, फैक्टरी आदि में जहां लक्ष्मी - गणेश का विग्रह स्थापित करते हैं, वहीं पीले कपड़े पर इनके इस तांत्रिक स्वरूप को भी स्थापित करना आवश्यक कहा गया है।

८०. यदि बिना किसी कारण अचानक ग्राहक टूटने लग गए हों या साख पर बन आयी हो तब तो इस गुटिका को दुकान में अवश्य ही स्थापित करें।

८१. यह गुटिका भाग्योदय गुटिका भी है और दीपावली की रात्रि में इसे इस रूप में चिन्तन कर श्रद्धापूर्वक धारण करने से शीघ्र ही मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

तांत्रोक्त नारियल

८२. प्राकृतिक रूप से प्राप्त होने वाली यह सामग्री अपने स्वरूप एवं बाधा निवारक प्रभाव में दोनों ही तरह से अनोखी है।

८३. पितृ दोष निवारणार्थ, इतर योनि दोष निवारणार्थ इसके स्थापन से श्रेष्ठ कोई दूसरी साधना सामग्री है ही नहीं क्योंकि इन्हीं दोषों के

फलस्वरूप लक्ष्मी का आगमन सम्भव नहीं हो पाता।

८४. यदि मुकदमे बाजी में फंस गए हों और घर की जमा - पूंजी तक नष्ट हुई जा रही हो तो दीपावली की रात्रि में एक कुल्हड़ में तांत्रोक्त नारियल रख, अपनी समस्या एक कागज पर लिख, दो लौंग, एक काली मिर्च के साथ लाल कपड़े में बांध श्मशान में फेंक आएं।

८५. यदि कोई व्यक्ति अनुचित प्रकार से धन वसूल रहा हो तो इसी तांत्रोक्त नारियल पर उसका नाम काजल से लिख कहीं एकांत में जाकर जला दें।

८६. यदि घर में निरन्तर कोई रोगी बना रहता हो और इस कारणवश आय का एक बड़ा हिस्सा नष्ट हो जाता हो, तब एक तांत्रोक्त-नारियल लेकर उसे सिन्दूर में रंग कर रोगी के सिर पर से घुमा कर घर से काफी दूर दक्षिण दिशा में फेंक आएं।

सौन्दर्य मुद्रिका

८७. यह वास्तव में सौन्दर्य लक्ष्मी का ही विग्रह स्वरूप है, जिसे कोई भी नवयुवती अथवा नवयुवक अपनी उंगली में धारण कर सकता है।

८८. यदि सौन्दर्य में चमक न हो, चेहरे पर झाइयां हों अथवा मुहांसे आदि के कारण सौन्दर्य दब गया हो, तब इस मुद्रिका को मात्र धारण करना ही पर्याप्त उपचार है।

८९. जिन स्त्री या पुरुषों में रंग खुलता हुआ न हो एवं किसी भी क्रीम आदि से स्थिति न सुधरी हो तब सौन्दर्य लक्ष्मी साधना का आश्रय लेना अनुकूल सिद्ध होता है, इसी मुद्रिका को मात्र धारण करने से।

९०. सौन्दर्य लक्ष्मी की साधना का सम्पूर्ण फल देने वाली इस मुद्रिका की एक अन्य विशेषता भी है कि यह शीघ्र विवाह मुद्रिका भी है और इस मनोकामना के साथ विश्वासपूर्वक धारण करने पर इस रूप में भी तीव्रता से फलदायक सिद्ध होती है।

केलन

९१. अघोर पद्धति में की जाने वाली समस्त साधनाओं की आधारभूत सामग्री है केलन, जो अपने स्वरूप में ही दरिद्रता नाशक है।

९२. दीपावली की रात्रि में घर के प्रत्येक दरवाजे एवं खिड़की के पास एक तेल का दीपक रख, प्रत्येक में एक - एक केलन डाल दें तथा ध्यान रखें कि ये दीपक पूरी रात जलते रहें। प्रातः दीपक समेत सभी केलन घर से काफी दूर फेंक आए, इससे घर की दरिद्रता भी चली जाती है।

९३. यदि साधक का किसी दूर स्थान पर कोई कार्य अटका हो या धन सम्बन्धी कोई मामला फंसा हो तो एक केलन दीपावली की रात्रि में अपने सामने रख निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण कर उसे नगर की दक्षिण दिशा में फेंक दें।

मंत्र - ॐ ह्रीं फट्

९४. घर के पालतू पशुओं (गाय, बैल आदि) पर यदि तंत्र प्रयोग अथवा मूठ की आशंका हो तो उनके बाड़े के चारों कोनों पर एक - एक केलन गाड़ देना चाहिए। पालतू पशु भी लक्ष्मी का ही एक स्वरूप हैं, जिन्हें पशुधन की संज्ञा से विभूषित किया गया है।

९५. यदि पैतृक सम्पत्ति में अपना हिस्सा न मिल रहा हो तो दीपावली (अथवा किसी भी अमावस्या पर) एक केलन रख, उस पर श्वेत पुष्प चढ़ा, अपनी मनोकामना व्यक्त करें।

स्वर्णाकर्षण गुटिका

९६. जीवन में विविध प्रकार के धनागमों का उद्भव इसी के माध्यम से सम्भव है।

९७. स्वर्णाकर्षण गुटिका को पूजा स्थान में स्थापित करने वाले साधक को विशेष कर गुप्त माध्यमों से धन प्राप्ति का जरिया मिलता है।

९८. इसी गुटिका का सम्बन्ध स्वर्णाकर्षण भैरव से होने के कारण साधक को अपने अन्दर एक विशेष प्रकार की ऊर्जा और निर्भयता भी सदा अनुभव होती रहती है।

९९. यदि अपनी संचित धनराशि भ्रष्टाचार आदि के कारण कहीं अटकी पड़ी हो एवं प्राप्त न हो रही हो तो दीपावली की रात्रि में स्वर्णाकर्षण गुटिका स्थापित कर उसका पूजन केवल लाल पुष्प से करें।

१००. स्वर्णाकर्षण गुटिका जिनके भी घर में स्थापित होती है उन्हें चोरी, आग, आदि आकस्मिक विपदाओं में धन जाने का भय नहीं रहता, ऐसा शास्त्र प्रमाण है कि **धन को सुरक्षित रखना भी लक्ष्मी साधना का ही स्वरूप है।**

पारद श्री यंत्र

१०१. जिस प्रकार श्री यंत्र अपने- आप में लक्ष्मी का पूर्ण प्रतीक है, **पारद श्री यंत्र**, पारद द्वारा निर्मित होने के कारण इसी विशेषता को और भी ज्यादा स्पष्ट करता है।

१०२. पारद निर्मित होने के कारण इसमें से निकलती तरंगें पूरे घर के वातावरण को उल्लासमय बनाए रहती हैं।

१०३. पारद श्री यंत्र के समक्ष **कमल गट्टे की माला** से **"ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा"** मंत्र की एक माला मंत्र जप करने से ज्येष्ठा लक्ष्मी का घर में चिरवास होता है, जो स्थायी व विविध सम्पत्तियों की पुञ्जीभूता हैं।

१०४. पारद श्री यंत्र के समक्ष नित्य **कमल गट्टे की माला** से एक माला **"श्रीं"** मंत्र की जप करने पर साधक को वृद्धता अथवा अशक्तता व्याप्त हो ही नहीं सकती।

हत्थाजोड़ी

१०५. विरूपा नामक पौधे की जड़ में मिलने वाली यह दुर्लभ सामग्री साबर साधनाओं के माध्यम से लक्ष्मी प्राप्ति की एक आवश्यक वस्तु है।

१०६. नाथ पंथियों के अनुसार यह जिसके भी पास होती है, सामने वाला व्यक्ति उससे सम्मोहित होकर उसे मनोनुकूल धन देता ही है।

१०७. यदि दीपावली की रात्रि में इसे स्थापित कर निम्न मंत्र का जप **सावर माला** से करें तो पूरे वर्ष भर के लिए आर्थिक निश्चिंतता प्राप्त हो जाती है।

मंत्र - ॐ श्रीं श्रियै नमः

अगले वर्ष इसी हत्था जोड़ी पर पुनः इसी प्रयोग को दोहरा सकते हैं।

१०८. हत्था जोड़ी को धारण करने वाले व्यक्ति को स्वप्न में, गुप्त भेद, लॉटरी एवं इसी प्रकार के अनेक रहस्यमय माध्यमों से धन प्राप्त होने की स्थिति बनती रहती है, ऐसा सावर ग्रंथों का प्रमाण है।

प्रस्तुत लेख में वर्णित प्रत्येक साधनात्मक सामग्री यद्यपि मूल रूप से लक्ष्मी साधना से ही सम्बन्धित है किन्तु हमें परम्पराओं एवं उपयोग द्वारा उनके जो विभिन्न उपयोग पता चले, उन्हें भी इसी लेख में समाहित करने का प्रयास किया है, क्योंकि लक्ष्मी साधना का यही वास्तविक अर्थ है। **लक्ष्मी साधना इसी प्रकार सम्पूर्णता की प्रतीक है, न कि किसी एक आकृति को ही वास्तविक मान, जीवन भर उसके सामने गिड़गिड़ाने और हाथ जोड़ने की।** ◆

श्री लक्ष्मी जी की आरती
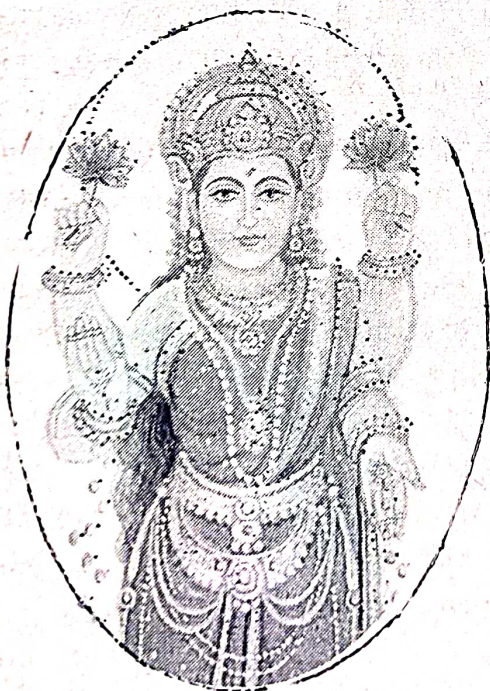
ॐ जय लक्ष्मी माता, (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निसिदिन सेवत हर-विष्णु- धाता।ॐ।।
उमा, रमा, ब्रह्माणी तुम ही जग माता।
सूर्य- चन्द्रमा, ध्यावत, नारद ऋषि गाता।ॐ।।
दुर्गारूप निरंजनि, सुख - सम्पति - दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि - सिद्धि धन पाता।ॐ।।
तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभदाता।
कर्म - प्रभाव - प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता।ॐ।।
जिस घर तुम रहती, तहं सब सद्‌गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहिं घबराता।ॐ।।
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता।
खान - पान का वैभव सब तुमसे आता।ॐ।।
शुभ - गुण - मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि - जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहिं पाता।ॐ।।
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।ॐ।।

लक्ष्मी वर-वरद माल्य

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।

भारतीय आध्यात्मिक चिन्तन में पद्म (कमल) एक प्रिय प्रतीक रहा है उपमाकारों का और शास्त्रकारों का, जिसके द्वारा कई एक स्थितियों को रूपक दिये गये हैं "पद्म" कहकर। चाहे वह इस शरीर में स्थित षट्दल कमल की बात हो या मस्तिष्क में स्थित सहस्रदल कमल की, और जीव की उपमा भी तो कमल से ही की गई है। भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमलदल पर आसीन ब्रह्मा की कथा से कौन नहीं परिचित है। कहने का तात्पर्य है कि भारतीय जीवन पद्धति में चाहे वह चिन्तन हो अथवा सामान्य पूजन, कमल का एक विशेष स्थान है, और इसी कमल पर जो देवी आरूढ़ होती हैं, उनका नाम है– लक्ष्मी। उन्हें केवल कमल पर आसीन ही नहीं किया गया, उन्हें साक्षात् 'कमला' की संज्ञा दी गई। **लक्ष्मी, जो कि पूर्णरूप से ऐश्वर्य, धन-धान्य और समृद्धि की देवी हैं, उनका कमल पर आसीन होना एक प्रतीक है, कि किस प्रकार से भौतिक और आध्यात्मिक स्थितियां जीवन में घुली-मिली होती हैं।** इसे यों भी कहा जा सकता है कि जीवन में पूर्ण भौतिकता जिस आधार पर सुस्थापित हो सकती है, वह होती है आध्यात्मिकता की।

भौतिक समृद्धि और धन-धान्य, ऐश्वर्य, 'श्री' को लेकर हमारी प्राचीन जीवन शैली और प्राचीन शास्त्रकारों की चिन्तन शैली में कोई भी द्वंद्व नहीं रहा। साधनात्मक चिन्तन का ह्रास होने से मान्यताएं बदलीं और याचना, दैन्य, दरिद्रता के साथ ही साथ आत्म-पीड़न को आध्यात्मिकता का पर्याय ही नहीं माना गया, वरन् उसे ही आध्यात्मिकता मान लिया गया, जो नितान्त खोखला आधार रहा।

जहां भी साधना की बात आती है वहां यंत्र, मंत्र और तंत्र की त्रिवेणी की बात आवश्यक हो जाती है। यंत्र और मंत्र के संगम पर गुप्त रूप से बहती है तंत्र की धारा, जिसमें स्नान कर व्यक्ति प्राप्त कर सकता है अपने जीवन की सभी कामनाओं की पूर्ति, इसकी एक-एक धारा भी अपने-आप में परिपूर्ण है। प्रत्येक धारा में स्वतंत्र रूप से भी इतना प्रभाव है कि व्यक्ति अकेले उसके आधार पर जीवन में बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है, जो उसके जीवन की इच्छाएं हैं और इच्छाएं तो होनी ही चाहिए क्योंकि इच्छाएं और कामनाएं ही जीवन में आधार होती हैं– सरसता और गति की।

इसी की एक धारा है "यंत्र"। यंत्र का तात्पर्य ताम्र पत्र पर उत्कीर्ण कुछ रेखाओं अथवा गोपनीय संकेताक्षरों तक ही सीमित नहीं होता। **प्रत्येक वह उपाय जो हमारे जीवन में सहजता और सरलता से अल्प समय के अन्दर इच्छित प्राप्त करा दे, वह यंत्र ही है, और ऐसा ही एक यंत्र है– "लक्ष्मी वर-वरद माल्य"।** लक्ष्मी वर-वरद माल्य केवल किसी माला का ही नाम नहीं, यह तो साक्षात् लक्ष्मी को अपने शरीर, प्राण और सम्पूर्ण जीवन में उतार लेने की क्रिया है। यंत्रों का तात्पर्य एक सहयोगी उपकरण के रूप में ही नहीं होता। यंत्र विद्या तो अपने-आप में सम्पूर्ण विधा है।

विशिष्ट साधनाओं अथवा देवी-देवताओं को विशिष्ट तांत्रोक्त पद्धति से, उनके समस्त रूपों को किसी माल्य के रूप में उतार दिया जाए, तो वह माल्य सम्पूर्ण रूप से सिद्धिदायक एवं उस देवी या

देवता का पूर्ण प्रतिनिधित्व करने वाली हो जाती है।

लक्ष्मी वर-वरद माल्य ठीक ऐसी ही दिव्य माला है, जिसमें लक्ष्मी के समस्त १०८ स्वरूपों का समाहितीकरण भली-भांति किया गया है। लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों की साधना करना उन्हें पूर्णरूप से चंचला होते हुए भी सिद्ध कर लेना, और केवल सिद्ध ही नहीं कर लेना वरन् उनका आबद्धीकरण भी कर देना है, जो केवल इस दिव्य माल्य (माला) के द्वारा ही सम्भव है। लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों के नाम इस प्रकार हैं—

१. लक्ष्मी २. माहेश्वरी ३. कुमारी ४. ब्रह्माणी ५. योगमाया ६. महाविद्या ७. महायोगा ८. ऋणहर्ता ९. सिद्धि देवी १०. जया ११. विजया १२. आनन्दा १३. सर्वमंगला १४. विलासी १५. ईश्वरी १६. शुभगा १७. कुलदेवी १८. विष्णु प्रिया १९. पद्मावती २० . पद्मनेत्रा २१. मातंगी २२. दिनेश्वरी २३. उमा २४. सुकेशी २५. जलोदरी २६. विभूषणा २७. मोक्षदा २८. कामदायिनी २९. भोगदा ३०. सुरारि ३१. वत्सला ३२. विद्या ३३. पापनाशिनी ३४. क्षयकरी ३५. तेजस्विनी ३६. शम्भुरूपा ३७. भाग्यजननी २८. भाग्यदेवी ३९. भाग्यरूपिणी ४०. भाग्या ४१. भीति नाशिनी ४२. भुवना ४३. भुवनानन्दकारिणी ४४. मुक्तिदा ४५. भोगरक्षणी ४६. भोगेश्वरी ४७. भोगस्था ४८. भोगवती ४९. भूधरा ५०. भोगविलासिनी ५१. भव्या ५२. भव्यतरा ५३. भवदल्लभा ५४. भास्करा ५५. उदया ५६. दिव्या ५७. चक्रिणी ५८. भवनाशिनी ५९. भवाब्धितरणी ६०. सुखवर्धिनी ६१. कार्यकरणी ६२. करुणानिधि ६३. कालशमनी ६४. वरदायिनी ६५. नित्या ६६. निशा ६७. काम्या ६८. कला ६९. शुभदायिनी ७०. कमला ७१. सकलाकला ७२. सकलासिद्धि ७३. सकलानिधि ७४. सकलसारा ७५. सकलार्थदा ७६. भुवनमूर्ति ७७. भुवनाकृति ७८. भुवनाभव्या ७९. मदनारूपा ८०. मदनातुरा ८१. मदनेश्वरी ८२. भाग्यरचना ८३. भाग्यदाकुला ८४. भाग्यविरता ८५. भाग्यभाविता ८६. भाग्यसंचिता ८७. भाग्यसुपथा ८८. भाग्यसुप्रदा ८९. भोगसम्प्रदा ९०. भोग्यगुम्फिता ९१. भोगयोगिनी ९२. भोगरसना ९३. भोगराजिता ९४. भोगविभवा ९५. भोगवरदा ९६. भोगकुशला ९७. भद्रा ९८. भद्रेश्वरी ९९. भद्रक्रिया १००. भद्रक्रीड़ा १०१. भद्रविद्या १०२. भूपमंगलदा १०३. भवदानन्दलहरी १०४. भवदानन्ददायिनी १०५. शिवदा १०६. महामाया १०७. कुबेरा १०८. गुरुप्रिया।

ऊपर लिखे नामों से सहज ही स्पष्ट होता है कि लक्ष्मी के १०८ स्वरूप कितनी विविधता और विशिष्टता समेटे हुए हैं। आप खुद ही कल्पना करिए, जब लक्ष्मी सम्पन्न होती है लक्ष्मी वर-वरद माल्य में। उसके प्रत्येक मनके में लक्ष्मी के एक - एक स्वरूप को लेकर उसकी पूर्ण चैतन्यता और प्रभावकारी गुण उतार दिया जाता है, जो एक अत्यन्त दुरूह और गोपनीय क्रिया है।

स्फटिक की मणिमाला को लेकर उसके प्रत्येक मनके में विधिवत पूजन और गोपनीय क्रियाओं इत्यादि के द्वारा लक्ष्मी के एक-एक स्वरूप को समाहित कर इस दिव्य और देव दुर्लभ माला का निर्माण किया जाता है। ऐसी माला पाने के लिए साधारण मानव ही नहीं देवगण तक लालायित रहते हैं, क्योंकि लक्ष्मी का प्रभाव होता ही इतना व्यापक है। इस चराचर जगत में लक्ष्मी ही तो है, जो सभी को मोह लेने में समर्थ है, फिर यदि एक गृहस्थ इसकी कामना करता है, तो उसमें आश्चर्य ही क्या?

ॐ हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।

स्फटिक तो स्वयमेव एक दिव्य पदार्थ है। स्फटिक का स्पर्श और दर्शन ही फलदायक कहा गया है, जिसको देखते ही उसकी शुभ्रता और स्वच्छता से मन में शीतलता व्याप्त हो जाती है।
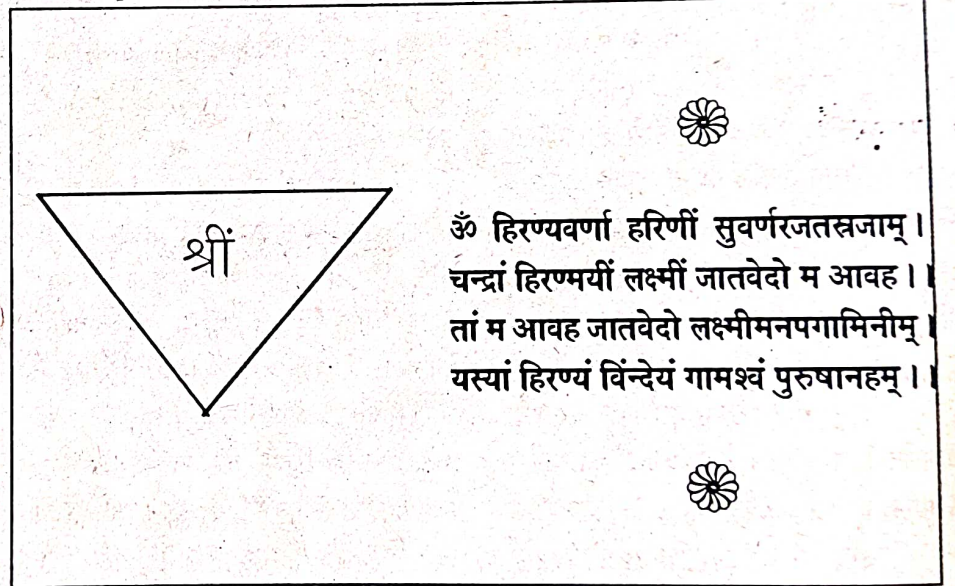
को उसके एक ही स्वरूप 'लक्ष्मी' के रूप में प्राप्त करने में सारी उम्र खप जाती है, किन्तु फिर भी जो कुछ प्राप्ति होती है वह इतनी उल्लेखनीय नहीं होती कि उसे जीवन की प्राप्ति कहा जा सके, और वहीं लक्ष्मी के सभी १०८ स्वरूपों को लेकर इस जीवन में उतारना कठिन कार्य है, किन्तु जैसा कि मैंने पहले लिखा, यंत्र विद्या में तो वे उपाय हैं, जो कि कठिन से कठिन कार्य को सरलतम बना देते हैं, और यही क्रिया

व्यक्ति कैसे भी मानसिक तनाव में हो यदि वह सामान्य रूप से भी स्फटिक मणिमाला धारण कर लेता है, तो उसे अपूर्व शांति और दिव्यता प्राप्त होने लगती है। स्फटिक का विशेष गुण है कि वह अपने स्पर्श से

व्यक्ति को शून्यता की स्थिति में ले जाता है, और फिर यही शून्यता व्यक्ति के विविध तनावों व द्वंद्वों की समाप्ति कर देती है, और यदि ऐसी दिव्य माला लक्ष्मी प्रभाव से भी युक्त हो उठे, तब तो उसकी विलक्षणता के विषय में कहना ही क्या! इस 'लक्ष्मी वर वरद-माल्य' में ऐसे ही गुणों का समावेश होने से यह माला पूर्ण रूप से भौतिक समृद्धि देने के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति व कुण्डलिनी जागरण की स्थितियां प्रदान करने में भी समर्थ होती है।

माला के रूप में लक्ष्मी का यह सम्मोहितीकरण जहां व्यक्ति के वक्षस्थल से निरंतर सम्पर्कित रह उसके शरीर में धीरे- धीरे लक्ष्मी तत्व समाहित कर देता है, वहीं लक्ष्मी के सम्पूर्ण स्वरूपों की प्राप्ति व्यक्ति को हो जाने से उसके अन्दर सम्मोहनकारी गुण भी पनपने लगते हैं। जिस प्रकार से पद्मगन्ध छुपाए नहीं छुपती, उसी प्रकार से लक्ष्मी तत्व की शरीर में प्रविष्टि कभी कहीं यौवन की गुलाबी आभा बन कर प्रकट होती है, तो कहीं शरीर से निःसृत होती है, दिव्य गंध के रूप में। ऐसी माला धारण करने वाले स्त्री या पुरुष के शरीर से ऐसी ही पद्मगंध आने लगती है, कि उससे मिलने-जुलने वाले ठिठक कर उससे सम्मोहित हो ही जाते हैं, और यही सम्मोहनकारी गुण फिर व्यक्ति को सफलता प्रदान करने वाला बन जाता है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में।

जीवन के अलग-अलग रूपों में आश्चर्यजनक रूप से यह वर-वरद माल्य सहायक सिद्ध होती है। केवल धन-प्राप्ति के क्षेत्र में ही नहीं अथवा व्यापार की उन्नति के रूप में ही नहीं वरन् यदि कोई दुष्प्रभाव जीवन अथवा व्यापार आदि के साथ चल रहा हो, तो उसका भी निराकरण स्वतः ही कर देती

ऐसी माला धारण करने वाले स्त्री या पुरुष के शरीर से ऐसी ही पद्मगंध आने लगती है, कि उससे मिलने- जुलने वाले ठिठक कर उससे सम्मोहित हो ही जाते हैं, और यही सम्मोहनकारी गुण फिर व्यक्ति को सफलता प्रदान करने वाला बन जाता है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में।

जीवन के अलग-अलग रूपों में आश्चर्यजनक रूप से यह वर-वरद माल्य सहायक सिद्ध होती है। केवल धन-प्राप्ति के क्षेत्र में ही नहीं अथवा व्यापार की उन्नति के रूप में ही नहीं वरन् . . .

है। ऋण, दरिद्रता, तनाव, निर्धनता, अड़चनें आदि ऐसी कई दुखद स्थितियां इसके माध्यम से समाप्त हो जाती हैं।

जो व्यक्ति मुकदमेबाजी में फंसे हों अथवा जिनके ऊपर कोई राज्य बाधा आ पड़ी हो या ऐसे व्यक्ति अथवा व्यापारिक बन्धु जिन्हें अधिकारियों से निरन्तर कार्य पड़ता रहता हो, उनके लिए यह माला धारण करना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि इस माला के विशिष्ट सम्मोहनकारी प्रभाव इस क्षेत्र विशेष के लिए भी तो हैं।

घर में स्त्री हो अथवा पुरुष, इस दिव्य माला को बिना किसी भेद-भाव के कोई भी धारण कर सकता है, और एक प्रकार से कहा जाए तो परिवार के मुखिया के साथ-साथ परिवार की स्त्री को भी यह माला धारण करनी ही चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी एक स्त्री है और स्त्री के ही माध्यम से वह अधिक सरलता से अपना प्रभाव प्रकट कर सकती है, तभी तो घर की स्त्री को गृहलक्ष्मी की संज्ञा दी गई है।

केवल इतना ही नहीं जिस प्रकार से मांगलिक अवसरों पर अपने परिवार में स्त्रियों को आभूषण भेंट किए जाते हैं, उन्हीं अवसरों पर यदि इस दिव्य लक्ष्मी वर-वरद माल्य को उपहार में दिया जाए, तो न केवल उससे उस स्त्री का सम्पूर्ण जीवन संवर जाता है वरन् उसके माध्यम से उसके घर में ऐसी "श्री" का प्रादुर्भाव हो जाता है, जिससे सम्पूर्ण रूप से उसके परिवार का जीवन श्रेष्ठ और सफलता युक्त बन जाता है।

यह कोई साधारण माला नहीं है। यह तो एक ऐसी अलौकिक रचना ही कही जा सकती है, जो कभी-कभी ही किसी योग्य व ज्ञाता गुरु के निर्देशन में ही रची जा सकती है, और जिसको तैयार करने में प्रायः एक वर्ष भी लग जाता है। यह तो एक ऐसी सौगात होती है जिसे संजोकर रख लिया जाता है, और जो आने वाली पीढ़ियों के लिए अनुपम उपहार सिद्ध होती है।

यह माला किसी साधना का उपकरण नहीं है वरन् यह माला प्राप्त करना ही अपने-आप में सम्पूर्ण साधना है, क्योंकि जिनके पुण्य उदित हो जाते हैं, जिनके जीवन में श्रेष्ठता, यश, मान और ऐश्वर्य की प्राप्ति के क्षण आ जाते हैं, वे ही इस प्रकार की देव-दुर्लभ माला प्राप्त कर एक झटके में ही जीवन में वे सभी स्थितियां प्राप्त कर लेते हैं, जो कि अन्यथा उन्हें निर्मित करने में सम्पूर्ण जीवन लगाना पड़ता। ◆

फिर दूर कहीं पायल खनकी
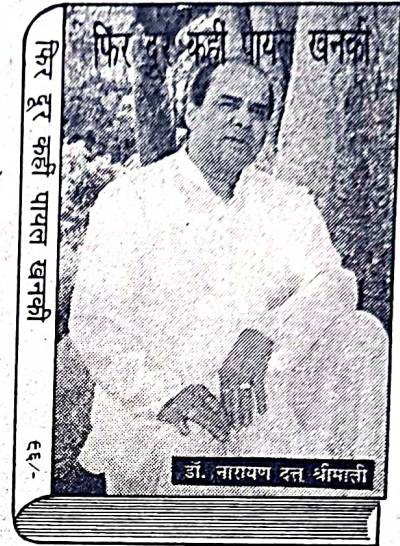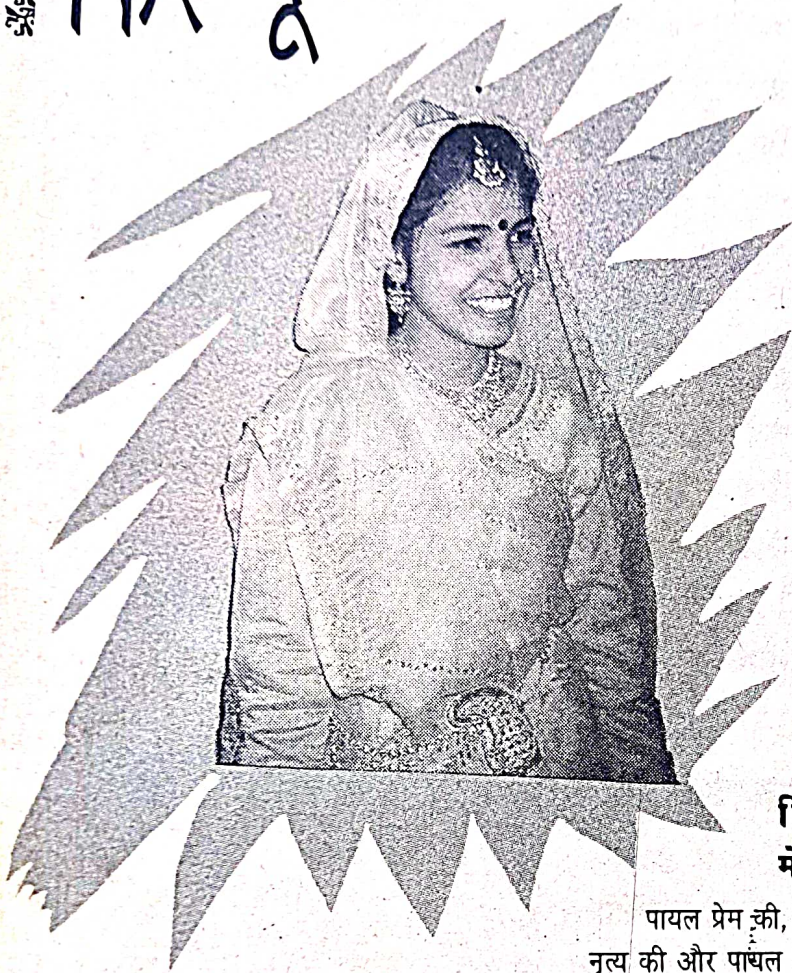
सजिल्द मूल्य : ९६/-

फिर कहीं पायल छनकी
मेरे दिल की रह गुजर पर।

पायल प्रेम की, पायल सौन्दर्य की, पायल जीवन के उल्लास की, पायल जीवन के नृत्य की और पायल जीवन के समस्त श्रृंगार की . . . वह पायल जो छनक रही है कई युगों के बाद . . . कृष्ण के युग के बाद उस तन्मयता और उत्सवमयता के साथ. . .और इस बार भी पायल छनकी है शब्दों से, शब्दों के गुंजरण से, उनके गुंफन से, लय से, सरसता से, उनकी एकरसता, लयबद्धता से . . . साक्षात् कृष्ण के युग को इस धरा पर उतारता, उसी नृत्योत्सव में ले जाता पूज्यपाद गुरुदेव की वाणी में रचित एक ग्रंथ, एक ग्रंथ ही नहीं साक्षात् नर्तन, साक्षात् जीवंत महारास, जीवन का उल्लास. . जिस पायल की छनक को दिल की रह गुजर पर सुनना भूल चुके हैं, उसी को फिर से सुनाने का, उसी को फिर से याद दिलाने का, उसी को फिर से जीवन में उतार देने का अथक प्रयास, एक अनोखा ग्रंथ, ग्रंथ से भी ज्यादा एक काव्य, काव्य से भी ज्यादा एक संगीत, एक संगीत से भी ज्यादा एक नृत्य, एक नृत्य से भी ज्यादा एक रास और एक रास से भी ज्यादा एक महारास. . . **ब्रह्म, ईश्वर, आत्मा-परमात्मा के गूढ़ रहस्यों पर और कुण्डलिनी, ध्यान, धारणा, समाधि पर लिखना आसान है, पर प्रेम . . . . प्रेम के रहस्यों** को उजागर करना, स्पष्ट करना अत्यधिक कठिन और इसी प्रेम की व्याख्या तथा उसके माध्यम से ईश्वर प्राप्ति, कुण्डलिनी जागरण तथा पूर्ण साधना- सिद्धि से सम्बन्धित एक अनमोल ग्रंथ **गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी** की लेखनी से लिखित . . .

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्री माली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१-३२२०९

सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८९७००

डॉ० रामदास शर्मा,
विजय कुमार शर्मा,
रायपुर (म० प्र०)

ईश्वरीय लीलाओं का आधार माया

सम्पूर्ण विश्व ईश्वरीय लीलाओं का एक विराट संसार है। इन लीलाओं को देखकर ही चकित मानव के जिज्ञासु मानस में दार्शनिक प्रश्न उपस्थित हुआ, और उत्तरों की खोज में मानव को परमोच्च ईश्वरीय सत्ता के साथ ही एक ऐसी भी शक्ति का परिदर्शन हुआ, जिसे सूरदास जैसे महान कवि ने भी अनुभव किया और कहा— "तनमाया, ज्यों ब्रह्म कहावत सूर सु मिलि बिगरौं।"

भारतीय दार्शनिक प्रणालियों में सम्भवतः सर्वाधिक विवाद का विषय यह माया ही है। वेदान्त दर्शन का केन्द्र बिन्दु ब्रह्म के बाद यह माया ही है, जिस पर शंकराचार्य जैसे ऋषि ने बड़ी गहराई के साथ विचार किया है। कबीर जैसे संत को तो जैसे हार मानते हुए यह कहना पड़ा— "मन मरा, न माया मरी, मरि-मरि गया शरीर।" चराचर जगत को यह माया- शक्ति आप्लावित किए हुए है। क्या है ये माया-शक्ति? कौन-सी है वह महान शक्ति, जो परमोच्च ईश्वरीय सत्ता को भी साधारण मानवों की तरह इस धरती में सुख-दुःख अनुभव करने के लिए विवश कर देती है?

भारतीय संस्कृति के इतिहास में प्राचीनतम ऋग्वेद में इन्द्र की माया-शक्ति और उसके विविध रूपों में भासित होने का वर्णन सर्वप्रथम प्राप्त होता है। ऋग्वेद के ही एक अन्य मंत्र में माया को जागतिक सृजन, अभिरक्षण और संवर्धन युक्त शक्ति के रूप में निरूपित किया गया है। एक दूसरे मंत्र में ऋषि का सम्मोहक काव्यमय वर्णन इस प्रकार है—

**"हे मित्रावरुण!
आपकी माया-शक्ति
आकाश का आश्रय लेकर
विनाश करती चलती है।
चित्र-विचित्र रश्मियों से
सम्पन्न, ज्योतिष्मान
सूर्य, उसी माया
के आश्रय पर चलता है।
आकाश में रवि
बादल और वर्षा में प्रच्छन्न हो जाते हैं,
बादल मधुमय जलकणों से
वर्षा कर
वसुधा को,
मधुमयी, मंगलमयी,
मोदमयी
बना देती है।"**

भारतीय संस्कृति के अभ्युदय के ऊषाकाल में ही "सैषा त्रिगुणात्मिक, सैषा ब्रह्म, रुद्र, विष्णुरूपिणी का अनुभव हमारे ऋषियों को होने लगा था, किन्तु उस शक्ति की स्पष्ट रूपरेखा उपनिषदों के युग में ही हुई। उपनिषदों में हमारे ऋषियों ने ब्रह्म, आत्मा, ईश्वर, जगत, माया आदि की तात्विक व्याख्या प्रस्तुत की। माया के सन्दर्भ में उपनिषदिक ऋषि का कथन है— "माया-ईश्वर की उपाधि है। माया की शक्ति से सम्पन्न होने के कारण ही अक्षर ब्रह्म संसार का सृजन करने में समर्थ होता है।"

उपनिषदिक ऋषि ने एक स्थान पर माया को "प्रकृति" की संज्ञा दी है। यह "प्रकृति" सांख्य दर्शन में वर्णित प्रकृति से भिन्न ही प्रतीत होती है। कारण- कार्य की सत्यता पर आधारित सत्कार्यवादी होने के कारण सांख्य दर्शन में प्रकृति भी सत् है, किन्तु वेदान्त में विवर्तवाद (भ्रांति) होने के कारण "प्रकृति' असत् है, भले यह व्यवहारिक जगत में हो। उपनिषदिक ऋषि की दृष्टि में माया का अधिष्ठाता सच्चिदानन्द ब्रह्म है, वह मायावी होता है। उस सद्रूप ब्रह्म की माया के कारण कल्पित हुए अवयव रूप कार्य-कारण संघात से यह सम्पूर्ण दृश्यमान जगत व्याप्त है।

एक और उपनिषदिक ऋषि ने ब्रह्म-प्राप्ति के मार्ग का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया है कि जागतिक झूठ, वंचना और माया से रहित व्यक्ति ही ब्रह्म को प्राप्त करने में समर्थ होता है। गीता

दर्शन में माया का उल्लेख एकाधिक प्रसंगों में किया गया है। गीता में स्पष्ट किया गया है कि जिस योग शक्ति से भगवान इस जगत को धारण करते हैं, वही माया है। **श्रीकृष्ण कहते हैं– ''मैं अजन्मा और अविनाशी होते हुए तथा समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी प्रकृति को अपने अधीन करके अपनी योग-माया से प्रकट होता हूं।''** गीता में ही आकर यह स्पष्ट होता है कि ईश्वरीय सत्ता का अवतरण किस तरह होता है?

गीता में ही एक स्थान पर माया को त्रिगुणात्मिका दुस्तर शक्ति से संबोधित करते हुए श्रीकृष्ण कहते हैं– ''यह अलौकिक त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है। जो पुरुष केवल मुझको ही भजते हैं, वे इस माया का उल्लंघन कर जाते हैं। माया ज्ञानस्वरूपा है, किन्तु यही माया-शक्ति ईश्वरीय लीलाओं का भी आधार है। यह ईश्वर अंतर्यामी परमेश्वर है, और अपनी माया की शक्ति से ही कर्मों के अनुसार जीवों को विभिन्न योनियों में परिभ्रमित करता है। **भागवत दर्शन के अनुसार माया एक ऐसी शक्ति है, जो सृष्टि करती है और संहार करती है, वह अज्ञानरूपा है। संसार में आसक्त, अज्ञानी ही माया को सत्य वस्तु मानते हैं।**

अद्वैत वेदान्त के अधिष्ठाता शंकराचार्य ने माया को ईश्वर की बीजशक्ति के रूप में स्थापित किया है। इसी शक्ति के आधार पर जगत ईश्वर का सृष्टा सिद्ध होता है। यह बीज शक्ति अविद्यात्मक, अव्यक्त होती है, यह महासुषुप्ति भी है। इसी महासुषुप्ति में संसारी जीव अपने वास्तविक स्वरूप को विस्मृत कर निद्रित रहते हैं। माया न सद्रूप है और न असद्रूप, न ब्रह्म से भिन्न है और न अभिन्न है, वह अनिर्वचनीय है।

उपनिषदिक दर्शन में अनेक स्थलों पर विरोधाभास लक्षित होते हैं, किन्तु शंकरभाष्य में उन विरोधाभासों का सामंजस्य स्थापित किया गया है। उपनिषदों में ईश्वर को निर्गुण और निराकार बतलाया गया है। ऐसा ईश्वर सृष्टि का कैसे कारण है? कैसे सभी जीव उससे उत्पन्न होते हैं? यदि सत्य, ज्ञान, अनन्त स्वरूप ब्रह्म निर्गुण और निराकार है, तो यह सृष्टिकर्ता ईश्वर कैसे है? शंकरभाष्य में इसका स्पष्टीकरण यह प्राप्त होता है कि **वास्तव में ब्रह्म निर्गुण और निर्विकार ही है, किन्तु मृत्योपाधिक होकर सगुण और साकर हो जाता है। माया ईश्वर की त्रिगुणात्मिका शक्ति है, मूल प्रकृति है। अपनी इसी प्रकृति को वश में करके राम और कृष्ण आदि रूपों में ईश्वर का सगुण अवतार होता है।** शंकराचार्य यह भी मानते हैं कि मायारहित होने पर परमेश्वर में सगुण होने की प्रवृत्ति नहीं होती। यह माया वास्तव में ईश्वर की लीला शक्ति है। निर्गुण ब्रह्म अपनी लीला शक्ति से सगुण होता है। निर्गुण से सगुण होना उसकी इच्छा और माया पर निर्भर है। शंकरभाष्य में शंकराचार्य कहते हैं– ''ज्ञान, ऐश्वर्य, शक्ति, बल, वीर्य और तेज आदि से सदा सम्पन्न भगवान यद्यपि अज, अविनाशी, सम्पूर्ण भूतों के ईश्वर और नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वभाव हैं, तो भी अपनी त्रिगुणात्मिका मूल- प्रवृत्ति वैष्णवी माया को वश में कर लीला से शरीरधारी होते हैं।

(पृष्ठ ३२ का शेष)

ॐ श्रीमद्गीर्वाणचक्रस्फुटमुकुटतटी दिव्यमाणिक्य मालाज्योतिर्ज्वाला कराला स्फुरितमकरिकाघृष्टपादारविन्दे। व्याघ्रोरुल्कासहस्त्रज्वलदनलशिखालीलपाशांकुशाढये आं क्रां ह्रीं मंत्ररूपे क्षपित्तकलिमले रक्ष मां देवि पद्मे।।

अब हाथ में माला लेकर बीज मंत्र ''आं क्रों ह्रीं'' की एक माला मंत्र-जप करें, इससे दोष निवारण होता है, और साधना में सफलता मिलती है, तथा भूत-पिशाच इत्यादि के उपद्रव दूर होते हैं।

शास्त्रोक्त कथन है कि जो साधक भगवती पद्मावती की साधना सम्पन्न करता है, उसे भगवती पद्मावती की शक्तियों से रक्षा प्राप्त होती है, देवी की क्राली शक्ति, जो सरस्वती प्रचण्ड वाग्दायिनी स्वरूप है, साधक के मुख में स्थित होती है। ऊपर लिखे मंत्र का जप कर साधक को भगवती पद्मावती का पुनः ध्यान कर, पुष्प अर्पण कर पांच दिनों में इक्कीस हजार मंत्र-जप सम्पन्न करना आवश्यक है।

भगवती पद्मावती मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं पद्मावती सकल चराचर त्रैलोक्य व्यापी ह्रीं क्लीं प्लूं हां हां ह्रीं हौं हौं हों हः ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

जब साधक अपनी साधना में यह मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न कर लेता है, तो उसे देवी के साक्षात् विकराल स्वरूप का दर्शन होता है, तमोगुण स्वरूप देवी की साधना में साधक प्रसिद्धि की ओर अग्रसर होता है।

यदि पांच दिन में इक्कीस हजार मंत्र-जप न हो सके, तो इसे अगले महीने के पांच दिनों में सम्पन्न करना चाहिए, लेकिन यह आवश्यक है कि पांच दिन तक रात्रि को निरन्तर निश्चित दिनों में ही अनुष्ठान करें।

साधना के पश्चात् साधक यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रखें, और नित्य प्रातः एक माला भगवती पद्मावती के बीज मंत्र **''आं क्रों ह्रीं''** का जप अवश्य ही करें।

जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जिसमें साधना के बल पर कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सके. . . और पद्मावती, साधकों के लिए वरदान स्वरूप साधना ही है।

हनुमान साधना

संकट कटे हरे सब पीरा

सेवा की प्रतिमूर्ति के रूप में यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वह निःसन्देह श्री हनुमान है, जिन्होंने स्वयं देव स्वरूप होते हुए भी दास के रूप में प्रतिष्ठित होना ही अपना सौभाग्य माना। इतिहास में ऐसा कोई दूसरा उदाहरण है ही नहीं और इसका प्रतिफल उन्हें इस प्रकार से मिला कि वे अपने इष्ट से भी अधिक पूजनीय एवं वन्दनीय हो गए। वस्तुतः उनके इस प्रकार से पूजनीय होने के मूल में उनके इष्ट भगवान श्री राम का ही आशीर्वाद छिपा है।

इस सम्बन्ध में पुराणों में कथा मिलती है कि जब भगवान श्री राम वर्तमान रामेश्वरम नामक स्थान पर शिवलिंग की स्थापना करने को तत्पर हुए तब उन्होंने श्री हनुमान को उचित शिवलिंग की खोज करने को भेजा किन्तु विलम्ब होने के कारण उचित मुहूर्त निकलता हुआ देख बालुका शिवलिंग की ही स्थापना कर दी। उधर भगवान श्री हनुमान जब अपनी तपस्या के द्वारा भगवान शिव को प्रसन्न कर उन्हीं के द्वारा दिया गया शिवलिंग लेकर उपस्थित हुए, तो पाया कि वहां तो शिवलिंग की स्थापना हो चुकी है, यह देखकर उन्हें अत्यन्त दुःख पहुंचा किन्तु भगवान श्री राम ने उन्हें धैर्य दिया कि उनके द्वारा लाया गया शिवलिंग भी वहीं स्थापित किया जाएगा और उसका नाम होगा हनुमदीश्वर शिवलिंग। साथ ही उन्होंने यह भी वरदान दिया कि इस हनुमदीश्वर शिवलिंग के दर्शन के उपरान्त ही रामेश्वर शिवलिंग का दर्शन करना पुण्यदायक सिद्ध होगा। आज भी रामेश्वरम में यही परम्परा है कि पहले हनुमदीश्वर शिवलिंग का दर्शन किया जाता है, इसके उपरान्त ही मूल रामेश्वर शिवलिंग की अर्चना-पूजा की जाती है।

कालांतर में भगवान श्री हनुमान के इष्ट एवं स्वामी द्वारा दिया गया वरदान केवल उनके द्वारा स्थापित शिवलिंग तक ही सीमित नहीं रहा वरन् स्वयं भगवान श्री हनुमान के जीवन में भी उतर आया और भगवान श्री राम से भी पूर्व हनुमान की पूजा की ऐसी पद्धति प्रारम्भ हो गई जो

आज तक अक्षुण्ण है। **स्कन्द पुराण** में भगवान श्री राम ने स्पष्ट कहा है कि मेरे द्वारा किया गया प्रत्येक कर्म तुम्हारे (अर्थात् हनुमान) द्वारा किया गया कर्म है एवं तुम्हारे द्वारा किया गया प्रत्येक कर्म मेरे द्वारा किया गया कर्म है।

भगवान श्री हनुमान का रहस्य अत्यन्त विशाल है और उनकी पूजा पद्धति अपने-आप में कई-कई अर्थ समेटे है। भगवान श्री हनुगान की उपासना का तात्पर्य है साक्षात् भगवान श्री राम के इष्ट भगवान शिव की ही उपासना क्योंकि भगवान श्री हनुमान मूलरूप में रुद्र स्वरूप जो हैं। इसी कारणवश उनका स्वरूप इतना अधिक तेजस्वी, प्रखर है।

यों तो भगवान श्री हनुमान का पूजन एवं उनके प्रति जो श्रद्धा-भावना है उसकी जनसामान्य के मध्य कोई सीमा ही नहीं है, किन्तु इसी श्रद्धा-भावना के साथ जब साधक उनके नियम पूर्वक साधना भी सम्पन्न कर लेता है तो स्वयं निरोगी सबल बनकर भय-बाधा, अनिष्ट-बाधा से, सर्वथा मुक्त होकर अपना जीवन मंगलमय बना लेता है। **रोग निवारण एवं अनिष्ट निवारण के लिए भगवान श्री हनुमान की साधना से उपयुक्त कोई अन्य साधना मानी ही नहीं गई।** जिसको भी भगवान श्री हनुमान के अन्दर समाए तेज, बल का आभास प्राप्त करना हो, उसे चाहिए कि वह कहीं एकान्त में वीर मुद्रा अथवा वज्रासन मुद्रा में बैठकर उनके बीज मंत्र "हुं" का घोष निरन्तर पांच मिनट तक पूरी शक्ति से कर ले। यदि वह ऐसा नित्य पांच मिनट भी कर ले तो सारे चेहरे और शरीर की आभा ही बदल जाती है और एक विचित्र प्रकार का ओज व लालिमा झलक उठती है।

शास्त्रों में भगवान श्री हनुमान से सम्बन्धित अनेक साधनाएं वर्णित की गई हैं, जो अलग-अलग परिस्थितियों को ध्यान में रखकर रची गई हैं। यह उनकी विराटता और उनके वरदायक स्वरूप का ही उदाहरण है। शत्रु भय हो अथवा आकस्मिक राज्य बाधा अथवा भूत-प्रेत आदि का प्रकोप, प्रत्येक स्थिति के लिए अलग-अलग ढंग से मंत्रों व होम की व्यवस्था बनाई गई है। इन्हीं सैकड़ों प्रयोगों में से रोग निवारण के सम्बन्ध में

कैसी भी असाध्य पीड़ा हो, जटिलता हो भगवान श्री हनुमान की आराधना युगों युगों से परीक्षित विधि रही है।

हनुमान बाहुक नामक स्तोत्र भगवान श्री हनुमान की इसी विशेषता पर आधारित है।

एक अचूक मंत्र का उल्लेख मिलता है, जिसका प्रयोग यदि किसी रोग के लिए किया जाए तो रोगी लाभ प्राप्त करता ही है। भगवान श्री हनुमान तो रोगनाशक एवं स्वास्थ्य प्रदाता दोनों ही रूपों में सदा से पूजनीय रहे हैं। **यहां तक वर्णन मिलता है कि रामचरितमानस के रचयिता श्री गोस्वामी तुलसीदास की बांह में जब असह्य पीड़ा हुई तब उन्होंने अपने इष्ट श्री हनुमान की उपासना में एक पूरा काव्य 'हनुमान बाहुक' रचा तथा असाध्य पीड़ा से मुक्ति प्राप्त की।**

प्रस्तुत लेख में जिस साधना का वर्णन दिया जा रहा है वह भगवान श्री हनुमान के प्रिय दिवस किसी भी मंगलवार को की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि साधक के पास भगवान **श्री हनुमान का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र** एवं **ताम्र पत्र पर अंकित मंत्र-सिद्ध हनुमान यंत्र** अवश्य हो। यदि साधक स्वयं किसी कारणवश प्रयोग सम्पन्न कर सकता है तो उसके नाम का संकल्प लेकर कोई अन्य साधक भी उसके लिए यह साधना कर सकता है। मंगलवार की रात्रि में दस बजे के आस-पास लाल वस्त्र बिछाकर पूर्वमुख होकर बैठ जाए, स्वयं के वस्त्र भी लाल हों और सामने बिछा कपड़ा भी लाल रंग का हो। यंत्र को चावलों की ढेरी पर स्थापित कर यथासम्भव लाल पुष्प चढ़ाकर गुड़ एवं घी का मिला हुआ भोग लगाए। यह ध्यान रखने की बात है कि हनुमान साधना में सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग कदापि नहीं किया जाता है, साथ ही ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त दृढ़ता से करे। यह तीन दिवसीय प्रयोग है और उचित यह माना गया है कि साधक इन तीनों में केवल दुग्ध एवं फल ही ग्रहण करे, भूमि शयन करे और यथासम्भव कम-से-कम वार्तालाप करे।

यंत्र का पूजन, धूप आदि के बाद **चैतन्य मूंगा माला** से निम्न मंत्र का एक सौ आठ बार उच्चारण करें।

मंत्र

ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा

मंत्र-जप के उपरान्त रात्रि शयन वहीं पर करे और ऐसा नित्य तीन दिन तक करे। तीन दिन के बाद साधक माला को अपने गले में धारण कर ले, जबकि यंत्र को गुप्त दान के साथ कहीं भेंट कर दें। यदि साधक को किसी प्रकार की प्रेत बाधा होती है और इस कारण उसका स्वास्थ्य गड़बड़ बना रहता है तब भी यह प्रयोग पूर्ण सफलतादायक सिद्ध होता है।

भगवती लक्ष्मी की समस्त साधनाओं के मध्य अष्टलक्ष्मी साधना का विशेष स्थान एवं महत्व है। अष्टलक्ष्मी के स्वरूप एवं सम्पूर्ण साधना पद्धति को प्रस्तुत करता एक महत्वपूर्ण विवेचन

अष्ट लक्ष्मी स्वरूप : साधना

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयंकरि।
सर्वदुखहरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

"सभी बातों की ज्ञाता, सभी के प्रति वरदायक, सभी दुष्ट प्रकृति के लोगों को भय देने वाली, सभी दुखों को हर लेने वाली हे महालक्ष्मी! तुम्हें बारंबार प्रणाम है।"

लक्ष्मी की जीवन में और उपरोक्त वर्णित श्लोक के अनुसार व्यापक रूप में क्या आवश्यकता होती है, इस बात को गृहस्थ साधक से अधिक गहनता से कोई नहीं समझ सकता, और एक दीपावली ही क्यों, वह तो पूरे वर्षभर इसी दिशा में सतत् चेष्टारत रहता ही है। इसी प्रकार सतत् चेष्टारत रहता, भौतिक जीवन में अपना कर्म कुशलता पूर्वक करने के साथ-साथ साधनाओं के द्वारा भी अपने लक्ष्य की पूर्ति में गतिशील रहना ही योग्य साधक का लक्षण है। योग्य व समर्थ साधक ही सही अर्थों में 'पुरुष' कहा जा सकता है और लक्ष्मी तो सदैव से 'पुरुष' का वरण करने के लिए बाध्य होती ही रही है।

ऐसे ही साधक इस बात की भी महत्ता समझते हैं कि किस प्रकार जीवन में लक्ष्मी के एक से अधिक स्वरूपों की साधना करके ही जीवन को अनेक प्रकार से सुखी व सम्पन्न बनाने के साथ अपनी विभिन्न मनोकामनाओं की भी पूर्ति की जा सकती है। **केवल धनलक्ष्मी ही नहीं, यश लक्ष्मी, आयुलक्ष्मी, वाहन लक्ष्मी, स्थिर लक्ष्मी जैसे लक्ष्मी के स्वरूपों को अपना कर ही सही अर्थों में लक्ष्मी की साधना की जाती है।** जिस प्रकार दीपावली के बहुत पूर्व से व्यक्ति अपने निवास स्थान को साफ-सुसज्जित करना प्रारम्भ कर देता है, वह भी लक्ष्मी साधना की पूर्णता का एक प्रतीक है। जिस प्रकार लक्ष्मी के आगमन से पूर्व ही उनके स्वागत की विधिवत् तैयारी की जाती है, उसी प्रकार विभिन्न साधनाओं के माध्यम से उनकी सम्पूर्णता को भी प्राप्त करने की चेष्टा की जानी चाहिए।

जहां लक्ष्मी को सम्पूर्णता से अपने जीवन में समाहित करने की बात आती है वहां स्वतः ही अष्टलक्ष्मी साधना का नाम उभरकर सामने आ जाता है। अष्ट लक्ष्मी की साधना अपने-आप में इस प्रकार से सम्पूर्णता का पर्याय बन चुकी है कि प्रत्येक योग्य साधक अपने जीवन में कम से कम एक बार इसे पूर्ण विधि-विधान से सम्पन्न कर ही लेना चाहता है। अष्ट लक्ष्मी साधना का रहस्य केवल यहीं तक सीमित नहीं है। अष्ट लक्ष्मी अपने-आप में आठ प्रकार के ऐश्वर्यों को तो समाहित करती ही है साथ ही ये लक्ष्मी के आठ अत्यन्त प्रखर स्वरूपों – **द्विभुजालक्ष्मी, गजलक्ष्मी, महालक्ष्मी, श्री देवी, वीर लक्ष्मी, द्विभुजा वीर लक्ष्मी, अष्ट भुजा वीर लक्ष्मी** एवं **प्रसन्न लक्ष्मी** के सम्मिलित स्वरूपों की साधना भी है जिनमें से प्रत्येक स्वरूप का विशेष वरदायक प्रभाव भी है, जिस प्रकार नव दुर्गा साधना के अन्तर्गत प्रत्येक दुर्गा स्वरूप का एक प्रधान व विशिष्ट वरदायक स्वरूप होता है। आगे मैं इन्हीं स्वरूपों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत कर रहा हूं–

द्विभुजा लक्ष्मी

भगवती लक्ष्मी का यह स्वरूप अपने-आप में पूर्ण रूप से विष्णुमय स्वरूप है तथा इनका इस रूप में ध्यान करने से, इस रूप में साधना करने से जहां साधक को एक ओर पूर्ण गृहस्थ सुख, शान्ति एवं सौभाग्य प्राप्त होता है, वहीं उसे ऐसी पात्रता भी प्राप्त हो जाती है कि वह स्वयं भगवान विष्णु के समान पालनकर्ता एवं दुखहर्ता बनने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। प्रत्येक सद्‌गृहस्थ अपने सीमित स्वरूप में अपने परिवार एवं कुटुम्ब का पालन करने के रूप में भगवान विष्णु का ही तो कार्य करता है, अतः उसे भगवती लक्ष्मी के इस स्वरूप की साधना द्वारा जो शक्ति एवं विष्णुत्व प्राप्त होता है, उससे उसका व्यक्तिगत जीवन संवरने के साथ-साथ परिवार का भी हित सधता है।

गजलक्ष्मी

गजलक्ष्मी स्वरूप में भगवती लक्ष्मी श्वेत वस्त्र धारण कर कमल के आसन पर विराजमान हो एक हाथ में कमल, द्वितीय में अमृतपूर्ण कलश, तृतीय हस्त में बेल तथा चतुर्थ में शंख धारण करने वाली वर्णित की गयी है। जिनके दोनों ओर दो गजराज उनका अभिषेक कर रहे हैं। भगवती लक्ष्मी का यह दिव्य स्वरूप वास्तव में प्रचुर धन दात्री एवं आकस्मिक धन प्रदात्री देवी का ही स्वरूप है। गजलक्ष्मी स्वरूप की साधना अपने-आप में ही सम्पूर्ण साधना मानी गयी है। जिनके द्वारा साधक के जीवन में सदैव आवश्यकता से अधिक धन प्राप्त होता ही रहता है।

महालक्ष्मी

अष्टलक्ष्मी के अन्तर्गत तृतीय लक्ष्मी 'महालक्ष्मी' हैं, जिनकी प्रत्येक साधक किसी न किसी रूप में साधना, ध्यान अथवा कामना करता ही है। महालक्ष्मी का अर्थ है पूर्णता; जो विभिन्न प्रकार के सुखों एवं ऐश्वर्य से घटित होती है। गृहसुख, पत्नी सुख, पुत्र-पौत्रादि सुख वाहन सुख, अनुचर सुख, स्वास्थ्य सुख, इत्यादि पक्षों की सिद्ध सफल साधना का ही दूसरा नाम है महालक्ष्मी साधना एवं इसी कारण वश उन्हें अष्ट लक्ष्मी साधना के मध्य एक विशेष स्थान प्राप्त है।

श्रीदेवी

जैसा कि भगवती महालक्ष्मी की इस संज्ञा से ही स्पष्ट है कि ये जीवन में 'श्री' दिलाने में समर्थ देवी हैं। केवल भरण-पोषण के लिए पर्याप्त धन अर्जित कर लेने अथवा अपने परिवार का भली-भांति पालन पोषण कर लेने से ही जीवन में श्री का आगमन सम्भव नहीं होता वरन् व्यक्ति की समाज में क्या प्रतिष्ठा है, उसके पास स्थायी सम्पत्ति, स्वयं का आवास इत्यादि अचल सम्पत्ति किस अनुपात में उपस्थित है। जिसकी जीवन में प्राप्ति एवं सम्भावना को यही सुनिश्चित करने में समर्थ देवी है।

वीर लक्ष्मी

वीर लक्ष्मी का स्वरूप अपने-आप में पूर्णरूप से अभय एवं वर को प्रदान करने वाला है तथा जब भगवती लक्ष्मी द्वारा वर एवं अभय प्राप्त होने की बात आती है तो उसका सीधा सा तात्पर्य होता है कि जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव अथवा दरिद्रता रह ही नहीं सकती। एक प्रकार से जीवन के समस्त अशुभ, अंधकार, मलिनता, दैन्य एवं हीनभावना को जड़मूल से समाप्त कर देने वाली देवी वीर लक्ष्मी ही है।

द्विभुजा वीर लक्ष्मी

भवगती महालक्ष्मी का उपरोक्त स्वरूप जहां चतुर्भुजा है वहीं यह स्वरूप द्विभुजा है एवं इस स्वरूप में ये, विशेष रूप से जीवन के गृहस्थ पक्षों के प्रति वरदायक एवं अभय दायक हैं, जिससे साधक के जीवन में जहां एक ओर गृह कलह आदि का अंत होता है वहीं अनेक प्रकार से पारिवारिक उन्नति, श्री सम्पदा का आगमन, संतानों की उन्नति तथा धन-धान्य में पूर्णता की स्थिति निर्मित होने लगती है।

अष्टभुजा वीर लक्ष्मी

वस्तुतः वीर लक्ष्मी से तात्पर्य है जहां महालक्ष्मी केवल धनप्रदात्री न होकर अन्य प्रकार से शक्तिमयता द्वारा साधक के जीवन को संवारने में तत्पर हों। वीर लक्ष्मी, द्विभुजा वीर लक्ष्मी के उपरान्त अष्टभुजा वीर लक्ष्मी का भी यही तात्पर्य है। अपनी अष्ट भुजाओं में विभिन्न आभूषण धारण कर ये इस स्वरूप में साधक के जीवन में उन सभी परिस्थितियों का संहार करने में तत्पर रहती हैं, जिनसे दरिद्रता अथवा पर्याप्त आय के बाद भी अभाव जैसी स्थिति बनी रहती है। मुकदमेबाजी, रोग, व्यसन आकस्मिक व्यय जैसी समस्त स्थितियों का नाश अष्टलक्ष्मी के इसी स्वरूप द्वारा साधक के जीवन में सम्भव होता है।

प्रसन्न लक्ष्मी

जीवन में पूर्ण मानसिक सुख, कान्ति, ओज, तेज, बल, साहस, सौन्दर्य, हास्य, मनोविनोद, मित्र सुख, एवं चारों पुरुषार्थों की जननी प्रसन्न लक्ष्मी ही हैं, जो अष्टलक्ष्मियों में से शेष लक्ष्मियों द्वारा प्रदान स्थिति को पूर्णता प्रदान करने में समर्थ हैं एवं जिससे साधक अपने जीवन में धन सम्पदा का पूर्ण सुख अनुभव करते हुए एक विशेष प्रकार की तृप्ति व चैतन्यता अनुभव करता रहता है।

इस प्रकार लक्ष्मी के इन सम्मिलित अष्ट स्वरूपों की साधना का ही दूसरा नाम है अष्ट लक्ष्मी साधना, जिसके द्वारा गृहस्थ जीवन का कोई भी पक्ष अछूता नहीं रह जाता। दीपावली की रात्रि तो एक स्वयं सिद्ध मुहूर्त है ही, किन्तु शास्त्रों में पूरे कार्तिक माह को ही लक्ष्मी माह कह कर सम्बोधित किया गया है तथा दीपावली का तात्पर्य केवल कार्तिक अमावस्या ही नहीं वरन इस अमावस्या (दीपावली) के दस दिन पूर्व से लेकर दस दिन बाद तक माना गया है। दीपावली के तुरन्त बाद कमला महाविद्या दिवस का पड़ना इसी बात को सूचित करता है। इसी प्रकार अष्ट लक्ष्मी की साधना का सर्वोत्तम मुहूर्त दीपावली के पश्चात् कार्तिक शुक्ल पंचमी बताया गया है, जो इस वर्ष ८.११.९४ को घटित हो रही है। यों तो इस साधना को मन में उत्साह रहने पर किसी भी बुधवार (शुक्ल पक्ष के) को सम्पन्न किया जा सकता है।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह इस दिवस विशेष पर प्रातः सूर्योदय से पूर्व ही उठकर स्नान आदि कर अपने पूजा स्थान में पीले आसन पर शुद्ध स्वच्छ पीली धोती पहन कर पूर्व मुख होकर बैठ जाए। उसके सामने बाजोट पर पीला कपड़ा बिछा हो, **जिस पर पहले से ही प्राप्त मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त ताम्रपत्र पर अंकित अष्टलक्ष्मी यंत्र** स्थापित हो। इसी यंत्र के सामने **आठ हकीक** का भी स्थापन लक्ष्मी के आठों स्वरूपों के प्रतीक रूप में होना चाहिए। इसके अतिरिक्त साधक के पास शुद्ध व अप्रयुक्त **पीली हकीक माला** होनी भी अनिवार्य है। प्रथमतः अष्टलक्ष्मी यंत्र का पूजन केसर की आठ बिंदियां लगा कर करें तथा इसी प्रकार आठों हकीक का पूजन प्रत्येक लक्ष्मी के नाम के साथ करें (यथा ॐ द्विभुजा लक्ष्म्यै नमः, ॐ गजलक्ष्म्यै नमः आदि) तथा हकीक माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप सुस्थिर भाव से करें। यदि सम्भव हो तो घी का दीपक भी लगा लें, यद्यपि यह अनिवार्य नहीं है। वातावरण का सुगन्धित एवं स्वच्छ होना भी अनिवार्य है।

मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं ऐं श्रीं नमः

निष्कम्प भाव से जप करने पर साधक अनुभव कर सकते हैं कि कमरे में एकाएक प्रकाश की मात्रा बढ़ गयी है अथवा कोई प्रकाश पुञ्ज उसकी देह में समाहित होकर मन मस्तिष्क को शान्ति व चैतन्यता से भर देता है। ये सब साधना में सफलता के पूर्व संकेत हैं। इसके लिए आवश्यक है कि साधना एकांत में व सूर्योदय से पूर्व सम्पन्न की जाए। मंत्र जप के उपरान्त ताम्रपत्र पर अंकित यंत्र व शंख माला को विसर्जित कर दें, जबकि समस्त लघु नारियलों को किसी मंदिर में चढ़ा दें। अष्ट लक्ष्मी की साधना सम्पन्न करने के उपरान्त साधक स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि एक अनोखी शान्ति व चैतन्यता उनके जीवन में समाती चली जा रही है तथा ऐसा सम्भव होने पर उन्हें स्वतः ही उन्नति के नए-नए मार्ग सूझने प्रारम्भ हो जाते हैं अन्यथा आज के युग में व्यक्ति बाह्य व आंतरिक कारणों से इतना अधिक तनाव ग्रस्त रहता है कि कई बार सफलता उसके बहुत पास से निकल जाती है और वह उसकी सार्थकता समझने में असमर्थ रहता है। अष्टलक्ष्मी साधना से व्यक्ति जहां मानसिक रूप से सुखी व समृद्ध होता है, वहीं अवसर को पहिचानने वाला बन समाज में अपनी कांति व तेज से एक विशेष स्थान बनाने में भी सफल हो पाता है।

एक उपहार

जी हाँ. . .!
गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
"मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान"
का वार्षिक सदस्य बनने पर

भूगर्भ में गड़ा हुआ धन देखने योग
भूगर्भ सिद्धि यंत्र

वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/-
डाक खर्च सहित १६८/-

यही तो है हिन्दी जगत की वह मासिक पत्रिका जो आपको प्रदान करती है, स्वस्थ मनोरंजन के साथ- साथ अपने भारतीय ज्ञान की परम्परा. . . जिनका ठोस आधार है -- ज्ञात-अज्ञात शास्त्रों से ढूंढकर लाई गई एक से एक दुर्लभ और अचूक साधनाएं. . . जिनके द्वारा सदैव आपके जीवन में धन- सम्पदा, सुख-शांति और आनन्द की रस धारा बहती ही रहे. . . ज्योतिष, योग, आयुर्वेद, कथाएं, तंत्र-मंत्र के रहस्य, क्या कुछ नहीं, और ये सब प्रतिमाह निरंतर. . . आपको चिंतन और ज्ञान वर्धन की गिली-जुली दुनिया में ले जाती हुई. . .

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा नई दिल्ली-३४, फोन-०११-७१८२२४८
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी जोधपुर(राज.), फोन-०२९१-३२२०६

आप मात्र पांच दिनों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंच सकते हैं
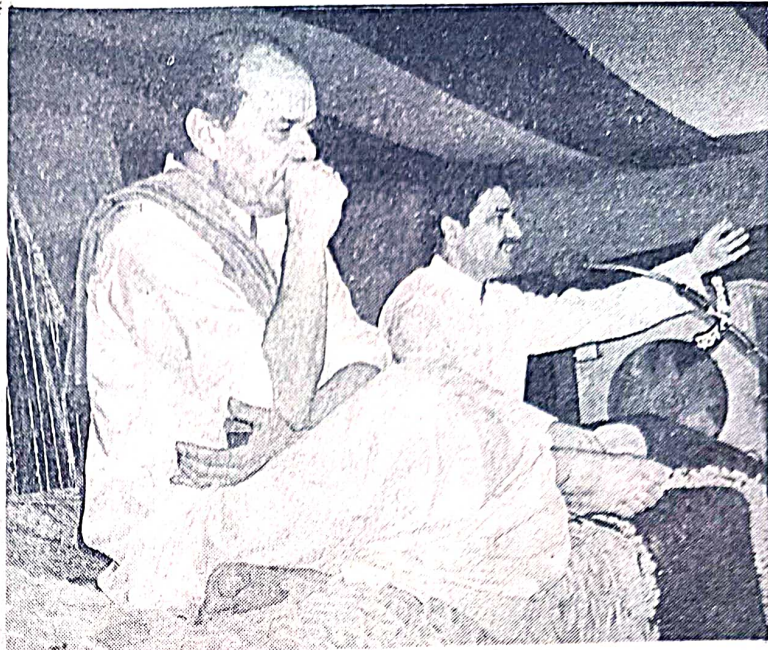
"एक ऐसी साधना, एक ऐसा प्रयोग, जो अपने- आप में अद्वितीय है, और आप इस साधना के माध्यम से उन्नति के उस शिखर पर पहुंच सकते हैं, जो आपका लक्ष्य है।"

पद्मावती प्रयोग – जो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है

जीवन का नाम ही निरन्तर आगे बढ़ना है, और समय का सही सदुपयोग करना है। काल का तात्पर्य यह है, कि समय को पहिचानना सीखें, यदि ठीक समय पर ठीक काम किया जाए, तो निश्चय ही उसका शुभ फल प्राप्त होता ही है। एक अंग्रेजी लेखक ने कहा है कि समय एक ऐसा पुरुष है, जो सिर के पीछे आधे भाग में गंजा है, और आगे आधे भाग में लम्बे-लम्बे बाल हैं, यदि समय आते ही हम उसे पकड़ लेते- हैं, तो वह पूरी तरह से वश में हो जाता है, परन्तु वह समय यदि पास में से होकर निकल जाता है, तो फिर उसे पकड़ना सम्भव नहीं होता।

साधना से ही जीवन में जगमगाहट

यदि सही रूप में देखा जाए तो हमारा अब तक का बीता हुआ जीवन परेशानियों, बाधाओं, अड़चनों और कठिनाइयों से भरा हुआ है, हमें जीवन में जो कुछ सुख मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया, हम जीवन में जो कुछ आनन्द लेना चाहते थे, वह नहीं ले पाए, और हम पद के लिए, धन के लिए और प्रभुता के लिए बराबर परेशान होते रहे, झगड़ते रहे, जरूरत से ज्यादा परिश्रम करते रहे, परन्तु हमें जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिए था, वह नहीं हो पाया।

इसका कारण यह है कि व्यक्ति उन्नति तभी कर सकता है, जब उसके पास दैवी शक्ति हो, दैवी शक्ति की सहायता से ही व्यक्ति अपने जीवन में पूर्ण उन्नति एवं सफलता प्राप्त कर सकता है। महाभारत काल में भी जब अर्जुन को युद्ध में विजय प्राप्त करने की इच्छा हुई, तो भगवान श्रीकृष्ण ने उसे यही सलाह दी कि,

बिना दिव्य अस्त्रों के युद्ध में विजय प्राप्त करना असम्भव है, इसलिए यह जरूरी है कि पहले तुम शिव और इन्द्र की आराधना करो, उनसे दैविक अस्त्र प्राप्त करो, और ऐसा होने पर ही तुम जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हो।

हम जीवन के इस युद्ध में लड़ तो रहे हैं, परन्तु जिस प्रकार से विजय प्राप्त होनी चाहिए, उस प्रकार से विजय या सफलता नहीं मिल रही है, क्योंकि **यह जीवन का युद्ध केवल हम अपने बाहुबल से ही लड़ रहे हैं, जबकि हमारे पास दैवी शक्ति होनी चाहिए, यदि हम दैवी शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं, तो निश्चय ही जीवन में सफलता पा जाना ज्यादा सरल, ज्यादा अनुकूल और ज्यादा सुविधाजनक हो जाता है,** और ऐसा करने पर ही सम्पूर्ण जीवन में जगमगाहट प्राप्त हो सकती है।

साधना तो कोई भी कर सकता है

विविध शास्त्रों में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि साधक के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह संस्कृत का भली प्रकार से उच्चारण करना जानता हो, लम्बे-चौड़े विधि-विधान या पूजा-पाठ की भी आवश्यकता नहीं है।

साधना की पूर्ण सफलता के लिए तो यह जरूरी है, कि साधक मन में यह दृढ़ निश्चय कर ले, कि मुझे अपने जीवन को संवारना है, मुझे अपने जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करनी है, और मैं समाज में तथा देश में उन्नति के शिखर पर पहुंच कर पूर्णता प्राप्त करके ही रहूंगा।

इसके साथ ही साथ जिस प्रकार से प्रयोग या विधि बताई गई है, उस प्रकार से यदि वह प्रयोग सम्पन्न करता है, तो निश्चय ही उसे अनुकूलता प्राप्त होती है, निश्चय ही उसे जीवन में सिद्धि प्राप्त होती है, और वह इस प्रकार के जीवन के दुःख, दैन्य, बाधाएं और परेशानियों को दूर करने में सफल हो पाता है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य होता है, जो उसके जीवन का उद्देश्य होता है।

सर्वोन्नति सिद्धि पद्मावती साधना

पद्मावती साधना को कलिकाल कल्पतरु साधना कहा गया है, जैन आचार्यों ने इसे स्वार्थ सिद्धिदायिनी साधना कहा, क्योंकि इस साधना के द्वारा अष्टलक्ष्मी सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

पद्मावती साधना के द्वारा जीवन के विघ्नों का नाश होता है, और इसकी तीन विशेष शक्तियां (१) भ्रंगी (२) काली (३) कराली, साधक को हर कष्ट से ऊपर उठाती हैं, और वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर आगे बढ़ता ही रहता है।

इस साधना द्वारा साधक के भीतर व्याप्त एक भय दूर हो जाता है, और इसके ब्रह्माणी स्वरूप द्वारा साधक यदि शत्रुओं के समूह में जाए तो वे भी मित्रवत् हो जाते हैं। जीवन में रोग, शोक एवं दरिद्रता उन्नति के मार्ग में सबसे बड़े बाधक कहे जाते हैं, और केवल पद्मावती साधना ही ऐसी साधना है, जिसमें लक्ष्मी का स्वरूप भी है और दोष निवारण लीला व्याप्त स्वरूप भी है।

साधना रहस्य

इस साधना में कुछ विशेष बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

१. यह साधना प्रति माह पांच दिवस सम्पन्न करनी है।
२. इन पांच दिनों के दौरान साधक केवल फलाहार, दूध इत्यादि ग्रहण करें।
३. साधना रात्रि के समय सम्पन्न करनी है।
४. साधना एक बार प्रारम्भ करने के पश्चात् उसे बीच में अधूरा नहीं छोड़ना है।
५. पूरे साधना काल के दौरान दीपक निरन्तर जलता रहना चाहिए।
६. यह साधना किसी भी बुधवार को प्रारम्भ की जा सकती है।
७. साधना काल के दौरान ब्रह्मचर्य का पालन करें।

पद्मावती यंत्र

इस साधना में सबसे आवश्यक यह है कि यंत्र जैन पद्धति द्वारा विशेष रूप से कूट मंत्रोद्धार पूर्वक कार्य परत्व पुरश्चरण विधान द्वारा सिद्ध किया हुआ होना चाहिए, इसके साथ ही भगवती पद्मावती का सिद्धि चित्र भी अपने सामने स्थापित करें।

इस साधना में **रुद्राक्ष माला** अथवा **मूंगा माला** का प्रयोग किया जा सकता है।

साधना विधान

बुधवार के दिन रात्रि को साधक स्नान कर पीली धोती पहिन कर, ऊनी आसन बिछा कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर अपने सामने **यंत्र व चित्र** स्थापित करें, और क्रमानुसार पूजा करने हेतु यंत्र के सामने एक छोटा तांबे का पात्र अवश्य रखें।

सर्वप्रथम पद्मावती देवी का ध्यान करते हुए यंत्र पर जल अर्पित करें, इसके पश्चात् मौली और फिर अबीर, गुलाल, केसर, इत्र इत्यादि देवी को अर्पित करें तथा दीपक जला लें, पूजा स्थान में वातावरण पूरी तरह से सुगन्धित होना चाहिए।

इसके पश्चात् अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर अंजली बनाते हुए पुष्प अर्पित करें, तत्पश्चात् सर्व सिद्धिदायिनी, सर्वोन्नति प्रदायिनी भगवती पद्मावती का ध्यान करते हुए अक्षत, और पुष्प माला चढ़ावें, पूजा स्थान में धूप और दीप देवी के सामने एक ओर स्थापित कर दें। तत्पश्चात् फल, नैवेद्य समर्पित करें तथा निम्नलिखित मंत्र से प्रार्थना करें——

(शेष पृष्ठ २४ पर)

ये यंत्र स्वयं सिद्धि प्रदाता हैं जिनके लिए किसी मंत्र या प्रयोग की आवश्यकता नहीं

"यंत्रों के विशाल संग्रह में से चुनकर हमने यहां कुछ एक यंत्रों का ही वर्णन प्रस्तुत किया है, जिनकी स्थापना मात्र से ही साधक के जीवन में उन्नति और समृद्धि आती है। साधक जहां उच्चकोटि की साधना सम्पन्न कर श्री समृद्धि से परिपूर्ण हो या उच्च कोटि के यंत्रों को अपने पूजा स्थान पर स्थापित कर . . . ."

साधना की त्रिवेणी में जिस नदी का महत्व सर्वाधिक है वही गुप्त भी रहती है। मंत्र, तंत्र एवं यंत्र में मंत्र यदि गंगा है, तंत्र यदि यमुना तो यंत्र विद्या ही वह गुप्त सरस्वती है, जिसके द्वारा यह त्रिवेणी न केवल पूर्ण होती है वरन् पावन भी होती है। यंत्र विद्या अपने-आप में अत्यंत उच्चकोटि की विद्या है। प्राचीन काल में जब कोई योग्य शिष्य मंत्र शास्त्र, तंत्र विद्या, कर्मकांड, वेदज्ञान इत्यादि में पूर्ण पारंगत हो जाता था तभी उसे यंत्र विद्या का अधिकारी समझा जाता था, क्योंकि तभी वह ऐसी पात्रता प्राप्त कर पाता था कि किसी ताम्रपत्र या रजत पत्र के टुकड़े को साक्षात् किसी देवी या देवता का प्रतिरूप बना सके।

प्रतीक रूप में त्रिभुजों, अंकों, चतुर्भुजों, वृत्त आदि के द्वारा किसी देवता के स्वरूप का अंकन एवं शक्तियों को स्थापित कर उनका चैतन्यीकरण सहज कार्य नहीं होता। किसी भी यंत्र में किसी देवता का बल स्थापित करने के लिए, प्राण-प्रतिष्ठा हेतु जटिल कर्मकांड के साथ-साथ असीम प्राणबल की भी आवश्यकता रहती ही है।

शास्त्रों में यंत्रों के अंकन की विविध विधियां मिलती हैं, कहीं भोजपत्र पर कोई यंत्र किसी विशिष्ट वनस्पति के तने की कलम बना कर, किसी विशेष पौधे के रस द्वारा अंकित करने का निर्देश मिलता है, तो कहीं किसी विशेष मंत्र का जप निश्चित संख्या में करने पर यंत्र प्रतिष्ठा पूर्ण होती है। कहीं किसी विशेष पुष्प के एक लाख होने पर ही यंत्र का पूजन प्रामाणिक होता है, तो कहीं किसी स्थान विशेष पर, किसी तीर्थ स्थान या विशिष्ट नदी के तट पर ही यंत्र की रचना की जा सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि **यंत्रों का अंकन अपने-आप में कर्मकांड एवं शास्त्रीयता की एक जटिल प्रक्रिया है।** केवल कुछ आकृतियों को ज्यों का त्यों उतार लेना ही यंत्र नहीं होता वरन् देश काल एवं अन्यान्य बातों का ध्यान रखकर ही यंत्र का उत्कीर्णन सम्भव हो पाता है।

दीपावली का पर्व जहां साधनात्मक दृष्टि से एक विशिष्ट मुहूर्त है, वहीं यंत्र विद्या के ग्रंथों में इस दिवस के उपयोग के विविध स्वरूप वर्णित किए गए हैं। यंत्रों की प्राण-प्रतिष्ठा की बात हो अथवा प्राण-प्रतिष्ठित यंत्रों को अपने गृह, व्यापार स्थल में स्थापन की, दीपावली की रात्रि एक स्वयं सिद्ध मुहूर्त के रूप में वर्णित की गयी है, अर्थात् दीपावली की सम्पूर्ण रात्रि ही इस प्रकार से चैतन्य होती है जिसके लिए पञ्चांग देखने की कोई आवश्यकता नहीं। इस दिवस पर सूर्यास्त से लेकर अगले दिन सूर्योदय तक का उपयोग साधक अपनी क्षमता एवं कुशलता द्वारा जितना अधिक से.अधिक कर सके वही उसका सौभाग्य होता है, क्येंकि यह महारात्रि होती है।

इस चैतन्य पर्व हेतु यंत्र शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि साधक जहां उच्चकोटि की साधनाओं द्वारा अपने जीवन को श्री समृद्धि से परिपूर्ण करे, वहीं कुछ विशिष्ट व उच्चकोटि के यंत्रों को भी अपने पूजा स्थान में स्थापित करें। दीपावली की रात्रि लक्ष्मी साधनाओं के लिए तो चिर-प्रतीक्षित अवसर होती ही है, साथ ही ऐसी समस्त साधनाओं को भी सम्पन्न करने का पर्व होती है जिनके द्वारा सुरक्षात्मक उपाय सुनिश्चित किए जा सकें, क्योंकि लक्ष्मी की सुरक्षा करना, उसे विभिन्न उपायों द्वारा आबद्ध करना भी लक्ष्मी साधना ही है तथा जहां लक्ष्मी के आबद्धीकरण की बात आती है वहां यंत्रों से अधिक श्रेष्ठ उपाय कोई हो ही नहीं सकता, क्योंकि इस प्रकार से फिर साधक को नित्य साधना करने की बाध्यता नहीं रह जाती है। दूसरे, यंत्र के माध्यम से ही लक्ष्मी पीढ़ियों तक के लिए चिरस्थायी होने को बाध्य हो जाती है।

आगे मैं उन यंत्रों का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं जिनकी स्थापना दीपावली की रात्रि में करना शास्त्र सम्मत है। साधक को चाहिए कि वह इन यंत्रों में से एक से अधिक यंत्र अपने घर या व्यापार स्थल में अवश्य ही स्थापित करे।

कनकधारा यंत्र

भगवती लक्ष्मी का सर्वाधिक वरदायक एवं फलप्रद स्वरूप कनकधारा लक्ष्मी की गृह में स्थापना करना प्रत्येक गृहस्थ साधक के जीवन का सौभाग्य होता है। यह भगवती लक्ष्मी का वही स्वरूप है, जिसके माध्यम से भगवतपाद शंकराचार्य ने एक गरीब वृद्धा के घर में निरन्तर दो घड़ी तक स्वर्ण वर्षा सम्भव करायी थी। कुछ ग्रंथों में इन्हें ही "कनक वर्षिणी" के नाम से भी सम्बोधित किया गया है। यह यंत्र अपने-आप में पूर्ण सुख-सौभाग्य का प्रतीक ही है।

अखण्ड सौभाग्यवती यंत्र

प्रत्येक विवाहिता स्त्री की यह कामना होती है कि वह अपने जीवन में अखण्ड सौभाग्य का सुख देखे, यही हमारी भारतीय परम्परा है और स्त्री को इसी कारणवश गृह लक्ष्मी की संज्ञा से विभूषित किया गया है। दीपावली की रात्रि इसी मनोकामना को पूर्ण करने के लिए एक अनुकूल पर्व है, जबकि इस यंत्र को धारण करने के साथ स्त्री अपने सौभाग्य को तो सुरिक्षत करती ही है, साथ ही अपने पति के जींवन को भी उन्नति की ओर ले जाने के लिए इसी यंत्र के माध्यम से सहयोगिनी सिद्ध होती है।

पुत्रदा यंत्र

लक्ष्मी की, धन-सम्पत्ति की तभी उपयोगिता है जब उसका लाभ प्राप्त करने के लिए घर में सुयोग्य संतान हो, तथा जिसके माध्यम से मृत्योपरान्त सद्‌गति मिल सके। पुत्र-पौत्र भी लक्ष्मी के ही स्वरूप हैं एवं जीवन की इस मौलिक आवश्यकता की पूर्ति में यह यंत्र चमत्कारिक रूप से सहायक है।

आरोग्य यंत्र

सुखी, निश्चिंत एवं बाधा रहित पूर्ण आयु कम ही सौभाग्यशालियों को प्राप्त हो पाती है, किन्तु आरोग्य यंत्र के माध्यम से नित्य उसका अभिषेक कर, जल को ग्रहण करने वाले के साथ ऐसा ही सम्भव होता है, यह शास्त्र प्रमाण है। जहां किसी विशेष बाधा से पीड़ित हों वहां तो इस यंत्र का दीपावली की रात्रि में स्थापन नितांत आवश्यक हो जाता है।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र

जीवन की समस्त आवश्यकताएं प्रत्येक माह मिलने वाली बंधी-बधायी धनराशि या आय से ही नहीं पूर्ण हो सकती, इसके लिए आवश्यक है कि जो अतिरिक्त धन प्राप्त हो वह अपने स्वरूप में दूषित न हो। इन्हीं सब बातों की पूर्ति सम्भव होती है आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से जिसके माध्यम से साधक के जीवन में शेयर आदि विभिन्न उपायों द्वारा आकस्मिक धन-प्राप्ति सम्भव हो जाती है।

राजकीय विजय प्राप्ति यंत्र

बार-बार मुकदमेबाजी के झंझटों में उलझने पर अथवा वर्तमान में किसी शत्रु द्वारा उलझा दिए जाने पर, इस यंत्र का दीपावली की रात्रि में स्थापना करना तथा प्रत्येक पेशी के पहले इसका दर्शन करके जाना पूर्ण विजय प्रदाता कहा गया है, साथ ही मुकदमेबाजी में जो अनावश्यक व्यय होता है उसका भी समाधान होता है। यों भी इस यंत्र की सामान्य रूप से स्थापना भी राज्यपक्ष से सुख सम्मान दिलाने में सहायक होती है।

शत्रुपरास्त यंत्र

दीपावली की रात्रि महाकाल रात्रि होने के कारण भगवान भैरव का भी प्रत्यक्ष दिवस है एवं इस दिवस विशेष पर की गई समस्त उग्र व तीक्ष्ण साधनाएं सामान्य से कहीं अधिक तीव्रता से सिद्ध होती ही हैं। बावन भैरवों के मंत्र से सिद्ध शत्रु परास्त यंत्र स्थापित करना भी इसी श्रेणी की अपने-आप में एक उच्चकोटि की साधना है, जिससे साधक वर्तमान और भावी समस्त प्रकार के शत्रु संकटों से सर्वथा निर्द्वन्द्व हो सके।

व्यापार वृद्धि यंत्र

दीपावली की रात्रि में वास्तव में व्यवसायी बंधुओं के लिए नववर्ष के आगमन की ही रात्रि है। इस नववर्ष का पूजन जहां लक्ष्मी, गणेश पूजन द्वारा परम्परागत ढंग से करते हैं, वहीं साधनात्मक रूप से भी कर क्यों न इसमें अतिरिक्त वृद्धि करें। और यही प्रभाव प्राप्त होता है अपने व्यापार स्थल पर व्यापार वृद्धि यंत्र स्थापित करने से जिसकी प्राण-प्रतिष्ठा ज्येष्ठा लक्ष्मी, चतुरा लक्ष्मी एवं कनकधारा के संयुक्त मंत्रों से की गयी होती है।

बीजालंकृत लक्ष्मी यंत्र

चार बीज मंत्रों को अपने-आप में समाहित करता, उन्हें विशिष्ट पद्धति से एक निश्चित काल में उत्कीर्ण करने के बाद यह यंत्र सही अर्थों में प्रत्येक गृहस्थ के घर में स्थापित होने योग्य बन जाता है, जिससे उसे जीवन के चारों पुरुषार्थ लक्ष्मीमयता के साथ प्राप्त हो सके, तथा वह जीवन के सभी सुखों का उपभोग करता हुआ मोक्ष को प्राप्त कर सके।

यंत्रों के विशाल संग्रह में से चुनकर हमने यहां कुछ एक यंत्रों का ही वर्णन प्रस्तुत किया है, जिनकी स्थापना मात्र से ही साधक के जीवन में उन्नति और समृद्धि आ सके। **यंत्र जहां साधनाओं में सहायक उपकरण होते हैं, वहीं विशेष पद्धति से उत्कीर्ण किए गए यंत्र अपने-आप में सम्पूर्णता के प्रतीक भी होते हैं।** उपरोक्त यंत्र इसी श्रेणी के यंत्र हैं, जिनके स्थापन के पश्चात् साधक को किसी अन्य साधना की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती है।

◆

जैन ग्रंथों में गोपनीय लक्ष्मी प्रयोग

जैन साधना पद्धति अपने-आप में किस प्रकार से एक सम्पूर्ण साधना पद्धति है और जीवन के विविध पक्षों व विभिन्न समस्याओं के निदान का उपाय प्रस्तुत करती है, इसका परिचय पिछले अंक में ''जैन तंत्रः सम्पूर्ण तंत्र'' शीर्षक के अन्तर्गत दिया था।

प्रस्तुत है, इसी सबल व सक्षम पद्धति के एक विशिष्ट पक्ष अर्थात् लक्ष्मी साधनाओं से सम्बन्धित पक्ष का वर्णन, ऐसे गोपनीय प्रयोग जिनका वर्णन सम्भवतः जैन मत के अनुयायियों को भी न ज्ञात हो. . .

पिछले अंक में जब हमने यह विवरण दिया कि जैन सम्प्रदाय भी अपनी आर्थिक उन्नति के लिए साधनाओं का सहारा लेते हैं, उनके सम्प्रदाय में एक से एक उच्चकोटि की साधनाएं हैं, तभी से पाठकों का आग्रह था कि हम उन्हें दीपावली के अवसर पर इस पक्ष से सम्बन्धित विशेष साधनात्मक सामग्री उपलब्ध कराएं।

पूज्यपाद गुरुदेव के साधनात्मक जीवन का एक बहुत बड़ा भाग आबू पर्वत में व्यतीत हुआ है और आज भी उनका स्नेह व लगाव इस क्षेत्र से जिस प्रकार से बना हुआ है उसका प्रमाण है कि उनके कुछ अत्यंत उच्चकोटि के संन्यासी शिष्य इसी क्षेत्र में रहकर साधनारत हैं। पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने संन्यस्त जीवन में जिस साधनात्मक साहित्य एवं साधनात्मक विधियों का विशाल संग्रह किया था, कालान्तर में उन्हीं की प्रामाणिकता को स्वयं प्रयोग कर अनुकूल पाया, और बाद में अत्यधिक व्यस्त हो जाने पर अपने इन्हीं शिष्यों के माध्यम से कसौटी पर कसा। यह केवल कसौटी पर कसने की ही क्रिया नहीं थी वरन् शोध की प्रक्रिया भी थी, क्योंकि प्राचीन साधनात्मक ग्रंथों में अनेक साधनात्मक सामग्रियों के नाम या तो उस युग की भाषा में लिखे गए हैं अथवा गोपनीय ढंग से इस प्रकार अस्पष्ट लिखे गए हैं, जिसका बोध नहीं हो पाता। साथ ही जैन साधकों ने अपने ग्रंथों में अनेक स्थानों पर प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का उल्लेख किया है, जिनके द्वारा साधना कई गुना अधिक तीव्र हो जाती है किन्तु वर्तमान में उन जड़ी-बूटियों का अस्तित्व ही समाप्त हो जाने के कारण यह भी चिन्तन किया गया कि इसके प्रतिस्थापन के रूप में क्या साधनात्मक सामग्री उपयोग में लाई जानी चाहिए।

ऐसी ही अनेक व्यवहारिक और शास्त्रीय बाधाओं से जूझने के बाद उन संन्यासी शिष्यों ने जो हल प्राप्त किए, वे अपने-आप में हतप्रभ कर देने वाले थे। इनमें से एक संन्यासी शिष्य स्वामी निजानंद जी ने तो और आगे बढ़कर पहले वह गुह्य साधना सिद्ध की; जिसके माध्यम से किसी भी देह का त्याग कर चुके ऋषि या उच्चकोटि के साधक की आत्मा का आह्वान कर उनसे शास्त्र-चर्चा की जा सकती है, और इस पद्धति के द्वारा उन्होंने कई ऐसे रहस्य सुलझाए जिनके विषय में अन्यथा हताशा ही हाथ लग रही थी।

जिस प्रकार जैन साधक व श्रमण सदैव से उदार रहे और उन्होंने कहीं कोई भेद नहीं रहने दिया, उसी परम्परा का सम्मान करते हुए हम कई ऐसे ही दुर्लभ प्रयोगों को पत्रिका के इन पन्नों के माध्यम से स्पष्ट कर रहे हैं। यद्यपि इतना उच्चकोटि का ज्ञान एवं ऐसे दुर्लभ रहस्य केवल गुरु-परम्परा के माध्यम से ही ज्ञात किए जा सकते हैं।

यों तो जैन सम्प्रदाय में आर्थिक उन्नति एवं वैभव, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अनेकों उपाय उन्हें परम्परा से मिलते आए हैं। कई प्रयोग तो केवल परिवार विशेष की ही सम्पदा हैं, किन्तु हमारा यह विनम्रता पूर्वक निवदेन है कि इन प्रयोगों का ज्ञान तो जैन

साधकों को भी कदाचित नहीं ही होगा, क्योंकि ये प्रयोग अपनी गूढ़ता एवं उच्चता के कारण कभी स्पष्ट ही नहीं हो सके थे। यद्यपि जैन वर्ग की आर्थिक सफलता एवं उनकी 'श्री' के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं, किन्तु ये प्रयोग उस से भी उच्चकोटि का वैभव एवं 'श्री' प्रदान करने में समर्थ हैं, ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति भी नहीं।

१. दरिद्रतानाशक लक्ष्मी प्रयोग

किसी साधनात्मक पद्धति या तंत्र की शैली को लें, उसमें दरिद्रता के विनाश से सम्बन्धित प्रयोग अवश्य होता है क्योंकि जब तक दरिद्रता का विनाश नहीं होगा तब तक किसी उच्चकोटि के प्रयोग की कोई महत्ता भी नहीं है। जैन तंत्र में दरिद्रता-नाश के लिए चन्द्रवर्णा की साधना को प्रमुखता दी गई है। जिस प्रकार पूर्णिमा का चन्द्र उदित होकर अंधकार का नाश कर देता है, उसी प्रकार चन्द्रवर्णा की साधना से दरिद्रता का अंधकार छंटता है।

दीपावली की रात्रि में चन्द्रवर्णा से सम्बन्धित एक लघु साधना सम्पन्न करने से साधक को अपने जीवन के दुःख, दरिद्रता-नाश में आशातीत लाभ मिलता है। साधक को चाहिए कि वह इसी रात्रि को अपने समक्ष दरिद्रतानाशक मंत्रों से सिद्ध **चन्द्रवर्णा यंत्र** रख, श्वेत वस्त्र धारण कर, श्वेत आसन पर पूर्वाभिमुख बैठे तथा निम्न मंत्र का धैर्य पूर्वक केवल इक्यावन बार उच्चारण करते हुए प्रत्येक उच्चारण के साथ **एक लक्ष्मी चक्र** यंत्र पर चढ़ाते जाए—

मंत्र

।। चंद्रे चंद्ररूपे चंद्रवर्णे चन्द्रलेश्ये चन्द्रोत्तमे चन्द्रशेखरे यथा शशि शिशिर किरणैः संताप हरित तयैव मम मत्परिवारस्य च दुःख दारिद्र्यं संतापं हर हर स्वाहा। यंत्रे यंत्ररूपे मंत्रे मंत्ररूपे तंत्रे तंत्ररूपे सर्वं मम वश्यं कुरु कुरु कर्षे कर्षवति हर्षे हर्षवति मम शरीरे मम गृहे मम कुटुम्बे अचिन्त्य हर्षं कुरु कुरु चिन्तितं सर्व सुखं शीघ्रं मह्यं देहि देहि।।

यह अत्यंत उच्चकोटि की साधना है, और साधक को चाहिए कि इस साधना को अत्यंत धैर्य व विश्वास के साथ करे। कई साधनात्मक ग्रंथों में तो एकमात्र इसी साधना को दीपावली की सम्पूर्ण साधना कहा गया है। इस साधना को दीपावली के अतिरिक्त भी किसी माह की अमावस्या से प्रारम्भ किया जा सकता है किन्तु तब एक दिवसीय प्रयोग के स्थान पर ग्यारह दिवसीय अनुष्ठान का विधान है एवं लक्ष्मी चक्रों द्वारा पूजन करने के स्थान पर प्रतिदिन मणिमुक्ता माला से एक माला उपरोक्त मंत्र की जप करनी होती है।

२. महालक्ष्मी प्रयोग

जैन तंत्र में यद्यपि धन की अधिष्ठात्री देवी के रूप में पद्मावती की ही साधना का वर्चस्व है, किन्तु जैन साधक भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप से भी अपरिचित रहे हों, ऐसी बात नहीं। प्रस्तुत महालक्ष्मी साधना इसी का प्रमाण है। वस्तुतः महालक्ष्मी की साधना सम्पन्न किए बिना जीवन में लक्ष्मी की समस्त नौ कलाओं का आगमन हो ही नहीं सकता। नौ कलाएं ही तो लक्ष्मी के स्थायित्व का आधार होती हैं। इसी कारणवश सजग साधक दीपावली की रात्रि में कोई अन्य साधना सम्पन्न करें अथवा न करें, महालक्ष्मी साधना अवश्य सम्पन्न कर लेते हैं। यह सत्यता भी है कि यदि साधक को महालक्ष्मी से सम्बन्धित साधना की प्रामाणिक विधि प्राप्त हो जाए, तो उसे कोई अन्य साधना करने की आवश्यकता भी नहीं। प्रस्तुत साधना इसी श्रेणी की साधना कही गई है। साधक को चाहिए कि वह दीपावली की रात्रि में सामान्य पूजन आदि सम्पन्न करने के उपरांत एकांत के कक्ष में पश्चिम की ओर पीले वस्त्र पर **लघु कुबेर यंत्र** एवं **महालक्ष्मी यंत्र** को स्थापित करे, साधक के बांए हाथ की ओर कुबेर यंत्र व दांए हाथ की ओर महालक्ष्मी यंत्र की स्थापना हो। पूजन की जो संक्षिप्त विधि आती हो, उसके द्वारा दोनों यंत्रों का पूजन करे एवं दोनों यंत्रों के समक्ष पृथक-पृथक अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक प्रज्ज्वलित कर **कमलगट्टे की माला** से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करे।

महालक्ष्मी मंत्र

।।ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीदेवी आगच्छ आगच्छ मम गृहे मम निवास स्थाने धनधारां वर्षय वर्षय सर्व मनोवांछित पूरय पूरय, क्षणमीक्षणैः मम सर्व क्षणं सुखमयं कुरु कुरु।।

मंत्र-जप के उपरांत दोनों यंत्रों का पुनः संक्षिप्त पूजन करे एवं जिस कमलगट्टे की माला से मंत्र-जप किया है उसके एक-एक मनके को शुद्ध घी के साथ वहीं बैठे-बैठे उपरोक्त मंत्र से हवन की अग्नि में भेंट कर दे। इस हेतु हवन की आवश्यक तैयारी पहले से ही करके बैठें।

धन, सम्पत्ति, सुख, ऐश्वर्य, श्रीवृद्धि, सामाजिक मान-सम्मान, यश, पद-प्रतिष्ठा, वाहन, गृह, नौकर आदि सुख, कुटुम्ब का हितवर्धन जैसी विविध कामनाओं के लिए सभी जैन साधकों ने एकमत से इसी साधना को श्रेष्ठतम कहा है।

३. सौभाग्य लक्ष्मी प्रयोग

जैन तंत्र में प्रयुक्त मंत्र यद्यपि कुछ जटिल होते हैं किन्तु यदि साधक धैर्य पूर्वक शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण कर लेता है, तो सफलता प्राप्ति में कोई संदेह रह ही नहीं जाता। जैन साधनाओं का एक गोपनीय रहस्य यह भी है कि प्रत्येक साधना अपने ढंग

से सम्पूर्ण है, अतः साधक जब भी किसी साधना को अपने हाथ में ले, तो पूर्ण तन्मयता की भावना से ही ले और उसे निश्चिंतता पूर्वक सम्पन्न करे। प्रस्तुत साधना भी इसी प्रकार की एक श्रेष्ठतम साधना है और भाग्योदय की तो सफल साधना है ही। यद्यपि भारतीय पंचांग में भाग्योदय से सम्बन्धित दिवस निर्धारित किए गए हैं किन्तु दीपावली से अधिक तीव्र मुहूर्त कोई अन्य हो ही नहीं सकता। जिस प्रकार व्यक्ति के जीवन में दरिद्रता-नाश की साधना किए बिना आगे का मार्ग स्पष्ट नहीं होता, उसी प्रकार भाग्योदय की साधना के बिना भी अन्य साधनाओं का कोई विशेष अर्थ नहीं। हमने पहले भी स्पष्ट किया था कि भाग्योदय का तात्पर्य केवल युवावस्था में नौकरी मिल जाने और विवाह हो जाने तक ही सीमित नहीं वरन् भाग्योदय की क्रिया तो व्यक्ति की वृद्धावस्था तक चलने वाली क्रिया है।

जैन साहित्य में भाग्योदय से सम्बन्धित एक प्रयोग मिलता है, और अन्य प्रयोगों की ही भांति यह प्रयोग भी कसौटी पर खरा उतरा है। साधक को चाहिए कि वह **छत्तीस सौभाग्य चक्र** लेकर प्रत्येक चक्र पर निम्न मंत्र का केवल एक बार उच्चारण करे और उस चक्र को सम्भाल कर रख ले। जीवन में छत्तीस प्रकार की स्थितियां मानी गई हैं, जिनके एकत्रित होने से व्यक्ति को पूर्ण सौभाग्यशाली कहा जाता है, इनमें धन-सुख, पत्नी-सुख, पुत्र-सुख, स्थायी धन-सम्पत्ति, पूर्ण निरोगी काया इत्यादि स्थितियां आती हैं।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं विश्वरूपिणी, विभूति विभूतिरूपिणी, सृष्टि सृष्टिरूपिणी, धृति धृतिरूपिणी, कीर्ति कीर्तिरूपिणी, सिद्धि सिद्धिरूपिणी, सर्वसुख, साम्राज्यदायिनी मम त्रिलोक संपदं कुरु कुरु हिरणसुवर्णैः सुख सिद्धि सौभाग्यैः श्रेष्ठैः सर्वोपकरणैः सर्वभोगैः सर्वोपभोगेश्वर्यं मम कोषकोष्टागारिणी भर भर पूरय पूरय नमः।

४. अटूट धन सम्पत्ति प्रदायक यक्षिणी प्रयोग

कुछ साधकों को पूर्व जन्मकृत संस्कार एवं यक्षिणी साधना की अन्य विशेषताओं के कारण यक्षिणी साधना के प्रति सहज आकर्षण रहता है। दीपावली की रात्रि जहां यक्षिणी साधना का सर्वोच्च मुहूर्त है वहीं यक्षिणी साधना के माध्यम से अटूट धन-सम्पत्ति प्राप्त करने का भी। जैन तंत्र में यक्षिणी साधनाओं को न केवल ग्रहण किया गया है वरन् उन्हें एक पृथक खण्ड में वर्णित कर उनकी महत्ता को भी स्वीकार किया गया है। जैन तंत्र के अन्तर्गत यद्यपि यक्षिणी को सिद्ध कर सुख भोग के उल्लेख भी मिलते हैं किन्तु मूल चिंतन यही है कि किस प्रकार अनेक उच्चकोटि की योनियों में से एक- 'यक्ष' योनि वर्ग की स्त्री अर्थात् यक्षिणी के द्वारा अपने जीवन को सुखी, सौभाग्यमय बनाया जाए? यह यक्षिणी साधना की ही विशेषता होती है कि साधक को इसके माध्यम से अटूट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती रहती है। इसका कारण मात्र इतना ही है कि यक्षिणी साधक की इच्छानुसार प्रत्येक रात्रि या उसके आह्वान पर उपस्थित होती है तथा प्रत्येक बार के आगमन में अपने साधक को स्वर्णाभूषण आदि का उपहार भी दे ही जाती है। अनेक यक्षिणी साधनाओं में से जिस यक्षिणी साधना को जैन साधकों ने निर्विवाद रूप से प्रथम बार में ही सिद्ध होने वाली एवं सदैव अनुकूल बनी रहने वाली माना है, वह है "शतपत्रिका यक्षिणी"। दीपावली की रात्रि में इसी यक्षिणी को प्रत्यक्ष करने व जीवन भर के लिए सिद्ध करने हेतु जैन साहित्य में एक गोपनीय प्रयोग मिलता है। इसके अनुसार साधक को चाहिए कि वह दीपावली की रात्रि में दस बजे के पश्चात् सर्वथा एकांत में साधनारत हो। इसमें आसन, वस्त्र दिशा आदि का कोई बंधन नहीं है, केवल साधक के पास पहले से ही एक सौ आठ गुलाब के अथवा किसी तीव्र सुगंध के पुष्प अवश्य हों। दीपक, अगरबत्ती आदि की भी इस साधना में कोई विशेष आवश्यकता नहीं है, इन पुष्पों के माध्यम से ही सम्पूर्ण साधना सम्पन्न हो जाती है। साधक को चाहिए कि वह एक पुष्प ले और निम्नलिखित मंत्र पढ़कर उसे अपने सामने रखे यक्षिणी यंत्र पर चढ़ा दे। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को अत्यंत विश्वास व निश्चिंतता से करे।

मंत्र

।।शतपत्रिके ह्रां ह्रीं ध्वीं स्वाहा।।

उपरोक्त चरण पूर्ण हो जाने के पश्चात् इस साधना का द्वितीय चरण प्रारम्भ होता है, जिसमें साधक को अपने सामने किसी ताम्रपत्र में **शतपत्रिका यक्षिणी गुटिका** रख **यक्षिणी माला** से उपरोक्त मंत्र की ही एक माला मंत्र-जप करना होता है, जिससे यक्षिणी का पूर्ण आबद्धीकरण भी हो सके। मंत्र-जप के उपरांत इस गुटिका को वहीं बैठे-बैठे धारण कर ले तथा शेष पूजन सामग्री को यथावत् रहने दे। दूसरे दिन किसी भी समय यक्षिणी यंत्र, यक्षिणी माला एवं समस्त पुष्पों को एकत्र कर कहीं दूर नदी-तालाब आदि में विसर्जित कर दे। यक्षिणी साधना की विशेषता यह होती है कि उसमें प्रायः साधना के मध्य अनुभूति न होकर कालांतर में अन्य प्रकार से तीव्र प्रभाव प्राप्त होते हैं। जिस गुटिका को गले में धारण कर रखा है, नित्य उसे समक्ष रख कर शतपत्रिका यक्षिणी की एक माला मंत्र-जप करने से साधक को स्वप्न में, बिम्ब, अनुभूति आदि के माध्यम से इस साधना की सफलता ग्यारह दिनों के भीतर ही भीतर मिलने लग जाती है।

जैन साधनात्मक ग्रंथों में शतपत्रिका यक्षिणी का वर्णन एक अन्य विशिष्टता के साथ हुआ है, जिसके अनुसार यह भूमि में गड़ा धन दृश्य कराने की साधना है। इस रूप में यह स्वतः ही अनुभूति प्रदान साधना न होकर साधक को ठोस आर्थिक लाभ दिलाने वाली साधना कही जा सकती है।
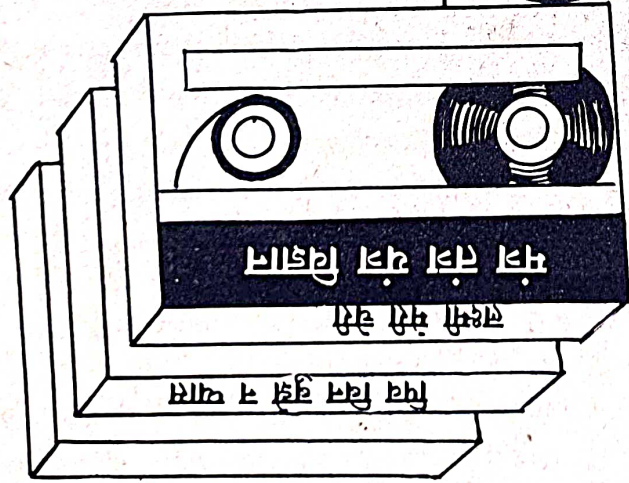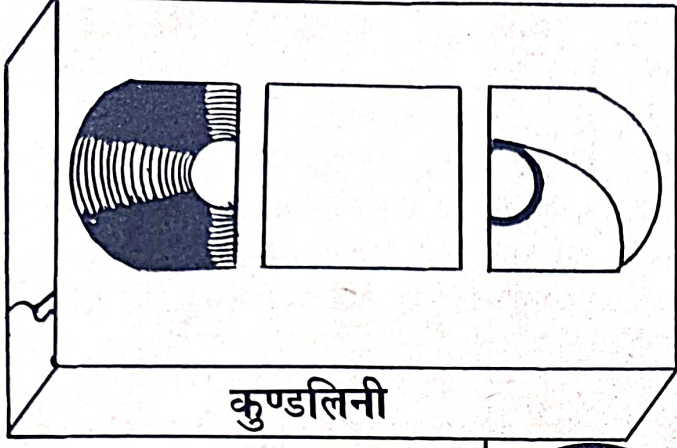
लक्ष्मी मेरी चेरी

योग का मार्ग धारण किया और लक्ष्मी प्रगट न हुई यह सम्भव ही नहीं, किन्तु कैसे? इसी का सटीक विवेचन इस कैसेट में स्वयं पूज्यपाद गुरुदेव की ओजस्वी वाणी में . . .

वसंत पंचमी सरस्वती लक्ष्मी साधना

वसंत ऋतु का ही नहीं जीवन का श्रृंगार है। एक ही नहीं कई साधनाओं का चैतन्य दिवस, दो महत्वपूर्ण साधनाएं ऐसी ही . . . .

पिव बिन बुझे न प्यास

आंखें भटकती रहती हैं, ज्यों अपने प्रियतम के दर्शन करने के लिए किसी प्रेमिका की, ठीक वही दशा होती है एक भक्त की अन्तरंग क्षणों की एक भावभीनी प्रस्तुति. . . .

प्रेम धार तलवार की

गुरु से अन्तिम मिलन का और समाहित हो जाने की क्रिया तो बस प्रेम है लेकिन क्या यह इतनी सहज है। सूली ऊपर सेज पिया की . . . .

अन्जानी पगडंडियों पर पूज्य गुरुदेव के साथ

जो जानी पहिचानी बन जायें, दृष्यिों के आगे बढ़ने के साथ - साथ पहिचान लेंगे आप भी अपने - आप को और पूज्य गुरुदेव से कभी पूर्व में भी रहे सम्बन्धो को . . . .

कुण्डलिनी

सम्पूर्ण अध्यात्म और योग की मूल विवेच्य विषय वस्तु , इस क्षेत्र के प्रकाण्ड विद्वान पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा पहली बार सटीक विवेचन प्रामाणिक दृष्यों के साथ . . .

सम्पर्क

गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन - ०११-७१८२२४८
मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन - ०२९१-३२२०६

गुरुदेव श्रीमाली जी की दीक्षाओं ने मेरे पूरे जीवन को ही बदल दिया

भारतीय संस्कृति और हमारी लुप्त हुई मंत्र-तंत्र की विद्याओं ने विदेशों में अपनी जड़ें जमा ली हैं, इसका उदाहरण हैं वे विदेशी व्यक्ति, जो बार-बार अपने परिवार सहित भारत में किसी न किसी ऋषि की शरण में आते रहते हैं। हमने २२ वर्षों से लगातार अमेरिका में रहने वाले ***श्री डॉ० आई खुराना 'सिविल जनरल सर्जन'*** *को जब एक वर्ष में २४ विशेष बड़ी दीक्षाएं परिवार सहित गुरुदेव से लेते हुए देखा, तो हम उनसे उनके अनुभव ज्ञात किए बिना न रह सके। २५ अगस्त ९४ को वे अपने परिवार सहित दिल्ली गुरुधाम में जब पुनः गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करने हेतु आए, तो हमने उनसे, उनके परिवार से बातचीत की, जिसके कुछ अंश हम पाठकों की जानकारी हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं।*

प्रश्न– आप अपना व अपने पूरे परिवार का परिचय दीजिए।

उत्तर– मैं इन्दर खुराना आज ४७ वर्ष पूरे करने जा रहा हूं। मेरी अधिकतर शिक्षा-दीक्षा अमेरिका में ही सम्पन्न हुई। मैं २२ वर्षों से लगातार अपने परिवार सहित अमेरिका में बसा हुआ हूं। मेरी मां भी मेरे साथ ही रहती हैं। यहां भारत में मेरे कुछ रिश्तेदार रहते हैं, जहां मैं कभी-कभार घूमने हेतु आता हूं। मेरी पत्नी ४३ वर्षीया विमला खुराना, बेटा विकास कुमार १६ वर्ष का और बड़ी बेटी ऋतु १८ वर्ष की है, ये तीनों मुझसे भी अधिक श्रीमाली जी में श्रद्धा रखते हैं। हमारा यही छोटा-सा परिवार है, जो आजकल १४ वर्षों से वेस्ट वर्जिनियां के काइजर शहर में रह रहा है, वहीं मेरी सर्विस है।

प्रश्न– आप गुरुदेव से कब और कैसे जुड़े?

उत्तर– मैं एक बार अकेला भारत आया था, तब मेरे भतीजे ने मुझे बताया कि "दिल्ली पीतमपुरा में एक स्थान पर गुरुधाम बना है। वहां अनेक व्यक्ति अपनी समस्याएं सुलझाने आते हैं। वहां मिलने वालों की भीड़ लगी रहती है। वहां कोई ऐसे ऋषि रहते हैं, जिन्हें बड़े-बड़े पुरस्कार मिले हैं, जिन्होंने ढेर सारी किताबें लिखी हैं" तब मैं उसकी बात से अधिक प्रभावित नहीं हुआ था, और उसकी खुशी के लिए ही **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** की कुछ प्रतियां अमेरिका ले गया था, लेकिन जब मैंने पत्रिका पढ़ी, तो दुबारा भारत आकर उनसे मिला, तब मेरे भतीजे ने बताया कि श्रीमाली जी ने १८ वर्ष हिमालय में तपस्या की है, वे अपने शक्तिपात से एक बार में ही कुण्डलिनी जागरण कर देते हैं। अपने भतीजे की इस बात से पानीपत (हरियाणा) में मैं गुरुदेव जी से बहुत प्रभावित हुआ और उनसे दिल्ली दीक्षा लेने पहुंच गया। मैंने उनकी कठोर तपस्या के बारे में विस्तृत जानकारी ली, और अपने-आप को एक साथ चार बड़ी दीक्षाएं लेने से रोक नहीं सका, यह एक वर्ष पूर्व की बात है।

डॉ० आई खुराना

प्रश्न– आपने उस समय कौन-कौन सी चार विशेष दीक्षाएं लीं?

उत्तर– मैंने सुना था, गुरुदेव जी जिसके मस्तक पर प्रेशर डालकर अपने नेत्रों द्वारा उसके नेत्रों में अपना शक्तिपात अंश मंत्रोच्चारण के साथ कर देते हैं, तो उसे वह सिद्धि प्राप्त हो जाती है, जिसके लिए वह दीक्षा दी गई है, इसलिए मैं भी अपने-आप को कुण्डलिनी जागरण, चक्र जागरण सम्बन्धी दीक्षा लेने से नहीं रोक सका। मैंने पूरी तरह समझा कि कुण्डलिनी जागरण के सात चक्र होते हैं– **मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपूर चक्र, अनाहत चक्र, विशुद्ध चक्र, सहस्रार चक्र** और **आज्ञा चक्र,** जिनके एक-एक चरण की दीक्षा लेना चाहें, तो भी व्यक्ति ले सकता है, और मैंने एक साथ प्रथम चार चरणों की दीक्षा ग्रहण की।

प्रश्न– आपको उन दीक्षाओं से क्या लाभ हुआ?

उत्तर– मुझे उस समय कहीं कोई लाभ नजर नहीं आया। जब मैंने गुरुदेव को भारत फोन किया, कि इस प्रकार से मुझे कोई फायदा नजर नहीं आ रहा है, तब गुरुदेव ने मुझे गुरु मंत्र का जप करने का आदेश दिया और कहा कि ६ माह में लाभ अवश्य होगा। मैंने छः माह तक गुरु मंत्र का भी जप किया, फिर भी मुझे कोई लाभ नजर नहीं आया, मैंने फिर गुरुदेव को फोन किया, तब गुरुदेव ने बताया कि **"तुम इन दिनों शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहे हो, और क्या लाभ देखना चाहते हो, मैं चमत्कार प्रदर्शन तो करता नहीं।" मुझे गुरुदेव की बात से बहुत आत्मिक शांति मिली।** लोगों से सुना व पत्रिका में पढ़ा

पत्रकार : डॉ० विभा

था कि हमेशा शिष्य को गुरु से जुड़े रहना चाहिए चाहे फोन, पत्र या मुलाकात किसी भी माध्यम से क्यों न हो, इसलिए मैं हमेशा फोन के माध्यम से उनसे जुड़ा रहा।

प्रश्न– आपने गुरुदेव से दूसरी बार दीक्षाएं कब और कौन-सी लीं?

उत्तर– मैं पहली बार अकेला दिल्ली आया था, परन्तु दूसरी बार अपने बेटे को भी साथ लेकर आया, क्योंकि जब-जब मैं गुरुदेव से फोन पर बात करता था, मुझे बड़ी आत्मिक शांति मिलती थी और तब-तब मुझे बड़े आनन्द का अनुभव होता था, इसलिए मैं अपने बेटे को भी अपने साथ ले आया। मेरे बेटे विकास ने उस समय गुरुदेव से चार दीक्षाएं लीं, जिनके नाम हैं- सरस्वती दीक्षा, ज्ञान मार्ग दीक्षा, अकाल-मृत्यु निर्भय दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा प्रथम चरण। मैंने भी उसी समय चार दीक्षाएं लीं- मैंने कुण्डलिनी चक्र जागरण दीक्षा के बचे हुए तीन चरण पूरे किए व अकाल-मृत्यु से बचने के लिए अकाल-मृत्यु निर्भय दीक्षा ली।

प्रश्न– आपको व आपके बेटे को इन दीक्षाओं से कितना लाभ हुआ?

उत्तर– मुझे इन दीक्षाओं को लेने के बाद साधना करते समय अपने मस्तिष्क में एक सूर्य की किरण की भांति कोई तेज रोशनी दिखाई पड़ती थी, जिसे एक जलता हुआ बल्ब ही समझ लीजिए, उस रोशनी में मुझे साधना करने में आनन्द का अनुभव होने लगा था। मेरे बेटे को विशेष लाभ तो कुछ नहीं हुआ, परन्तु इतना अवश्य हुआ कि उसका मन पढ़ाई-लिखाई में बहुत लगने लगा, अपने गार्जियन को वह अधिक स्नेह, सम्मान देने लगा और मेडीकल की लाइन में जाने की दिली इच्छा भी उसने प्रगट की।

प्रश्न– मैं सोचती हूं कि आप दीक्षाओं के प्राप्त लाभ से कम सन्तुष्ट हैं, फिर आप आज परिवार सहित क्यों एक साथ १२ दीक्षाएं ले रहे हैं?

उत्तर– नहीं जी, हम संतुष्ट नहीं हैं ऐसी बात नहीं है, परन्तु हम बहुत सारे गुरुओं के पास भटके हैं, हमें दुनिया भर के चमत्कार दिखाए जाते रहे हैं, ऐसा यहां कुछ भी नहीं है, इसलिए समझने में समय लगा है। हम उस योगी के कायल हैं, जिसने अपनी कठोर तपस्या का अंश हमें इतनी कम पूंजी लेकर वितरित किया है, जिसका कोई मूल्य ही नहीं चुकाया जा सकता। हमें उनकी साधना, उपासना, तपस्या हर पल निराशा के क्षणों में प्रेरणा देती रही है, कि जब वे नहीं थके संघर्षों से, तो हम क्यों हार कर बैठें। परन्तु इतना अवश्य है कि जितने हम अभी संतुष्ट हैं, उतने पहले कभी नहीं हुए थे। अभी गुरुदेव ने हमें समय देकर हमारी सारी समस्याओं का समाधान किया, जिससे मैंने अपने सारे परिवार को वे सारी दीक्षाएं दिलाईं, जो पिछले दिनों मैंने ली हैं। मैं भौतिक दृष्टि से काफी लाभ एक वर्ष से अनुभव कर रहा हूं, तभी अपने समस्त परिवार को लेकर यहां आया हूं और आता रहूंगा।

प्रश्न– आप मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका कब से पढ़ रहे हैं और इसके बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर– मैंने एक वर्ष पहले गुरुदेव से दीक्षा ली, और सोचा कि अब यहां से जुड़ने के बाद मुझे पत्रिका अपने-आप भेजी जाएगी, लेकिन कुछ माह तक इंतजार करने के बाद मैं अपने-आप को पत्रिका ग्राहक बनाने से नहीं रोक सका। मुझे इस बात पर पछतावा है कि इसके बारे में जानकारी मैंने पहले क्यों नहीं ली। यह पत्रिका **''गागर में सागर''** की तरह है, परन्तु इसमें जो संस्कृत-मंत्र हैं, उनका हम ठीक से उच्चारण नहीं कर पाते, उन्हें हिन्दी-अंग्रेजी में भी लिखना चाहिए, परन्तु बाद में अंग्रेजी पत्रिका लेने से मैं संतुष्ट हो गया। मुझे गुरुदेव का ढेर सारे मंत्रों को कई घण्टे तक धारा प्रवाह उच्चरित करना बहुत प्रभावित करता रहा है।

डॉ० खुराना की पत्नी व बच्चों ने भी बार-बार इसी बात को जोर देकर कहा कि उन्हें **गुरुदेव जैसा तपस्वी व संस्कृत का विद्वान व्यक्ति आज तक देखने हेतु नहीं मिला,** और यही कारण है कि वे इतने श्रद्धा व विश्वास से उनसे बंधे हुए हैं। हमारे यह बताने पर कि गुरुदेव ने संस्कृत में नहीं हिन्दी में पी० एच० डी० की है, खुराना परिवार मानने को तैयार ही नहीं था।

प्रस्तुति
पत्रकार डॉ० विभा,
भिलाई (म० प्र०)

पत्रकार : डॉ० विभा

था कि हमेशा शिष्य को गुरु से जुड़े रहना चाहिए चाहे फोन, पत्र या मुलाकात किसी भी माध्यम से क्यों न हो, इसलिए मैं हमेशा फोन के माध्यम से उनसे जुड़ा रहा।

प्रश्न– आपने गुरुदेव से दूसरी बार दीक्षाएं कब और कौन-सी लीं?

उत्तर– मैं पहली बार अकेला दिल्ली आया था, परन्तु दूसरी बार अपने बेटे को भी साथ लेकर आया, क्योंकि जब-जब मैं गुरुदेव से फोन पर बात करता था, मुझे बड़ी आत्मिक शांति मिलती थी और तब-तब मुझे बड़े आनन्द का अनुभव होता था, इसलिए मैं अपने बेटे को भी अपने साथ ले आया। मेरे बेटे विकास ने उस समय गुरुदेव से चार दीक्षाएं लीं, जिनके नाम हैं- सरस्वती दीक्षा, ज्ञान मार्ग दीक्षा, अकाल-मृत्यु निर्भय दीक्षा, कुण्डलिनी जागरण दीक्षा प्रथम चरण। मैंने भी उसी समय चार दीक्षाएं लीं- मैंने कुण्डलिनी चक्र जागरण दीक्षा के बचे हुए तीन चरण पूरे किए व अकाल-मृत्यु से बचने के लिए अकाल-मृत्यु निर्भय दीक्षा ली।

प्रश्न– आपको व आपके बेटे को इन दीक्षाओं से कितना लाभ हुआ?

उत्तर– मुझे इन दीक्षाओं को लेने के बाद साधना करते समय अपने मस्तिष्क में एक सूर्य की किरण की भांति कोई तेज रोशनी दिखाई पड़ती थी, जिसे एक जलता हुआ बल्ब ही समझ लीजिए, उस रोशनी में मुझे साधना करने में आनन्द का अनुभव होने लगा था। मेरे बेटे को विशेष लाभ तो कुछ नहीं हुआ, परन्तु इतना अवश्य हुआ कि उसका मन पढ़ाई-लिखाई में बहुत लगने लगा, अपने गार्जियन को वह अधिक स्नेह, सम्मान देने लगा और मेडीकल की लाइन में जाने की दिली इच्छा भी उसने प्रगट की।

प्रश्न– मैं सोचती हूं कि आप दीक्षाओं के प्राप्त लाभ से कम सन्तुष्ट हैं, फिर आप आज परिवार सहित क्यों एक साथ १२ दीक्षाएं ले रहे हैं?

उत्तर– नहीं जी, हम संतुष्ट नहीं हैं ऐसी बात नहीं है, परन्तु हम बहुत सारे गुरुओं के पास भटके हैं, हमें दुनिया भर के चमत्कार दिखाए जाते रहे हैं, ऐसा यहां कुछ भी नहीं है, इसलिए समझने में समय लगा है। हम उस योगी के कायल हैं, जिसने अपनी कठोर तपस्या का अंश हमें इतनी कम पूंजी लेकर वितरित किया है, जिसका कोई मूल्य ही नहीं चुकाया जा सकता। हमें उनकी साधना, उपासना, तपस्या हर पल निराशा के क्षणों में प्रेरणा देती रही है, कि जब वे नहीं थके संघर्षों से, तो हम क्यों हार कर बैठें। परन्तु इतना अवश्य है कि जितने हम अभी संतुष्ट हैं, उतने पहले कभी नहीं हुए थे। अभी गुरुदेव ने हमें समय देकर हमारी सारी समस्याओं का समाधान किया, जिससे मैंने अपने सारे परिवार को वे सारी दीक्षाएं दिलाईं, जो पिछले दिनों मैंने ली हैं। मैं भौतिक दृष्टि से काफी लाभ एक वर्ष से अनुभव कर रहा हूं, तभी अपने समस्त परिवार को लेकर यहां आया हूं और आता रहूंगा।

प्रश्न– आप मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका कब से पढ़ रहे हैं और इसके बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर– मैंने एक वर्ष पहले गुरुदेव से दीक्षा ली, और सोचा कि अब यहां से जुड़ने के बाद मुझे पत्रिका अपने-आप भेजी जाएगी, लेकिन कुछ माह तक इंतजार करने के बाद मैं अपने-आप को पत्रिका ग्राहक बनाने से नहीं रोक सका। मुझे इस बात पर पछतावा है कि इसके बारे में जानकारी मैंने पहले क्यों नहीं ली। यह पत्रिका **''गागर में सागर''** की तरह है, परन्तु इसमें जो संस्कृत-मंत्र हैं, उनका हम ठीक से उच्चारण नहीं कर पाते, उन्हें हिन्दी-अंग्रेजी में भी लिखना चाहिए, परन्तु बाद में अंग्रेजी पत्रिका लेने से मैं संतुष्ट हो गया। मुझे गुरुदेव का ढेर सारे मंत्रों को कई घण्टे तक धारा प्रवाह उच्चरित करना बहुत प्रभावित करता रहा है।

डॉ० खुराना की पत्नी व बच्चों ने भी बार-बार इसी बात को जोर देकर कहा कि उन्हें **गुरुदेव जैसा तपस्वी व संस्कृत का विद्वान व्यक्ति आज तक देखने हेतु नहीं मिला,** और यही कारण है कि वे इतने श्रद्धा व विश्वास से उनसे बंधे हुए हैं। हमारे यह बताने पर कि गुरुदेव ने संस्कृत में नहीं हिन्दी में पी० एच० डी० की है, खुराना परिवार मानने को तैयार ही नहीं था।

प्रस्तुति
पत्रकार डॉ० विभा,
भिलाई (म० प्र०)

सूक्तियां

"दीक्षा का तात्पर्य यह नहीं है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, वह कार्य सम्पन्न हो ही जाय, अपितु दीक्षा का तात्पर्य तो यह है कि आप जिस उद्देश्य के लिए दीक्षा ले रहे हैं, उस कार्य के लिए आपका मार्ग प्रशस्त हो।"

प्रेम की मृत्यु का असली कारण विश्वासघात होता है।

वासना के वशीभूत प्राणी अपना विवेक खो बैठते हैं।

बच्चे को मारना ही है तो फूल की छड़ी से मारिये।

ईश्वर सर्वत्र उपस्थित नहीं रह सकता, इसलिए उसने "मां" बनाई।

इज्जत पर दौलत, शोहरत और हुकूमत तक लुटा देना ही इन्सान का फर्ज है।

गुलाब के फूल इसलिए गुलाब के फूल हैं कि वे कांटों की नोक पर खिलते हैं।

लोग आपको आपके कामों से परखेंगे, आपके पिता, कुटुम्ब या आपके इरादों से नहीं।

मानव जीवन में सफलता पाना आसान नहीं, इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

सफलता पर पहुंचने के लिए चुनौती एवं 'रिस्क' की सीढ़ियों से ही ऊपर चढ़ना पड़ेगा।

अगर जीवन का आनन्द लेना है, तो थोड़ा अल्हड़पन, थोड़ी ताकझांक और थोड़ा प्यार जरूरी है।

अपने कार्य के लिए "हां" भरवाने के लिए जरूरी है कि बातचीत सामने वाले व्यक्ति की विशेषता से प्रारम्भ करें।

धन प्रदाता अप्सरा

जो साधक के मनोवांछित कार्य सम्पन्न करती है

रात अब बीत चली है— इसकी सूचना सुदूर पूर्व से आ रही हल्की लालिमा से मिल चुकी थी और मेरे समक्ष बैठी मेरी साधना की सफलता को कहती, उसे मूर्त रूप देती सुनयना की उपस्थिति से भी, जिसके कपोल उत्तेजना से थरथरा रहे थे, उन पर छायी लालिमा का प्रतिबिम्ब था, चेहरे पर स्वेद कण छलछला आए थे, मानों रात जाते-जाते आज अपनी शबनम क्यारी में न बिखेर कर सुनयना के कपोलों और देह पर बिखेर गई हो, यों भी सुनयना की पतली, कमनीय और नाजुक देहयष्टि किसी फूलों की क्यारी से कम भी नहीं थी। तन पर पड़े रंग-बिरंगे वस्त्रों की शोभा उसे जीती-जागती वाटिका में ही बदल दे रहे थे, उसकी नाजुक पंखुरियों से ओंठ, नर्म और मासूम उंगलियां क्या भला किसी भी पुष्प की कोमलता से चुनौति के साथ बराबरी नहीं करती आ रही थी, और उसकी देह से आती वह मादक गंध कि भंवरे भी एक बार मदमस्त होकर वास्तविक फूलों का रसपान करना भूल जाए या यों कहूं कि जानबूझ कर भुला दे। ऐसे पुष्प को पाकर भला कौन नहीं उसका मधुपान करने को आतुर हो उठेगा।

मैं भी तो एकटक उसकी ओर देखता हुआ उसके विलक्षण सौन्दर्य का नेत्रों से रसपान करता ही जा रहा था। खूब बड़ी-बड़ी कजरारी आंखें अत्यन्त नर्म और रक्तिम ओंठ, सुडौल नासिका हल्के भरे से कपोल, पतली गर्दन और सुडौल वक्षस्थलों के भार को संभालने का सफल-असफल प्रयास करते नर्म कंधे। उधर कटि प्रदेश भी समुन्नत वक्षस्थलों को सम्भालने के प्रयास में दोहरा हुआ जा रहा था, जिसके फलस्वरूप नाजुक से कटि प्रदेश में वल पड़े जा रहे थे। गहरी नाभि और जंघाओं की सुडौलता को ढकने या उभारने का कार्य करता उसका अधोवस्त्र उसकी सुगढ़ता की ही कथा. . . और कथा से भी ज्यादा मीठी लोरी का काम कर रही थी, जिसकी थपकियों में अच्छे से अच्छे ऋषि-मुनियों को मोह निद्रा आ जाए। अद्भुत कोशिश थी उसकी घने, नर्म और सारी की सारी देह को ही ढक लेने में केशराशि का, जिसके बिखराव में उसकी देह और भी निखर उठी थी, जिसकी सघन काली पृष्ठभूमि में सारी देह की रंगत और शुभ्रता विद्रोह सी करती, तड़प कर मेरी दृष्टि में चुभने सी लग गयी, मैं एक बार अपने-आप पर संयम खोने लगा कि तभी. . .

. . . मानो कमरे में कई-कई सूर्य की किरणें एकाएक जगमगा उठीं, मैं जो बेसुध हुआ जा रहा था वह अपने-आप में संयमित हो गया। उसकी नाक में पड़ी कील में जड़ी-हीरे की कनी पर दीपक का प्रकाश पड़ने से मेरी दृष्टि चकाचौंध हो उठी थी। अब अप्सरा साधना के अंतिम क्षण भी समाप्त होने को थे और इसी काल में मुझे अपना मनोवांछित प्राप्त कर लेना था जिसके लिए मैं सतर्क हो चेष्टारत हो उठा. . .

सुनयना अप्सरा की साधना का विवरण मुझे बहुत पूर्व एक संन्यासी से सुनने को मिला था और मैं तभी से इस साधना के रहस्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयासरत था, किन्तु मनोवांछित सफलता तो दूर अधिकांश उच्चकोटि के साधक भी इस साधना से परिचित नहीं थे। छिटपुट बिखरी हुई जानकारियों को एकत्र करके मैंने केवल इतना ही समझा कि अवश्य ही किसी ऐसी षोडश वर्षीया अनिन्द्य सुंदरी की साधना है, जो सिद्ध होने पर साधक को मनोवांछित भोग तो प्रदान करती ही है साथ ही अपने विशिष्ट खेचरी विद्या के द्वारा उसे उसके अनेक मनोवांछित पदार्थ आदि लाकर भी प्रदान करती है। गृहस्थ साधक जहां इस साधना को भोग की दृष्टि से सम्पन्न करते हैं वहीं संन्यासी साधक सुखद साहचर्य और

खेचरी विद्या की प्राप्ति के लिए सम्पन्न करते हैं।

मुझे अपने शोध के मध्य यह भी ज्ञात हो चला था कि हो न हो इस साधना को वर्ष के किसी एक विशेष दिवस पर ही सिद्ध किया जाता है, इसी कारणवश इस साधना को सार्वजनिक रूप से लोग नहीं जान पाए। अंत में मुझे स्वामी चैतन्यानंद जी के मिलने पर ही इस साधना का पूर्ण विवरण ज्ञात हो सका। स्वामीजी की यह विशेषता है कि उन्होंने वे साधनाएं ही सिद्ध की हैं जिन्हें आमतौर पर अन्य साधकों ने असफल होने पर छोड़ दिया हो। मेरी उनसे यूं ही भेंट हो गयी थी, किन्तु उनकी इस विशेषता को जान मैंने विधिवत् उनका शिष्यत्व स्वीकार किया और अपने मन की बात को भी ज्यों का त्यों रख दिया। मेरी स्पष्टवादिता से प्रसन्न होकर उन्होंने मुझे अपना शिष्य तो बना लिया किन्तु दो वर्ष तक इस साधना के विषय में कोई चर्चा नहीं की। मैं स्पष्ट समझ रहा था कि वे मेरी परीक्षा ले रहे हैं किन्तु दूसरी ओर निश्चिंत भी था कि जब मुझे यह साधना सिद्ध हो जाएगी तो पूरे जीवन भर की उपलब्धि एक ही क्षण में प्राप्त हो जाएगी।

यदि हम सामान्य और व्यवहारिक दृष्टि से भी देखें तो पूरे-पूरे जीवन भर परिश्रम करके क्या अर्जित कर पाते हैं दूसरी ओर यदि इसी जीवन का उपयोग किसी श्रेष्ट गुरु के मिल जाने पर वर्ष दो वर्ष उनकी आज्ञानुसार चल कर सम्पन्न कर लेते हैं तो. . . कोई भी एक साधना सिद्ध होने पर इतना अधिक धन, वैभव, कायाकल्प प्राप्त हो जाता है जो कि अकल्पनीय ही होता है। किसी भी यक्षिणी, अप्सरा या लक्ष्मी की एक सिद्धि द्वारा ही पूरे के पूरे जीवन को संवारा जा सकता है।

दूसरी ओर आध्यात्मिक रूप से भी कुण्डलिनी जागरण, ध्यान, धारणा, समाधि द्वारा ऐसा कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो अनिवर्चनीय होता है। यदि सौभाग्य से कोई विलक्षण साधना हाथ लग गई तब तो उससे देवता गण भी ईर्ष्या करते हैं. . . और सुनयना की साधना ऐसी ही विलक्षण साधनाओं के अन्तर्गत आती है, क्योंकि वह प्रसन्न होने पर अपने साधक के साथ प्रेमिकावत् व्यवहार तो करती ही है, साथ ही उसे विविध प्रकार की ऐसी दुर्लभ वस्तुएं भी लाकर देती है जिनसे कायाकल्प, पूर्ण यौवन, अतुलनीय वेग, भविष्य दर्शन सिद्धि, दूर दृश्य सिद्धि, अदृश्य होने का सामर्थ्य तथा वायुगमन की सिद्धि भी प्राप्त होती है। **सुनयना अप्सरा खेचरी विद्या की प्रवीण होने के कारण अपने सिद्ध साधक को भी यह विद्या प्राप्त करा ही देती है।**

स्वामी चैतन्यानंद जी के साथ मुझे दो वर्ष से ऊपर समय हो जाने के पश्चात् दीपावली का पर्व आया. . . और उन्होंने मुझे इस दिन प्रातः से ही मौन रहने व फलों के अतिरिक्त कुछ भी ग्रहण न करने की आज्ञा देकर एकांत में रहने को कहा। दो वर्ष तक उनके साथ रहते हुए मैं तत्क्षण समझ गया कि आज मेरे सौभाग्य का दिन आ गया है और अवश्य ही दीपावली वह सिद्ध मुहूर्त है जिस दिन इस धन व यौवन प्रदायक अप्सरा की साधना सम्पन्न की जाती है।

दिवस बीता, सायं हुई और सायंकाल के बीत जाने के पश्चात् उन्होंने मुझे अपने पास बुला कर छह विशिष्ट सामग्रियां देकर उन्हें एक विशेष क्रम से अपने समक्ष रखकर **श्वेत हकीक माला** से एक गोपनीय मंत्र जपने की आज्ञा दी। उन छह सामग्रियों में **एक हकीक पत्थर, एक गोमती चक्र, एक मूंगा रत्न, एक पुखराज के समान पीला रत्न, एक चिरमी का दाना तथा एक सिद्धि फल** था और उन्हें इस क्रम में अपने समक्ष पीले वस्त्र पर कुंकुम से रेखाएं खींच कर उनके मध्य स्थापित करना था।

गोमती चक्र	पीला रत्न	सिद्धि फल
चिरमी का दाना	मूंगा रत्न	हकीक पत्थर

इस प्रकार से यंत्र रचना कर मुझे जिस मंत्र का जप **सफेद हकीक की माला** से करना था वह मंत्र था—

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै आगच्छ आगच्छ नमः

मंत्र-जप के उपरांत सभी सामग्रियों को माला सहित विसर्जित कर देने की आज्ञा भी उन्होंने दी थी। कदाचित् उन्हें भी अनुमान नहीं था कि मुझे यह साधना इतनी शीघ्रता से प्रथम बार में ही सिद्ध हो जाएगी, किन्तु उचित साधना का उचित मुहूर्त से मेल होने के कारण यह घटना सम्भव हुई और सुनयना को मैंने प्रेमिका रूप में वरण किया।

अप्सरा की साधना का सर्वोत्तम स्वरूप प्रेमिका ही होता है जिसमें वह अपने स्पर्श, आलिंगन, हंसी-मजाक, नृत्य, हाव-भाव, विलास व कटाक्ष द्वारा साधक को रोमाञ्चित व संतुष्ट तो करती ही है, साथ ही उसकी आवश्यकता से कहीं अधिक धन, आभूषण द्रव्य व पदार्थ लाकर उसका हित चिन्तन भी करती है। दीपावली की रात्रि तो इसका सिद्ध सफल मुहूर्त है ही, अन्य किसी भी शुक्रवार को यह साधना सम्पन्न की जा सकती है, जिसमें साधक को यह अपनी भावना, तीव्रता एवं पूर्व जन्म गत संस्कारों के अनुपात में सफलता मिलती ही है। वास्तव में साधना तो कोई भी असफल होती ही नहीं, प्रत्येक बार हम साधना के द्वारा सफलता की एक सीढ़ी तो चढ़ते ही हैं। अंतर केवल इतना है कि किसी को दो-चार सीढ़ी चढ़कर ही सफलता प्राप्त हो जाती है, किसी को दस या बारह सीढ़ियां चढ़नी पड़ जाती हैं।

या फिर झगड़े, झंझटों में बार- बार फंस जाना, मुकदमे-
बाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं।
तंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग
कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।

विशेष तंत्र रक्षा कवच

संस्थान के योग्यतम विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्र-सिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास . . . .

(न्यौछावर - ११०००/- मात्र) जो वास्तव में अनुष्टान का व्यय मात्र ही है।

सम्पर्क : **मंत्र शक्ति केन्द्र**, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.),फोन-०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, .फोनः ०११-७१८२२४८,फैक्स-०११-७१८६७००

दीक्षा से कठिन असाध्य रोग की निवृत्ति

आदरणीय पूज्यनीय गुरुदेव एवं पूज्यनीया माताजी के श्री चरण कमलों में सेवक का सादर चरण स्पर्श स्वीकृत हो। मैं ग्राम जंधार का रहने वाला निवृत्त बी० पी० एम० हूं, मेरी आयु ७३ वर्ष की है। मैंने पूज्य गुरुदेव से उज्जैन में महाशिवरात्रि पर्व पर फरवरी ९३ में प्रारम्भिक गुरु दीक्षा ग्रहण की थी, आज मैं अपने साथ घटी आश्चर्यजनक घटना का वर्णन लिख रहा हूं, जो अपने-आप में ज्वलंत प्रमाण है—

मैंने बवासीर का ऑपरेशन १६/८/९३ को अशोक नगर कमाल सर्जीकल होम में कराया था, ऑपरेशन सफल रहा। बाद में मुझे पेशाब करने में अत्यधिक परेशानी आने लगी। इसके लिए नली डाल दी गयी। अंग्रेजी दवाओं के अधिक प्रयोग किए जाने से तो हालत और भी अधिक बिगड़ती चली गई। शरीर में यूरिया अधिक बढ़ गया था, अधिक गम्भीर हालत हो जाने पर मुझे १० सितम्बर को ग्वालियर के आरोग्य चिकित्सालय में भर्त्ती किया गया। वहां पर काफी मेडीसन, इलाज किया गया। मेरे शरीर में खून ही नहीं था, मात्र सूखा शरीर पीला हो गया था, वहां पर अल्ट्रा सोनोग्राफी, एक्स किरण, व ए० सी० ए० एन० आदि महत्वपूर्ण एक्सरे लिए गए। सभी में असाध्य रोग के लक्षण दिखाई स्पष्ट आये थे। लैट्रिन, बाथरूम आदि की परेशानी में कत्तई सुधार नहीं हो रहा था, २० दिन तक इलाज किए जाने पर भी रोग यथावत् बना हुआ था, अन्ततः इलाज की आशा छोड़कर डॉक्टरी परामर्शनुसार ३० सितम्बर को अस्पताल से छुट्टी मिल गयी।

मेरा एक पुत्र चि० अरविन्द जो गुरुदेव का निकटतम शिष्य है, उसे श्री गुरु महाराज जी का ही अवलम्बन है। सब तरफ से निराश होकर एक ही सहारा गुरुदेव का लिए हुए मुझे लिटाये हुए ही २/१०/९३ को जोधपुर ले पहुंचे। वहां से श्री गुरु महाराज जी दिल्ली पहुंच चुके थे। तब अरविन्द श्री गुरु महाराज जी से मिलने दिल्ली पहुंचा। वहां पर श्री गुरु महाराज जी ने पुत्र को ही माध्यम बनाकर मुझे रोगमुक्ति धन्वन्तरि दीक्षा प्रदान की। तब तक मैं अन्य पुत्रों के साथ अशोक नगर आ गया था। उसी रात्रि को मुझे स्वप्न में गुरु महाराज जी ने दीक्षा प्रदान की, और यह मंत्र दिया कि— "गुरुदेव को सब कुछ दे दिया" यही बोलते रहने को कहा, एवं स्वप्न में श्वेत कपड़े पहिने कोई दो पुरुष मेरे पास आए और पेशाब की नली निकालकर बोले सब ठीक हो जाएगा। दूसरे दिन अरविन्द ने आकर मुझे दीक्षा की माला व प्रसाद आदि पहना दी, उसी दिन से शनैः शनैः मेरे स्वास्थ्य में सुधार होता रहा। लैट्रिन, बाथरूम जो प्रधान भयंकर असाध्य रोग था, वह अपने-आप ठीक हो गया। मेरा शरीर जो निर्जीव, मुर्दा प्रायः हो गया था, उसमें धीरे-धीरे चेतना का संचार होकर दैनिक दिनचर्या भी सन्तुलित होती चली गयी और आज मैं पूर्णतः स्वस्थ्य हूं, जैसा १० वर्ष पहिले था, सभी कार्य स्वयमेव करता हूं यह सब आश्चर्य है व चमत्कार है। श्री गुरुदेव जी की लीला रहस्यमयी है।

नारायण प्रसाद श्रीवास्तव
सेवनिवृत्त (बी० पी० एम०)
ग्राम व पोस्ट अशोक नगर,
गुना (म. प्र.)

कुण्डलिनी जागरण प्रक्रिया

मुझे मंत्रों, टोने, टोटकों, ज्योतिष आदि चीजों पर कोई विश्वास नहीं था और मैं इन सब चीजों को व्यर्थ समझता था, परन्तु एक दिन मुझे पूज्यपाद गुरुदेव डा० नारायण दत्त श्रीमाली जी के बारे में जानने का अवसर मिला और यह सौभाग्य मुझे मेरे एक मित्र के द्वारा प्राप्त हुआ। ६ दिस० १९९३ सोमवार की रात्रि को ८ बजे मैं अपने उसी मित्र के घर पर बैठा हुआ था, वहीं मेरे मित्र से मुझे **गुरु मंत्र और चेतना मंत्र** प्राप्त हुए। उस दिन पूज्यपाद गुरुदेव के और उनके उच्च उद्देश्य व सिद्धाश्रम साधना के सम्बन्ध में भी चर्चा हुई।

इसी रात्रि में लगभग ग्यारह बजे के आस-पास मैंने बिस्तरे पर लेटे-लेटे अचानक एक ही बार **गुरु मंत्र** "ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः" का जप किया, तभी मुझ पर अचानक शक्तिपात हुआ या अचानक कुण्डलिनी का पूर्ण जाग्रत होना हुआ, उस समय मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मेरे पेट में जहां हमेशा दर्द रहता था, वहां अचानक किसी ने (पूज्य गुरुदेव) दबा दिया हो और उसी क्षण मेरा दर्द गायब हो गया। उसके पश्चात शरीर में जोरों से कम्पन होने लगा और आज्ञा चक्र में भी कम्पन होने लगा। उस समय ध्यान सहस्रार से विसर्ग बिन्दू के मध्य था और पूरा शरीर रोमाञ्चित हो रहा था। मुझे मेरे पूरे सुषुम्ना मार्ग के खुले होने का आभास हो रहा था। श्वसन क्रिया के द्वारा मुझे स्पष्ट ज्ञात हो रहा था कि वायु मूलाधार से सहस्रार तक आ-जा रही है। सिर की चोटी के पास विसर्ग बिन्दू पर टिप-टिप की आवाज आ रही थी, जो अभी आज्ञा चक्र पर चालू है। इस तरह की अवस्था में मैं लगभग आधा-पौन घण्टे तक रहा। इस अवस्था में मेरा पूरा शरीर हल्का हो गया था। ऐसा लग रहा था जैसे कि मैं शरीर से बाहर आ सकता हूं, और दिनांक ७ दिसम्बर १९९३ मंगलवार के दिन मेरे चेहरे पर तमतमाहट थी, दिन के ४ बजे तक ऐसे ही लग रहा था, और आज तक आज्ञा चक्र में कुण्डलिनी का दबाब बना हुआ है तथा आंखें बन्द करने पर दबाब बढ़ जाता है। मैं पूज्य गुरुदेव से अनुरोध करता हूं कि वे मुझे इस बारे में मार्गदर्शन करें तथा साथ ही मुझे आशीर्वचन भी दें।

आपका पुत्र
दुर्गादास व० मेय्यालाल लहरपूरे
जि०: जेतूल, मेसदेही (म० प्र०)

पंचामृतं गृहाणेदं सर्वशक्तिसमन्विते।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः शुद्ध जल स्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम्–

सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यम् गृह्यताम् जगदम्बिके।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्–

उपवीतं गृहाणेदं उपमाशून्य वैभवे।
उमाहेमवति प्रीत्या हेमसूत्र समन्वितम्।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभूषणम्–

मांगल्यमणिसंयुक्तं मुक्ताफल समन्वितम्।
दत्तं मंगल सूत्रं ते गृहाणाम्ब! शुभं कुरु।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः आभूषणं समर्पयामि।

चन्दनम्–

श्री खण्डचन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठि चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः चन्दनं समर्पयामि।

अक्षत (चावल)–

अक्षतान् धवलान् देवि! शालीयांस्तण्डुलान् शुभान्।
हरिद्राकुंकुमोपेतान् गृहाणाम्ब! कृपानिधे।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प–

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै विभे।
मयोपनीतानि पुष्पाणि गृहाण जगदम्बिके।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पाणि समर्पयामि।

सौभाग्य द्रव्य–

कज्जलं चैव सिन्दूरं हरिद्राकुंकुमानि च।
भक्त्याऽर्पितानि श्री मातः! सौभाग्यानि च स्वीकुरु।।

धूपं–

वनस्पति रसोद्भूतः गन्धाढ्यः सुमनोहरः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः धूपम् आघ्रापयामि।

दीपम्–

साज्यं च वर्तिसंयुक्तम् वह्निना योजितम् मया
दीपं गृहाण देवेशि! सर्वत्र तिमिरापहा।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः दीपं दर्शयामि समर्पयामि।

नैवेद्यम्–

(नैवेद्य प्रोक्षणम्)–
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च
धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्
शर्कराधृत संयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम्।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यम् प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः नैवेद्यं निवेदयामि,
नाना ऋतुफलानि च समर्पयामि।

आचमनम्–

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय
स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि।।

ताम्बूल–

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्
एलाचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।।

आरती– महालक्ष्मी जी की आरती करें–

न तत्र सूर्यो भाति न तारकं नैता विद्युतो कुतो यमग्निः।
समेन भान्तम् अनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः नीराजनं समर्पयामि।।

जल आरती–

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिः
ब्रह्म शान्तिः सर्व (गूं) शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।

प्रदक्षिणा–

सर्वमंगललाभाय सर्वपापनिवृत्तये
प्रदक्षिणां करोम्यम्ब! प्रसीद परमेश्वरि।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि।।

पुष्पांजलि–

पुष्पांजलिं गृहाणेमां परब्रह्मस्वरूपिणि।
भक्त्या समर्पितं देवि! प्रसन्ना भव सर्वदा।।
ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।

क्षमा प्रार्थना–

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि पूरिपूर्णं तदस्तु मे।।
ॐ तत् सद् ब्रह्मार्पणमस्तु। अनेन कृतेन पूजाराधन
कर्मणा श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्!

दाहिने हाथ में जल लेकर छोड़ें, फिर भगवती लक्ष्मी को पूरे परिवार के साथ प्रणाम करें, प्रसाद का वितरण करें।

आवश्यकता है

शीघ्र ही **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका **गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगाली, तमिल, मलयालम** में प्रकाशित की जा रही है।

जो हिन्दी से उपरोक्त भाषाओं में से किसी भी एक भाषा में भी अनुवाद करने की योग्यता रखते हैं, वे सज्जन या इच्छुक रिटायर्ड व्यक्ति एक पत्र के साथ फोटो, अनुभव प्रमाण सहित लिखें व भेजें।

उचित पारिश्रमिक की व्यवस्था है।

व्यवस्थापक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४
फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

पानीपत में निखिल ध्यान केन्द्र

पूरे भारतवर्ष में लगभग सौ निखिल ध्यान केन्द्र खुल चुके हैं, जिसमें नित्य सुबह एवं सायं कई गणमान्य व्यक्ति एवं साधक एकत्र होते हैं, जहां किसी एक विषय पर प्रवचन होता है और सभी साधना में भाग लेते हैं।

इसी कड़ी में **२३ अगस्त ६४** को प्रातः १० बजे **परमपूज्य गुरुदेव** एवं **माता जी** के हाथों **पानीपत** में भी **निखिल ध्यान केन्द्र** की स्थापना हुई, और इस हेतु अलग भवन निर्माण हुआ, जिनमें शहर के प्रसिद्ध विधिवेत्ता **श्री विलायतीराम जी, अनीस, अजय, श्रवण, संदीप, राजेश, अरुण, पवन, राजू, सुरेश, राजीव** आदि नवयुवकों ने अथाह परिश्रम किया, इनमें से **राजेश गोयल** एवं उनके साथियों ने इस अवसर पर यह प्रतिज्ञा ली है कि वे नवरात्रि तक तीन सौ परिवारों को सदस्य बना कर **सिद्धाश्रम साधक परिवार** में जोड़ देंगे।

'सिद्धाश्रम साधक परिवार' द्वारा एक महत्वपूर्ण **दीक्षा एवं प्रवचन महोत्सव**

पूज्य गुरुदेव नन्दकिशोर श्रीमाली जी के सान्निध्य में

दिनांक : १३ नवम्बर १९९४

संयोजक
श्री गणेश वटाणी

पूज्य गुरुदेव
श्री नन्दकिशोर श्रीमाली जी

पद्मावती तंत्र आधारित

"सर्व सिद्धि प्रदायक महालक्ष्मी साधना शिविर"

एवं

बाधा निवारण दुर्गा साधना
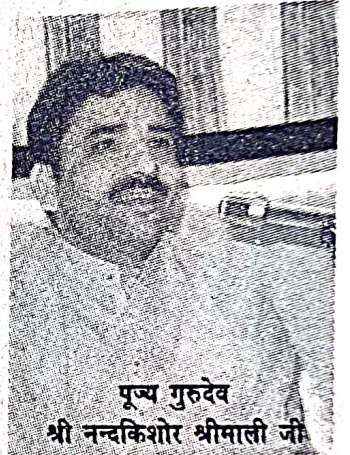
जीवन के ऋण, कष्ट, दुःख, दारिद्र्य, गरीबी एवं पारिवारिक परेशानियों से मुक्ति पाने हेतु महालक्ष्मी एवं महादुर्गा के समन्वित स्वरूप का विशिष्ट साधनात्मक शिविर

समय : प्रातः १० से ५ बजे तक — **शिविर शुल्क - ३३०/-**

स्थानीय सम्पर्क

श्री गणेश वटाणी	०२२-८०५७११	श्री जी. डी. सिंह	०२२-८११०१६०
श्रीमती मंजु मण्डल	०२२-६१०१७८७	डॉ. (श्रीमती) उषा मेहता	०२२-७१२३२४६५८
श्री जसवंत डुमासिया	०२२-४५२४४४	श्री वी. जे. ब्रह्म भट्ट	०२२-६२८६८२१
श्री अनिल पुरोहित	०२२-७१२३२२३३०		

आयोजन स्थल

सीता सिन्धु भवन हॉल, नेहरू रोड, मिड लैण्ड होटल के सामने, टी. पी. एस. रोड - १, राम पंजवानी चौक के बाजू में, गीतांजली कम्पाउण्ड, सांताक्रुज (पूर्व), बम्बई - ४०००५५

प्राण की व्याख्या करते हुए शास्त्रों में कहा गया है— **''प्राण यति जीवन इति प्राणः''** अर्थात् जो प्राणी मात्र के जीवन का आधार बनकर रहता है, वह प्राण है। यह एक ऐसी जीवनी शक्ति है, जो ब्रह्माण्ड के साथ ही साथ मानव शरीर में भी व्याप्त है। इस प्राण के माध्यम से ही मानव का इस ब्रह्माण्ड से अटूट सम्बन्ध है। मानव के भीतर इस प्राण का सम्बन्ध मन से, मन के द्वारा संकल्प शक्ति से, संकल्प शक्ति के द्वारा आत्मा से और आत्मा के द्वारा परमात्मा से है। भौतिक स्तर पर यह स्पन्दन और क्रिया के रूप में दृष्टिगोचर होता है, तो मानसिक स्तर पर इसकी सत्ता विचारों के रूप में है। यह पूरे शरीर को नाड़ियों के द्वारा सक्रिय बनाता है। प्राण को ही दूसरे रूप में जीवन कहा गया है, यदि प्राण बन्द हो जाते हैं, तो यही समझा जाता है कि जीवन समाप्त हो गया है।

सृष्टि में प्राण तत्व

उच्च स्तरीय योगियों के मतानुसार इस जगत की सृष्टि दो पदार्थों से मिलकर हुई है। पहला पदार्थ एक सर्वव्यापी, सर्वानुस्यूत सत्ता है, जिसे आकाश कहा गया है। यह आकाश ही ठोस, द्रव अथवा वायवीय अवस्था में रूपान्तरित होता रहता है, अतः जगत में जो भी वस्तु आकार से युक्त है अथवा कई वस्तुओं के सम्मिश्रण से निर्मित है, वह आकाश से ही उत्पन्न हुई है। यहां तक कि सूर्य, चन्द्र, ग्रह नक्षत्र, तारागण इत्यादि भी आकाश का ही रूपान्तरित स्वरूप हैं। यह आकाश ही वायु रूप में परिणित होता है। समस्त प्राणी चाहे मानव हो अथवा पशु इस आकाश से ही उद्भूत हैं। जो भी वस्तु अनुभवगम्य है, वह आकाश से ही उत्पन्न हुई है परन्तु यह उत्पत्ति कर्ता आकाश, इन्द्रियों की पहुंच से परे है। यह इतना सूक्ष्म है कि हम इसे अनुभव नहीं कर सकते। जब यह स्थूल रूप ग्रहण करता है, तभी जाकर इसकी अनुभूति हो पाती है।

प्रत्येक श्वास के साथ हम आकाश से वायु ही नहीं अपितु आकाश विद्युत भी खींचते हैं। यही विद्युत प्राण है, जिसे संचालित कर मानव ईश्वरीय संदेशों को भी सुन सकता है, देख सकता है और समझ सकता है। साथ ही साथ ब्रह्माण्ड की उन सूक्ष्म तरंगों से सम्बन्ध जोड़ सकता है, जिनके माध्यम से विश्वव्यापी हलचलें होती हैं। कैसे सम्भव होती है यह अद्भुत प्रक्रिया? आइये देखते हैं. . .

अब प्रश्न यह उठता है कि यह सृजन क्षमता आकाश को कहां से प्राप्त होती है? योगियों ने इसका समाधान प्रस्तुत करते हुए बताया है कि प्राण ही वह अत्यन्त सर्वव्यापी विक्षेपक शक्ति है, जो जगत की उत्पत्ति का कारण बनती है। इस शक्ति के प्रभाव से ही आकाश विभिन्न प्रकार की परिदृश्यमान साकार वस्तुओं को जन्म देने में समर्थ हो पाता है। सृष्टि के आदि और अंत में जिस प्रकार ठोस, तरल व वाष्पीय पदार्थ आकाश रूप में परिणत हो जाते हैं, उसी प्रकार जगत की समस्त शक्तियां भी प्राण में विलीन हो जाती हैं।

प्राण का स्वरूप

प्राण एक सार्वभौम ऊर्जा है गुरुत्वाकर्षण शक्ति, विद्युत, शारीरिक क्रियाकलाप, विचार शक्ति आदि प्राण के ही रूप हैं। विचारों जैसी अमूर्तता हो, चाहे शारीरिक श्रम जैसी मूर्तता — सभी प्राण के ही प्रकटीकरण हैं। मानव में अति सामान्य बाह्य शक्ति से लगाकर उच्च स्तरीय विचार शक्ति तक सभी कुछ प्राण ऊर्जा की ही अभिव्यक्ति है। गतिशीलता भी प्राण का ही विकास है। चुम्बकीय अथवा गुरुत्व शक्ति भी प्राण का ही व्यक्त स्वरूप है। शरीर के भीतर भी यह प्राण हमारे स्नायविक शक्ति प्रवाह अथवा आन्तरिक क्रियाओं के रूप में क्रियाशील रहता है। यहां तक कि सृष्टि के अंत में भी यह प्राण विद्यमान रहता है, परन्तु इसकी बाह्य गतियां अवरुद्ध रहती हैं, पुनः दूसरे कल्प में इसकी शक्तियां व्यक्त होकर आकाश तत्व पर क्रियाशील हो जाती हैं, उसे नाना प्रकार के रूपों में परिवर्तित करती रहती हैं।

प्राण की महत्ता

माण्डूक्योपनिषद् में प्रश्न है—

"कस्मन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति?

अर्थात् वह क्या है, जिसे जान लेने पर व्यक्ति सर्वज्ञ हो जाता है?

योगीजन इसका उत्तर इस प्रकार देते हैं कि प्राण को समझ लेने पर ही व्यक्ति के लिए सर्वज्ञ होने की सम्भावना है, क्योंकि प्राण ही वह अमूर्त तत्व है, जिसमें सम्पूर्ण जगत को अखण्ड निरपेक्ष सत्स्वरूप में अभिव्यक्त किया गया है। यदि व्यक्ति ज्ञान-लाभ के लिए एक-एक विषय को जानने का प्रयास करे तो वह रेत कणों की भांति गिनता ही रह जाएगा, इस जगत के तत्व को जानने में अनन्त समय लग जाएगा, परन्तु जो मात्र प्राण को पकड़ लेगा, वह बाह्य व अन्तर्जगत की समस्त शक्तियों को प्राप्त कर लेगा। इसीलिए जो योगी अपने प्राण पर विजयी होते हैं, वे स्वयं के साथ-साथ दूसरों के मन पर भी विजय पा लेते हैं। यहां तक कि वे दूसरों की देह पर भी अधिकार कर लेते हैं, क्योंकि समस्त शक्तियों को इस प्राण में ही सामान्यीकृत किया गया है।

प्राण को वश में करने में व्यक्ति यदि सफल हो जाए, तो विश्व की ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो उसके अधीन न हो सके। ग्रह नक्षत्र भी उसके संकेत पर गतिशील होते हैं। प्रकृति की ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो उसकी आज्ञा न पालन करे, यहां तक कि देवगण भी उसके वशीभूत हो जाते हैं। मृत व्यक्ति भी उसके आह्वान पर उपस्थित हो जाते हैं।

अतः प्राण को वश में करने में व्यक्ति यदि सफल हो जाए, तो विश्व की ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो उसके अधीन न हो सके। ग्रह नक्षत्र भी उसके संकेत पर गतिशील होते हैं। प्रकृति की ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो उसकी आज्ञा न पालन करे, यहां तक कि देवगण भी उसके वशीभूत हो जाते हैं। मृत व्यक्ति भी उसके आह्वान पर उपस्थित हो जाते हैं। सृष्टि के क्षुद्रतम परमाणु से लेकर वृहत्तम सूर्य तक सभी उसके सेवक बन जाते हैं, और ऐसा होता ही है क्योंकि उस सिद्ध योगी ने प्राण पर विजय प्राप्त कर ली है।

प्राण पर संयम

विश्व की समस्त साधना पद्धतियों में कोई न कोई उपाय अपनाकर इस प्राण तत्व पर विजय पाने की चेष्टा की जाती है। संसार के सभी मत अपने मूल में एक ही शक्ति को लेकर कार्यरत हैं — यह अलग तथ्य है कि वे इस शक्ति के स्वरूप के विषय में कुछ जानते नहीं, पर अनभिज्ञ रहते हुए भी वे इसी प्राण-शक्ति का ही उपयोग कर रहे हैं।

इस साधना का आरम्भ तो स्वयं से ही करना पड़ता है, जो कुछ हमारे निकटमत है, उसे वश में करने की क्रिया करनी पड़ती है। हमारी काया हमारे अत्यन्त समीप है, पर इससे भी समीप हमारा मन है, जो प्राणों के अंश से ही क्रियाशील है। यदि हम इस क्षुद्र प्राण तरंग को वशीभूत कर लें, तो स्वतः ही अनन्त प्राणसमुद्र हमारे अधीन हो जाएगा।

प्राणायाम की भूमिका

मानव शरीर में प्राण का सर्वाधिक स्थूल रूप है फेफड़ों का स्पन्दन। यह स्पन्दन रुक जाए, तो शरीर निष्प्राण हो जाएगा, शरीर के भीतर की सभी शक्तियां शांत भाव धारण कर लेंगी। प्राणायाम का तात्पर्य है फेफड़ों की गति का अवरोध करना, और यह गति हमारी श्वास क्रिया से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है। **यहां पर स्पष्ट होना आवश्यक है कि प्राणायाम श्वास-प्रश्वास की क्रिया नहीं वरन् प्राण रूपी शक्ति ही फेफड़ों को स्पन्दित करती है,** पम्प की भांति वायु को अन्दर खींचती है और इसी शक्ति

को वशीभूत करना ही प्राणायाम है।

फेफड़ों की गति पर नियंत्रण करते ही व्यक्ति धीरे-धीरे अपने शरीर स्थित प्राण की अन्यान्य सभी क्रियाओं पर अधिकार प्राप्त करने लगता है। शरीर की गतियां, वे पेशियां जो अभी उसकी इच्छा के अधीन नहीं हैं, वे सभी पूर्ण रूपेण वश में आ जाती हैं। योगी प्राणायाम के माध्यम से ही अपने शरीर के प्रत्येक अंग को पूरी तरह अपनी इच्छा के अधीन कर लेते हैं, शरीर की सभी पेशियों व स्नायुओं को वे इच्छानुसार ही संचालित करते हैं।

प्राणायाम के दृढ़ अभ्यास से हम अपने मन को विभिन्न प्रकार के स्पन्दनों से युक्त करके दूसरे स्तर के जीवों को पहिचान सकते हैं, उनसे सम्पर्क कर सकते हैं, उनके लोक का समाचार ज्ञात कर सकते हैं, क्योंकि सभी प्राणी एक ही समुद्र के भिन्न-भिन्न अंश मात्र ही हैं। कोई प्राणों के अधिक स्पन्दन से युक्त है, तो कोई कम स्पन्दन से, परन्तु उत्पत्ति तो . . . .

प्राणायाम में श्वास लेते समय सम्पूर्ण शरीर को प्राण से आपूरित करना होता है, देह के सभी अंगों को जीवनी शक्ति से भर दिया जाता है, और इस क्रिया में सफल होने पर शरीर के सभी कष्ट, सभी व्याधियां व्यक्ति के अधीन हो जाती हैं। वास्तव में जब भी शरीर में प्राण संचालन एक ओर अधिक और एक ओर न्यून हो जाता है, तो शक्ति प्रवाह का संतुलन बिगड़ जाता है और इस असंतुलन से ही व्याधि उत्पन्न होती है। यदि कम प्रवाह के क्षेत्र में प्राण का अधिक संचरण कर दिया जाए, तो व्यक्ति निरोगी हो जाएगा। प्राणायाम के अभ्यास से यह ज्ञात करना कठिन नहीं है कि शरीर के किस अंग को जीवनी शक्ति की अधिक आवश्यकता है, और फिर मन उस प्राण के अभाव को पूरा करने में समर्थ हो जाता है।

दिव्य दृष्टि का विकास

मानव पंचेन्द्रिय विशिष्ट प्राणी है, जिसमें प्राणों का कम्पन एक विशेष प्रकार का है और इसीलिए हमारी दृष्टि इस प्राण कम्पन के एक विशेष प्रकार को देखने में ही समर्थ है। प्रकृति के नियमों के अनुसार जो प्राण की एक विशेष अवस्था के स्तर पर पहुंचे हुए हैं, वे एक-दूसरे को तो पहिचान सकते हैं परन्तु स्वयं से उच्च या निचले स्तर के प्राणों को नहीं पहिचान सकते, जिनमें प्राणों का कम्पन हमारे समान है, उन्हीं को हम देख भी सकते हैं, अन्य सभी आत्माएं हमारी दृष्टि से ओझल रहती हैं। प्राणायाम के दृढ़ अभ्यास से हम अपने मन को विभिन्न प्रकार के स्पन्दनों से युक्त करके दूसरे स्तर के जीवों को पहिचान सकते हैं, उनसे सम्पर्क कर सकते हैं, उनके लोक का समाचार ज्ञात कर सकते हैं, क्योंकि सभी प्राणी एक ही समुद्र के भिन्न-भिन्न अंश मात्र ही हैं। कोई प्राणों के अधिक स्पन्दन से युक्त है, तो कोई कम स्पन्दन से, परन्तु उत्पत्ति तो सभी की इस प्राण रूपी उपादान से ही हुई है, अन्तर है तो मात्र स्पन्दन की मात्रा में।

प्राणायाम की विधि

योगियों के मत में स्थूलतर शक्ति की सहायता से ही सूक्ष्मतर शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार क्रमशः सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर शक्ति में प्रवेश करते हुए अन्ततः हम अपने चरम लक्ष्य पर पहुंच जाते हैं। प्राणायाम के माध्यम से भी फेफड़ों की स्थूल गति का नियमन करके ही हम सूक्ष्मतर गतियों को भी वश में ले सकते हैं।

प्राणायाम साधना की प्रथम क्रिया के लिए मेरुदण्ड को सीधा रखते हुए सुखासन में बैठें। वक्षस्थल, ग्रीवा और मस्तक तीनों एक सीध में होने चाहिए। अब निर्दिष्ट परिमाण में श्वास भीतर भरें और निर्दिष्ट परिमाण में श्वास बाहर निकालें। कुछ दिनों तक इस अभ्यास से शरीर को संतुलित बनाने के पश्चात श्वसन क्रिया के समय ओऽम्कार (ॐ) का मानसिक उच्चारण करते रहें। यह कल्पना करें कि ओऽम्कार शब्द श्वास के साथ लय युक्त व संतुलित रूप से बाहर व भीतर आवागमन कर रहा है। इस प्राणायाम का कुछ दिन अभ्यास करने पर पूरा शरीर लय युक्त प्रतीत होगा। मुखमंडल की कठोरता सौम्यता में परिवर्तित हो जाएगी तथा कंठ भी मधुर हो जाएगा।

प्राणायाम की दूसरी क्रिया के लिए अंगूठे से दाहिना नासा द्वार बंद करके बांए नासा द्वार से धीरे-धीरे श्वास अन्दर भरें। अब दोनों नथुने बंद करके मन को मूलाधार में एकाग्र करें और उस स्नायु प्रवाह को कुछ क्षणों के लिए धारण किए रहें। अब दाहिने नासा द्वार से श्वास बाहर निकालें। इसी क्रिया को दूसरे नासा द्वार से भी दोहरायें। चार सेकेण्ड से आरम्भ करके यह अभ्यास धीमे-धीमे बढ़ाएं।

प्राणायाम की तीसरी क्रिया करने के लिए धीरे-धीरे श्वास भीतर खींचें, फिर तनिक भी विलम्ब किए बिना धीरे-धीरे वायु रेचन करके, श्वास को बाहर ही कुछ देर के लिए अवरुद्ध करके रखें।

इन तीनों क्रियाओं को करने से सर्वप्रथम तो शरीर और मन स्थिर हो जाते हैं तथा आगे अभ्यास करने पर कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है। उसके पश्चात् तो साधक के लिए सारी प्रकृति ही नया रूप धारण कर लेती है, ज्ञान के नए द्वार खुल जाते हैं तथा चित्त उच्च से उच्चतर भूमि पर उठता हुआ अति चेतन अवस्था को प्राप्त कर लेता है। ◆

कुछ गोपनीय टोटके जो आश्चर्यजनक हैं

टोटका शब्द से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं होती, यद्यपि वर्तमान में 'टोटका' शब्द घृणित और भयास्पद अर्थों में लिया जाने लग गया है। इसे मूठ के समान पीड़ा पहुंचाने वाला अथवा रोग, शोक, मृत्यु देने वाला उपाय मात्र मान लिया गया है, जो सर्वथा गलत है। **टोटका से तात्पर्य उन उपायों से होता है जिनके माध्यम से कोई भी बड़ा से बड़ा कार्य सहज रूप में किया जा सके।** ऐसे अनगिनत टोटकों की खोज वास्तव में उस समय और उन लोगों द्वारा की गई जिन्हें हम आज की परिभाषा में असभ्य व अविकसित समझते हैं, किन्तु वे प्रकृति के अत्यंत समीप होने के कारण अपने व्यवहार में ऐसी कई वस्तुओं से परिचित हुए, जिनके माध्यम से प्रकृति पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

उस युग में वैज्ञानिक उपकरणों का निर्माण नहीं हुआ था किन्तु वे इन्हीं टोटकों की सहायता से अपने जीवन को सहज व सुगम बनाने में तत्पर रहते थे और आश्चर्यजनक रूप से सफलता भी प्राप्त करते थे। यह अवश्य हुआ कि मूल भावना को त्याग कर अनेक स्थानों पर इसका दुरुपयोग भी हुआ, क्योंकि जिस उपाय द्वारा वर्षा का या मेघ का स्तम्भन किया जा सकता है, उसी में किंचित परिवर्तन कर किसी का मुख स्तम्भन भी किया जा सकता है, किन्तु इससे साधक अपवित्र नहीं कहा जा सकता। एक दुष्ट प्रवृत्ति का व्यक्ति चाकू से घाव पहुंचाने का कार्य करता है, जबकि एक चिकित्सक उसी के माध्यम से प्राण बचाने का।

आश्चर्य तो इस बात से होता है कि कैसे उन व्यक्तियों ने अपनी गहरी सूझ-बूझ से न केवल एक से बढ़कर एक उपाय ही खोजे वरन् बिना किसी यंत्र अथवा उपकरण के, सर्वथा प्राकृतिक व घरेलू साधनों से जीवन की उन विसंगतियों के हल ढूंढ निकाले, जिनकी ओर सामान्यतः ध्यान भी नहीं जाता।

आज के युग में जो क्षेत्र समाज से कटे हुए हैं, वहां के निवासियों अर्थात् आदिवासियों के पास ऐसे टोटकों का गहन ज्ञान छिपा हुआ है, और जो इसके माध्यम से सम्पूर्ण साधना का फल देने में सक्षम हैं, ऐसे ही अचूक टोटकों में से कुछ टोटके दीपावली के अवसर पर मैं यहां प्रस्तुत कर रहा हूं, क्योंकि दीपावली की रात्रि इनको सिद्ध करने की अचूक रात्रि या मुहूर्त जो मानी गई है—

१. घर के छोटे बच्चे अत्यंत संवेदनशील होने के कारण अनेक दूषित प्रभावों से ग्रस्त होकर कमजोर पड़ते चले जाते हैं और डॉक्टरों की कोई कारण समझ में नहीं आता, ऐसी दशा में दीपावली की रात्रि में **एक सिद्ध बजरंग विग्रह** लेकर उनके सिर पर से घुमाकर दक्षिण दिशा में फेंक आना चाहिए।

२. बहुधा घर-परिवार का कोई बड़ा सदस्य भी यदि अनायास ज्वर में ग्रस्त रहता है या कोई ऐसा रोग घेर लेता है जिससे उसके चेहरे से मुस्कान चली जाती है, तब दीपावली की रात्रि में एक मंत्र-सिद्ध **तांत्रोक्त फल** उसके गले में धारण करा देना लाभदायक रहता है।

३. मूठ प्रयोगों की समाप्ति के लिए दीपावली की रात्रि से अन्य सबल कोई मुहूर्त ही नहीं। साधक को चाहिए कि वह एक मुट्ठी उड़द के दानों पर **दस हकीक पत्थर** रख निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण करे और दसों हकीक पत्थर सहित उड़द के दानों को घर से कहीं दूर फेंक आए।

मंत्र

ॐ ह्रीं फट्

४. दीपावली की रात्रि में जहां व्यवसायी वर्ग के साधक लक्ष्मी-गणेश पूजन आदि सम्पन्न करते हैं, वहीं उन्हें चाहिए कि एक **गौरी-शंकर रुद्राक्ष** लेकर उसका पूजन निम्न मंत्र से कर अपने व्यवसाय स्थल पर स्थापित कर दें, जिससे पूरे वर्षभर के लिए निरापद हो सकें।

मंत्र- **ॐ क्रीं श्रीं फट्**

अगले वर्ष पुनः यही प्रयोग नए गौरी-शंकर रुद्राक्ष के साथ सम्पन्न करें एवं पुराना विसर्जित कर दें।

५. मध्य प्रदेश एवं उड़ीसा में सिद्धि फल नामक एक अनोखी वनस्पति प्राप्त होती है, जिसका उपयोग स्थानीय निवासी कई प्रकार से करते हैं, ये अपने नाम के ही अनुरूप सिद्धि प्रदायक होते हैं। यदि दीपावली की रात्रि में **आठ सिद्धि फल** लक्ष्मी के चित्र के आगे चढ़ा दिए जाएं तो अंष्ट लक्ष्मी साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

६. इसी प्रकार चिरमी के दानों से उत्तर भारत का कौन व्यक्ति परिचित नहीं, किन्तु इसके तांत्रोक्त लाभ भी हैं। यदि **चिरमी के सात दाने** लेकर घर या दुकान के आगे दीपावली की रात्रि में बिखेर दें, तो प्रत्येक प्रकार की आकस्मिक बाधा समाप्त होती ही है।

७. चिरमी वशीकरण में भी सहायक पदार्थ है। यदि सात चिरमी के दानों को सामने रख दीपावली की रात्रि में निम्न मंत्र द्वारा मंत्र-सिद्ध कर लें और सम्बन्धित व्यक्ति के घर के बाहर बिखेर आएं तो उसका पूर्ण वशीकरण हो जाता है।

मंत्र

ॐ ह्रौं नमः

८. वशीकरण के क्षेत्र में **नीलम रत्न** की विशेषता भी स्वयं सिद्ध है, यदि कोई साधक इस रत्न की अंगूठी धारण कर ले, तो उससे मिलने वाले स्वतः ही सम्मोहित होने लग जाते हैं।

९. यदि किसी स्त्री को गर्भ ठहरता हो किन्तु बार-बार गर्भपात हो जाता हो या आशंका हो कि गर्भ बंधन प्रयोग किसी ने द्वेषवश करवा दिया है, तब **कुटिला** नामक गुटिका उसकी कमर में काले धागे के साथ बांध देनी चाहिए।

१०. समस्त प्रकार के स्त्री रोगों की शांति के लिए स्त्री को **मूंगा माला** धारण करना अनेक प्रकार से लाभदायक रहता है।

११. एक **मधुरूपेण रुद्राक्ष** लेकर, नीले कपड़े पर काजल से शत्रु का नाम लिख, उसके साथ नीले धागे से बांध कर श्मशान में अथवा निर्जन स्थान पर फेंक आने से शत्रु संकट में लाभ मिलता है।

१२. मोती शंख अपने-आप में लक्ष्मी का प्रतीक माना गया है। दीपावली की रात्रि में एक **मोती शंख** लेकर, उसे केसर से रंग कर तिजोरी में रखना शुभ माना गया है।

१३. कार्यालय में सहयोगियों से न बन रही हो अथवा अधिकारी वर्ग रुष्ट हो तब दीपावली की रात्रि में एक **समुखी** के समक्ष निम्न मंत्र का ग्यारह बार उच्चारण कर गले में धारण करने से मनोवांछित लाभ मिलता है।

मंत्र

ॐ ग्लौं नमः

१४. यदि दीपावली की रात्रि में **एक चक्री** लेकर उसे दीपक की भांति प्रयोग करें अर्थात् उसमें घी भरकर दीपक जला कर मुख्य द्वार पर स्थापित करें, तो लक्ष्मी का निश्चित आगमन होता है।

१५. मुकदमेबाजी आदि राज्य संकटों में धन का अत्यधिक व्यय होते रहने पर दीपावली की रात्रि में **एक उग्र शंख** लेकर अपनी समस्या एक कागज पर लिख कर, उसके साथ बांध कर किसी नदी, तालाब या कुंए में डाल देने पर छुटकारा मिलता ही है।

१६. यदि उग्र शंख पर सिन्दूर से शत्रु या मूठ प्रयोग करने वाले का नाम लिख उसके घर की दिशा में फेंक दिया जाय तो उसका सर्वनाश हो जाता है।

१७. दीपावली की रात्रि में कुंकुम से पीले कपड़े पर निम्न प्रकार से यंत्र बनाकर प्रत्येक में एक-एक **श्री चक्र** स्थापित करें तथा घर के प्रत्येक सदस्य को उसका दर्शन करने को कहें, तो आगामी वर्ष मंगलमय होता है।

यंत्र

नि	ह	उ
स	ति	व

१८. एक **चीलन** लेकर उसे दीपावली की रात्रि में घर की चौखट के ऊपर बांधना, पूरे वर्ष भर के लिए अपने-आप को सुखी कर लेना है।

१९. किसी विशेष व्यक्ति या किसी विशेष दशा से मन में भय रहता हो, तो **चीलन** ले कर, उसे काले कपड़े में बांध कर गले में धारण करना पूर्णतया लाभदायक रहता है।

२०. कैसी भी लक्ष्मी साधना हो, यदि गले में **शंख माला** धारण कर सम्पन्न की जाए, तो आश्चर्यजनक सफलता मिलती ही है।

२१. एक **ज्योति चक्र** सामने रख दीपावली की रात्रि में **'ॐ मदन कामदेवाय फट् स्वाहा'** मंत्र का १०८ बार उच्चारण कर धारण करने से पूर्ण पौरुष सुख प्राप्त होता है।

राशिफल

मेष - मन में एकाएक किसी अनुकूलता के कारण हर्षोल्लास उत्पन्न होगा। जीवन में नवीन व सुखद मोड़ इसी माह के प्रारम्भ में आने के प्रबल आसार हैं। पारिवारिक मेल-मिलाप का वातावरण रहेगा तथा परिवार के सदस्यों से विचारों का तालमेल स्थापित होगा। स्वास्थ्य में अपेक्षित सुधार आएगा। धन-सम्पत्ति सम्बन्धी मामलों का निपटारा होगा। संतान सुख की दृष्टि से भी यह एक श्रेष्ठ माह है। जमा पूंजी की वृद्धि हेतु किए जा रहे प्रयास सफल नहीं होंगे। शत्रु पक्ष शांत रहेगा। यात्राएं मध्यम फलदायक ही कही जा सकती हैं। माह के प्रारम्भ से प्राप्त हो रही अनुकूलता के उत्साह में एकाएक कोई बहुत बड़ा निर्णय न लें। मनोबल व समस्या के समाधान के लिए नियमित गणपति साधना करें।

वृषभ - स्वास्थ्य की दृष्टि से यह एक कष्टप्रद माह है। शारीरिक पीड़ा, ज्वर आदि का प्रकोप पूरे माह बना रहेगा। गंभीर रोगों से ग्रस्त रोगियों को भी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। व्यवसाय में साख बढ़ेगी। जमा पूंजी की वृद्धि होने के संकेत हैं। पारिवारिक सुख प्राप्त होगा किन्तु पत्नी से विचारों में तालमेल का अभाव रहेगा। स्वास्थ्य के कारण कई महत्वपूर्ण कार्य बीच में रह जाएंगे। किसी गुप्त चिंता का अंत होगा। अधीनस्थ वर्ग एवम् मित्र पूर्ण सहयोगी सिद्ध होंगे। मनोबल बना रहेगा राज्य पक्ष से किंचित खेद सम्भव। अधिकारी वर्ग द्वारा भी कष्ट संभावित।

मिथुन - धनोपार्जन की दृष्टि से एक श्रेष्ठ माह। जमा पूंजी में भी पर्याप्त वृद्धि होने से मन में प्रसन्नता रहेगी। परिवार के संग आनन्द के अनेक क्षण उत्पन्न होंगे। किसी दूरस्थ एवं मनोरंजक स्थान की सपरिवार यात्रा व आमोद-प्रमोद भी सम्भावित। पत्नी के स्वास्थ्य के कारण मन में कुछ क्षोभ उत्पन्न हो सकता है। राज्य पक्ष की ओर से स्थितियां आपके पक्ष में निर्मित होंगी। मित्र वर्ग ईर्ष्यालु एवं अनुदार सिद्ध होगा। पड़ोसियों से सम्बन्ध यथासम्भव मधुर बनाए रखें। द्वेषवश अनावश्यक वाद-विवाद एवं कटुता की स्थितियां उत्पन्न की जा सकती हैं। शत्रु पक्ष हताश होगा। स्वास्थ्य में पुष्टता आएगी। कर्त्तव्य पालन के प्रति मन में उपेक्षा का भाव रहेगा।

कर्क - किसी द्वंद्व अथवा गुप्त चिंता के कारण मन में खिन्नता बनी रहेगी। अव्यवहारिक चिंतन की प्रमुखता रहेगी तथा दिवा स्वप्नों में ही माह का अधिकांश समय व्यतीत होगा। स्नायविक दौर्बल्य अथवा नर्वस ब्रेक डाउन जैसी स्थिति भी सम्भावित। मित्र वर्ग अथवा परिवार के सदस्यों से भी समस्या का कोई समाधान नहीं मिलेगा। आय का निश्चित स्रोत बना रहेगा। एकांतवास की प्रवृत्ति का प्रयास पूर्वक त्याग करें। प्रेम-प्रसंगों में प्रगाढ़ता की स्थिति से बचें अन्यथा लोक निन्दा का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु पक्ष घात पहुंचाने की चेष्टा करता रहेगा।

सिंह - मनोवांछित कार्यों को पूर्णता देने में सभी ओर से सहयोग मिलेगा। नेतृत्व की क्षमता का विकास होगा तथा लोगों में सहर्ष आपकी बात मानने की स्थिति दिखेगी। जमा पूंजी में बढ़ोत्तरी होने की कोई आशा नहीं है। धनागम श्रेष्ठ रहेगा किन्तु उसी अनुपात में विभिन्न कार्यों में नियोजित भी होता चला जाएगा, जिसका भविष्य में लाभ मिलेगा। परिवार की ओर ध्यान कम दे पाएंगे किन्तु परिवार की ओर से पूर्ण सहयोग रहेगा। शत्रु अहित करने में असफल रहेंगे, किन्तु मित्र रूपी गुप्त शत्रु साख को बिगाड़ने की पूरी-पूरी कोशिश करते रहेंगे। यात्राओं की इस माह बहुलता रहेगी और प्रत्येक यात्रा से कुछ न कुछ अंर्जित ही करेंगे। तीसरे सप्ताह में कार्यों की अधिकता से स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है।

कन्या - विविध मानसिक द्वंद्वों की अधिकता रहेगी। व्यक्तित्व में हीन भावना बढ़ेगी। पारिवारिक सुख नहीं के बराबर रहेगा। पुत्र की उपेक्षा से मन में क्षोभ उत्पन्न हो सकता है। सूझ-बूझ से काम लेने पर ही स्थितियों पर नियंत्रण स्थापित हो सकेगा। स्वयं को उत्तेजना से बचाने का पूर्ण प्रयास करें अन्यथा स्वास्थ्य पर भी गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। पारिवारिक विवादों में बाह्य व्यक्तियों का सहयोग एवं सलाह न लें। पड़ोसियों से कूटनीति पूर्ण व्यवहार ही सफलतादायक रहेगा। आय की स्थिति संतोषजनक कही जा सकती।

तुला - मनोवांछित कार्य में सफलता-प्राप्ति संदिग्ध ही कही जा सकती है। पूरे माह मानसिक रूप से किसी विशेष लक्ष्य के लिए चिंतातुर रहेंगे। स्वास्थ्य में अतिरिक्त सुधार व निखार आएगा। मन में सामान्य रूप से उत्साह व उमंग की प्रधानता रहेगी। धन-प्राप्ति की दिशा में किए जा रहे प्रयासों में मध्यम स्तर की ही सफलता प्राप्त होगी। प्रेम-प्रसंग के लिए मन विशेष आतुर रहेगा। परिवार के सदस्यों का सहयोग बस यूं ही रहेगा। मित्र वर्ग सहयोगी सिद्ध होगा। यात्राएं लाभप्रद कही जा सकती हैं। शत्रु पक्ष द्वेष पूर्ण कार्यवाही कर सकता है, अतः सावधान रहें।

वृश्चिक - मन में हिंसक भावनाओं का अतिरेक रहेगा। बात-बात पर झुंझला जाने की प्रकृति बलवती होगी। असंयमित व्यवहार के चलते कष्ट भी उठाना पड़ सकता है। दस तारीख के बाद चोट-चपेट की दृष्टि से सावधान रहें। पत्नी का सहयोग महत्वपूर्ण रहेगा, उसकी उपेक्षा न करें। संतान की ओर से विशेष सुख प्राप्त होगा। किसी अधूरे कार्य की पूर्ति में भी गति आएगी। धनागम श्रेष्ठ रहेगा। यात्राएं मध्यम फलदायक ही कही जा सकती हैं। राज्य पक्ष की ओर से कष्ट सम्भावित, अतः सावधान रहें।

धनु - अपने कार्य में रुचि लेंगे। चहुं ओर विकास की स्थितियां बनती दिखाई देंगी, उनका सदुपयोग कर पाना आपके पुरुषार्थ पर ही निर्भर करता है। पारिवारिक जीवन के प्रति अतिरिक्त मोह का त्याग करना आवश्यक। भावनाओं के स्थान पर व्यवहारिकता को प्रश्रय देने से ही इस माह का लाभ उठा पाएंगे। जीवन में आमोद-प्रमोद के अनेक अवसर इस माह उपलब्ध होंगे। प्रेम-प्रसंगों में सघनता व अनुकूल मोड़ आएगा। शेयर मार्केट में यदि रुचि हो तो बहुत बड़ी रकम के साथ प्रवेश न करें। स्व निर्णय द्वारा ही उचित निष्कर्ष पर पहुंचने से भविष्य में भी लाभ होगा। यात्राएं असफल सिद्ध होंगी।

मकर - जीवन में स्वामित्व आएगा। पिछले कुछ माह से चली आ रही सामाजिक व्यस्तता समाप्त होकर व्यक्तिगत जीवन के पक्षों पर ध्यान केन्द्रित कर सकेंगे। यद्यपि अन्तःमन पुनः-पुनः सक्रिय एवं सामाजिक जीवन की ओर खिंचता रहेगा, दोनों में संतुलन बैठाने की आवश्यकता रहेगी। पत्नी से वैचारिक सहयोग एवं घनिष्ठता प्राप्त होगी। दाम्पत्य जीवन में अतिरिक्त मधुरता आएगी। दूरस्थ यात्राएं एवं परिवार के सदस्यों से मेल-मिलाप के क्षण उपस्थित होंगे। कोई निर्माण कार्य भी प्रारम्भ हो सकता है।

कुंभ - शत्रु पक्ष सबल होगा तथा गुप्त घात के द्वारा मान-सम्मान पर आघात करने की प्रबल चेष्टा करेगा। मित्र वर्ग बहुत अधिक विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। स्व विवेक से कार्य करते हुए ही स्थितियों के समाधान का उपाय ढूंढें। अधिकारी वर्ग एवं राज्य पक्ष पूर्ण सहयोगी सिद्ध होगा। मुकदमेबाजी में धन आदि व्यय होने से मन में खिन्नता रहेगी। परिवार के सदस्यों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। माह के प्रथम सप्ताह के उपरांत स्थितियों की विपरीतता में शनैः-शनैः कमी आती जाएगी। यात्राएं पूर्णरूप से सफल सिद्ध होंगी। इस माह किसी विशेष योजना, कार्य या धन निवेश को हाथ में न लें।

मीन - मनोमालिन्य बना रहेगा। स्वास्थ्य के निरंतर उतार-चढ़ाव से खेद उत्पन्न हो सकता है। परिवार के सदस्यों से उपेक्षा प्राप्त होगी तथा सामाजिक रूप से भी बिखराव का सामना करना पड़ेगा। धन के स्रोत पर किसी कारणवश व्यवधान आ जाने के कारण जमा पूंजी को भी व्यय करने की स्थिति बन सकती है। सरकारी सेवा में सेवारत व्यक्तियों को ट्रांसफर सम्बन्धी कष्ट का भी सामना करना पड़ सकता है। पत्नी के स्वास्थ्य की हीनता अतिरिक्त चिंता का कारण बन सकती है।

❋

व्रत पर्व एवं त्यौहार

६.१०..९४	आश्विन शुक्ल प्रतिपदा	शारदीय नवरात्रि प्रारम्भ
९.१०.९४	आश्विन शुक्ल पंचमी	ललिता पंचमी
११.१२.९४	आश्विन शुक्ल सप्तमी	महासरस्वती पूजन
१२.१०.९४	**आश्विन शुक्ल अष्टमी**	**दुर्गा अष्टमी**
१४.१०.९४	आश्विन शुक्ल दशमी	विजयादशमी पूजन
१७.१०.९४	आश्विन शुक्ल त्रयोदशी	गुरु सिद्धि दिवस
१९.१०.९४	**आश्विन पूर्णिमा**	**शरद पूर्णिमा**
२२.१०.९४	कार्तिक कृष्ण तृतीया	तारा जयन्ती
२३.१०.९४	कार्तिक कृष्ण चतुर्थी	करवा चौथ
२७.१०.९४	कार्तिक कृष्ण अष्टमी	गुरु पुष्य अमृत सिद्धियोग
३१.१०.९४	**कार्तिक कृष्ण एकादशी**	**धन्वन्तरी जयन्ती**
०१.११.९४	कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी	धन त्रयोदशी
०२.११.९४	कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी	हनुमान जयन्ती
०३.११.९४	**कार्तिक अमावस्या**	**श्री महालक्ष्मी पूजा, दीपावली**
०४.११.९४	**कार्तिक शुक्ल पक्ष १**	**अन्नकूट गोवर्धन पूजा**
०५.११.९४	कार्तिक शुक्ल पक्ष २	भाई दूज
०८.११.९४	कार्तिक शुक्ल पक्ष ६	सूर्य षष्ठी (डाला छठ)
१५.११.९४	कार्तिक शुक्ल पक्ष १३	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
१९.११.९४	मार्ग शीष कृष्ण पक्ष १	सर्वा. अमृत सिद्धि योग
२४.११.९४	मार्ग शीष कृष्ण पक्ष ६	गुरु पुष्य सर्वा. अमृत सिद्धि योग
२६.११.९४	**मार्ग शीष कृष्ण पक्ष ८**	**श्री कालभैरव अष्टमी**
२९.११.९४	मार्ग शीष कृष्ण पक्ष ११	उत्पत्ति एकादशी
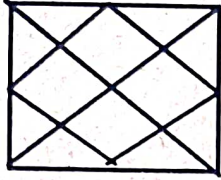
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

कु० सुमन शर्मा, कांगड़ा
प्रश्न— **सरकारी नौकरी मुझे कब तक मिलेगी?**
उत्तर— सरकारी नौकरी की प्राप्ति संदिग्ध है।

अवध बिहारी दुबे, होशंगाबाद
प्रश्न— **पदोन्नति कब तक होगी?**
उत्तर— प्रबल तांत्रोक्त प्रयोग के कारण वर्तमान में सम्भावित नहीं।

राजेन्द्र प्रसाद पाठक, उज्जैन
प्रश्न— **नौकरी सम्बन्धी विवाद का क्या होगा?**
उत्तर— निर्णय आपके पक्ष में नहीं।

पवन कुमार गढ़पाले, बस्तर
प्रश्न— **क्या मैं शिक्षक बनूंगा?**
उत्तर— हां।

गंगादास एन० पटेल, डोडबालापुर (कर्नाटक)
प्रश्न— **किस व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी?**
उत्तर— वर्तमान व्यवसाय के साथ-साथ ऑयल मिल भी प्रारम्भ करें।

रणजीव सिंह, मोगा
प्रश्न— **आर्थिक रूप से सफलता किस क्षेत्र में मिलेगी?**
उत्तर— अपना लघु इंजीनियरिंग का कार्य करें।

डॉ० कमलेश कुमार वर्मा, बलिया
प्रश्न— **मेरा दवा का व्यापार व प्रैक्टिस नहीं चल रही।**
उत्तर— विघ्नदोष निवारणार्थ कुबेर यंत्र स्थापित करें।

संजय कुमार वर्मा, धनबाद
प्रश्न— **क्या मैं प्रथम श्रेणी में पास होऊंगा?**
उत्तर— सम्भावनाएं प्रबल हैं।

अनिल कुमार, जीन्द
प्रश्न— **सरकारी नौकरी कब तक?**
उत्तर— सरकारी नौकरी की सम्भावनाएं कम हैं।

चन्द्रभान सिंह, हमीरपुर
प्रश्न— **मेरी पदोन्नति कब तक होगी?**
उत्तर— पांच वर्ष पश्चात्।

कु० कामना गर्ग, लखनऊ
प्रश्न— **क्या मेरा पी० सी० एस० में चयन हो जायेगा?**
उत्तर— हां। किन्तु अगले वर्ष कठोर परिश्रम के उपरान्त।

रामकुमार शर्मा, रायगढ़
प्रश्न— **आर्थिक स्थिति में सुधार कब तक?**
उत्तर— इसी वर्ष, किन्तु पूर्ण लाभ हेतु भुवनेश्वरी साधना अवश्य करें।

सौ० मैना यावलकर, मनमाड
प्रश्न— **पुत्री के विवाह हेतु उपाय बताएं।**
उत्तर— मार्च अंक में प्रकाशित मनोकामना प्रयोग सम्पन्न करें।

ओ० पी० श्रीवास्तव, बस्ती
प्रश्न— **पूर्ण आर्थिक लाभ किस प्रकार से होगा?**
उत्तर— उचित मार्ग प्राप्ति हेतु भुवनेश्वरी साधना करें।

नौराज निरौला, दार्जिलिंग
प्रश्न— **क्या नौकरी मिलेगी अथवा स्वयं व्यवसाय करूंगा?**
उत्तर— स्व-व्यवसाय ही लाभप्रद रहेगा।

दुर्गादत्त तिवारी, भागलपुर
प्रश्न— **आर्थिक अभाव कैसे दूर करूं?**
उत्तर— वैचाक्षी साधना (अगस्त ९३) सम्पन्न करें।

प्रदीप कुमार मिश्र, मुंगेर
प्रश्न— **अनिद्रा रोग हेतु क्या करूं?**
उत्तर— **"हस्ट हकीक"** नित्य सिरहाने रख कर सोएं।

प्रमील कुमार, चण्डीगढ़
प्रश्न— **मुकदमे का निर्णय कब तक और किसके पक्ष में?**
उत्तर— इसी वर्ष के अंत तक किन्तु आपके पक्ष में नहीं।

रजनीकांत कामवार, कच्छ
प्रश्न— **नौकरी या व्यवसाय क्या करूं?**
उत्तर— नौकरी।

मिश्रीलाल शर्मा, वैशाली
प्रश्न— **आर्थिक स्थिति कब तक सुधरेगी?**
उत्तर— वर्तमान में सम्भव नहीं। निवारण हेतु अष्टलक्ष्मी प्रयोग करें।

हरविंदर कुमार, लुधियाना
प्रश्न— **मुझे किस साधना में सफलता मिलेगी?**
उत्तर— वीर साधना में।

अमित भोला, दिल्ली
प्रश्न— **मन पढ़ाई में नहीं लगता, उपाय बताइए?**
उत्तर— सरस्वती यंत्र धारण करें।

अनन्त वानखेड़े, बिलासपुर
प्रश्न— **क्या राजनीति में सफलता मिलेगी?**
उत्तर— हां।

सुधा वानखेड़े, बिलासपुर
प्रश्न— **भाग्योदय कब तक? रत्न बताएं।**
उत्तर— भाग्य बाधा प्रबल है, रत्न धारण के स्थान पर भाग्योदय साधना करें।

अजित अनिरूद्ध कांबली, बम्बई
प्रश्न— **मुझे परमानेंट नौकरी कब मिलेगी?**
उत्तर— स्थायी नौकरी मिलने के योग नहीं हैं।

दुल्हराज रायसोनी, बैंगलोर
प्रश्न— **पारिवारिक सुख-शांति के लिए क्या करूं?**
उत्तर— हनुमान साधना।

कृष्ण कुमार शर्मा, भोपाल
प्रश्न— **मेरे लिए व्यापार लाभदायक है या नौकरी?**
उत्तर— नौकरी।

रामकिशोर श्रीवास्तव, सिहोर
प्रश्न— **क्या स्थान परिवर्तन उचित रहेगा?**
उत्तर— स्थान परिवर्तन कदापि न करें। भाग्योदय हेतु सम्बन्धित साधना करें।

कूपन क्रमांक :- १२२ (**कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे**)

नाम :-..

जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्..............

जन्म स्थान .... जन्म समय ....

पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-..

....

आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान कार्यालय
३०६, कोहाट इन्क्लेव, पीतम पुरा,
नई दिल्ली-११००३४

❀ ❀ ❀

कलियुग में भैरव प्रयोग शीघ्र फलदायक माने गए हैं, कहा जाता है कि अन्य देवी-देवताओं की साधना या पूजा आदि सम्पन्न करने पर भी कभी-कभी सफलता में न्यूनता का आभास हो सकता है, परन्तु एक भी भैरव साधना व्यर्थ नहीं गई, क्योंकि तांत्रिक ग्रंथों में भैरव को आपत्ति उद्धारक माना गया है।

जीवन में सैकड़ों प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक साधना अपने-आप में महत्वपूर्ण और सारगर्भित है। साधक अपनी रुचि के अनुसार साधना का चयन करता है और उसमें सफलता प्राप्त करता है। सफलता प्राप्ति के लिए आवश्यक और मूल तथ्य उसकी श्रद्धा है, श्रद्धा के बल पर ही वह अपने उद्देश्य में और अपनी साधना में सफल हो सकता है।

हमारा जीवन संघर्षमय जीवन है, जिसमें पग-पग पर विपत्तियों और बाधाओं का बोलबाला है, यदि हम शांतिपूर्वक जीवन बिताना भी चाहें, तब भी चारों तरफ का वातावरण ऐसा नहीं करने देता।

जीवन में सफलता के लिए यह आवश्यक है कि हम मानसिक रूप से स्वस्थ हों, और किसी प्रकार की टेन्शन या तनाव हमारे मानस में नहीं हो, साथ ही साथ हम इस प्रकार की समस्याओं से दूर रहकर सही प्रकार से चिन्तन कर सकें।

ऐसी स्थिति में साधना पक्ष ही हमारे लिए सहायक हो सकता है, इन साधनाओं में भी आपत्ति दूर करने के लिए भैरव साधना सबसे अधिक सहायक है। **चाहे कोई मुकदमा चल रहा हो, शत्रु से परेशान हों, पति-पत्नी में मतभेद हो, व्यापार में बाधाएं आ रही हों, नौकरी में प्रमोशन नहीं हो या अधिकारियों से मतभेद हो, अथवा सही स्थान पर स्थानान्तरण नहीं हो रहा हो, घर में बीमारी हो, पुत्र सुख न हो, पुत्र की आदतें खराब हों, स्वयं बीमार हो, आर्थिक समस्या हो, या कोई इच्छा अधूरी हो अथवा ऐसी कोई भी आपत्ति हो, तो आपत्ति उद्धारक भैरव प्रयोग सफलतादायक माना गया है।**

इस साधना को कोई भी साधक कर सकता है, इसमें किसी प्रकार की बाधा, भय या समस्या नहीं आती या किसी प्रकार की कोई कठिनाई भी उसको देखनी नहीं पड़ती, यह एक प्रकार से सौम्य साधना है, और किसी भी वर्ण का गृहस्थ या संन्यासी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साथ ही साथ इस साधना की यह भी विशेषता है, कि इसमें कम-से-कम उपकरणों की जरूरत पड़ती है, और किसी प्रकार की कोई जटिल विधि नहीं है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, इस साधना के द्वारा पति को नियंत्रित किया जा सकता है, यदि उससे मतभेद हों तो दूर किए जा सकते हैं, और पति की दीर्घायु के लिए भी यही साधना सफलतादायक है।

नीचे मैं साधना से सम्बन्धित तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं।

समय

इस साधना को किसी भी महीने से प्रारम्भ किया जा सकता है, परन्तु यह साधना शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार को ही प्रारम्भ की जा सकती है, यह साधना किस दिन समाप्त होती है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, परन्तु शुल्क पक्ष के प्रथम मंगलवार से इस साधना को प्रारम्भ करना जरूरी है।

पूजन सामग्री

साधना प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित सामग्री पहले से ही मंगवाकर रख लेनी चाहिए -- एक किलो चावल, एक मीटर लाल वस्त्र, लकड़ी का एक तख्ता, थोड़ा सा गंधक, तांबे का एक लोटा और एक नारियल।

साधक इस प्रयोग को अपने घर में या अन्य किसी स्थान पर कर सकता है। सर्वप्रथम साधक अपने कमरे में एक लकड़ी का तख्ता जो एक फुट लम्बा और एक फुट चौड़ा हो रखकर उस पर लाल वस्त्र बिछाए तथा उस लाल वस्त्र के चारो कोनों पर चावल की चार ढेरियां तथा एक बीच में ढेरी बना देनी चाहिए।

बीच की ढेरी पर तेल का दीपक रख देना चाहिए, इसमें किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग किया जा सकता है, दीपक के सामने गंधक के पांच टुकड़े लाल वस्त्र पर रखे जाते हैं।

दीपक के पीछे तांबे का लोटा जल भर कर रख दें और उस पर नारियल रख दें।

गंधक के टुकडों के पास मन्त्र सिद्ध संजीवन क्रिया से युक्त **भैरव यन्त्र** स्थापित कर दें, यह यंत्र ताम्र-पत्र पर अंकित होता है, और विशेष संजीवन मुहूर्त में ही इस यन्त्र का निर्माण किया जाता है, इसके बाद विशेष मन्त्रों से इसे मन्त्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठा युक्त किया जाता है, जिससे कि यह यन्त्र पूर्ण सफलतादायक हो जाता है।

यन्त्र का निर्माण अत्यन्त सावधानी पूर्वक किया जाना आवश्यक होता है, इसीलिए पत्रिका पाठकों को सुविधा एवं संरक्षण देने के कारण यन्त्रों का निर्माण पूर्ण विधि-विधान के साथ पत्रिका कार्यालय द्वारा किया जाता है। साधक सम्पर्क स्थापित कर इस प्रकार का आश्चर्यजनक फलप्रदायक भैरव यन्त्र प्राप्त कर सकते हैं।

इसके बाद शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार को प्रातःकाल यह कार्य सम्पन्न कर साधक स्नान करके आसन पर बैठ जाए, साधक का मुंह दक्षिण दिशा की तरफ होना चाहिए और उसके सामने लकड़ी का तख्ता बिछा होना चाहिए, साधक को सूती या ऊनी आसन का प्रयोग करना चाहिए, पर यह आसन लाल रंग का होना आवश्यक है, अथवा आसन को पहले से ही रंगाकर तैयार कर लेना चाहिए।

यदि स्त्री साधक हो तो वह ऋतु धर्म से निवृत्त होने के बाद ही इस साधना को प्रारम्भ करे, इस बात का ध्यान रखे कि साधना काल में वह रजस्वला न हो, यदि ऐसा हो जाता है, तो वह साधना सम्पन्न नहीं मानी जानी चाहिए।

साधक धोती पहिन कर आसन पर बैठे और ऊपर किसी भी प्रकार का वस्त्र न पहिने। वह चाहे तो दूसरी धोती ओढ़ सकता है, या ऊनी कम्बल ओढ़ सकता है।

मंगलवार के दिन प्रातःकाल ७ से ९ बजे के बीच इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है। यह साधना मात्र ७ दिन की है, और नित्य भैरव मन्त्र की ५१ मालाएं फेरनी आवश्यक हैं। इसमें **मूंगे की माला** का ही प्रयोग किया जाना चाहिए, पर यदि उसके पास **स्फटिक माला** हो तो उसका प्रयोग भी किया जा सकता है। इसके अलावा अन्य किसी भी प्रकार की माला का प्रयोग वर्जित है।

प्रयोग

साधक सर्वप्रथम अपने दोनों हाथों को धोकर दाहिने हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करे, अर्थात् उस जल को पीकर अन्तर को शुद्ध करे, इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे—

ॐ ह्रीं बटुकाय श्रीं आपत्ति उद्धारणाय भैरव देवता प्रीतये मम अमुकं कार्य सिद्धयर्थः भैरव प्रयोग महं करिष्ये।

ऐसा कहकर जल छोड़ दें उसके बाद विनियोग करें अर्थात् हाथ में जल लेकर निम्न पंक्ति पढ़ें --

ॐ अस्य श्री आपत्ति उद्धारक भैरव मंत्रस्य,
बृहदारण्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः,
श्री भैरव देवताः, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः,
क्लीं कीलकम्, श्री आपत्ति उद्धारक भैरव प्रीतये जपे विनियोगः।

ऐसा कह कर के हाथ में लिया हुआ जल छोड़ दें।

इसके बाद यन्त्र के सामने हाथ जोड़कर निम्नलिखित ध्यान करें—

ध्यान

त्रिनेत्रं रक्त वर्णं च [illegible] भयहस्तकम्।
सव्ये त्रिशूलमभयं कपालं वरमेव च।।
रक्त वस्त्र परिधानं रक्तमाल्यानुलेपनम्।
नीलग्रीवं च सौम्यं च सर्वाभरण भूषितम्।।

इसके बाद दीपक लगाकर भैरव यंत्र के सामने हाथ में जल लेकर अपनी समस्या या आपत्ति का उल्लेख करें, कि

साधना समाप्त होते-होते मेरा 'अमुक' कार्य सिद्ध एवं सम्पन्न हो जाए।

इसके बाद भैरव यंत्र के सामने दूध का थोड़ा-सा प्रसाद भोग लगाए और लाल रंग के कुछ पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद निम्नलिखित मूल मंत्र का जप करें --

ॐ ह्रीं भैरवाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु भैरवाय ह्रीं ।।

जब इक्यावन मालाएं पूरी हो जाएं तब आसन से उठे, और भैरव यन्त्र का जो भोग लगाया हुआ है वह भोग कुत्ते को खिला दें क्योंकि भैरव का वाहन श्वान ही होता है।

इसके बाद पुनः स्नान कर अपने नित्य कार्य में लगें।

यह साधना सात दिन की है, इन सात दिनों में साधक जमीन पर या लकड़ी के तख्ते पर गद्दा बिछाकर सोए। चारपाई का प्रयोग न करे। स्त्री संग वर्जित है। दिन में एक समय भोजन करे और मांस-मदिरा, आदि का सेवन न करे। यदि साधक धूम्रपान करता हो तो उसे चाहिए कि वह साधना काल में धूम्रपान का प्रयोग न करे।

इस प्रकार ७ दिन पूरे हो जाएं, तो आठवें दिन जब पुनः मंगलवार आए, तब इस मंत्र की एक माला फेरे और भैरव से प्रार्थना करें कि उसने साधना सम्पन्न की है अतः जल्दी से जल्दी उसका कार्य सम्पन्न हो।

इसके बाद किसी एक बालक को अपने घर में भोजन कराए और उसके बाद ही स्वयं भोजन करें।

इस प्रकार साधना सम्पन्न करने पर निश्चय ही साधक की कामना पूरी होती है, और जिस उद्देश्य के लिए उसने साधना प्रारम्भ की है, उसमें सफलता मिलती है।

साधना समाप्ति के बाद साधक लकड़ी के तख्ते पर बिछे हुए चावल, नारियल, लोटा एवं वह कपड़ा किसी गरीब ब्राह्मण को दान कर दे, गंधक दक्षिण दिशा में जाकर गड्ढा खोदकर उसमें दबा दे। लकड़ी के तख्ते का प्रयोग बाद में घर के कार्यों में किया जा सकता है, दीपक को भी दक्षिण दिशा की तरफ जाकर रख देना चाहिए।

यह प्रयोग सामान्य दिखाई देने पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और इस प्रयोग से साधक को पूर्ण सफलता एवं सिद्धि प्राप्त होती है, जिस भैरव यंत्र के सामने साधना की थी, उस यंत्र को अपने घर में किसी पवित्र स्थान पर रख आयें या नदी में विसर्जित कर दें।

वस्तुतः कलियुग में यह साधना गोपनीय, महत्वपूर्ण, श्रेष्ठ, शीघ्र एवं निश्चित रूप से सफलतादायक है। ◆

जीवन रेखा

जीवन रेखा ही हथेली में एक ऐसी रेखा है, जो प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में पाई जाती है। यदि किसी के हाथ में यह रेखा न देखने को मिले तो यह समझना चाहिए कि ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व शून्यवत् है और उस व्यक्ति की जीवन शक्ति का सर्वथा लोप हो गया है। ऐसे व्यक्ति का जीवन किसी भी समय समाप्त हो सकता है। कई बार मंगल रेखा चल कर इस रेखा को बल देती है, कभी-कभी शनि रेखा भी इसे रेखा को बल देती हुई दिखाई देती है, परन्तु फिर भी जो जीवन रेखा अपने-आप में निर्दोष और स्पष्ट होती है, वास्तव में वही रेखा मानव के लिए कल्याणकारी मानी जाती है।

इसी रेखा से व्यक्ति की आयु का पता चलता है तथा इस रेखा के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि जीवन में कौन-कौन सी दुर्घटनाएं किस-किस समय घटित होंगी तथा मृत्यु का कारण और मृत्यु का समय भी इसी रेखा से ज्ञात होता है।

यह रेखा बृहस्पति पर्वत के नीचे से निकलती है, पर कई बार यह रेखा बृहस्पति पर्वत के ऊपर से भी निकलती हुई दिखाई दी है। इस रेखा के बारे में यह ध्यान रखना अत्यन्त जरूरी है कि **यह रेखा शुक्र पर्वत को जितने ही बड़े रूप में घेरती है, उतनी ही यह रेखा ज्यादा श्रेष्ठ मानी जाती है।** यद्यपि कई बार यह रेखा शुक्र पर्वत को अत्यन्त संकीर्ण बना देती है, जब ऐसा तथ्य हथेली में दिखाई दे तब यह समझ लेना चाहिए कि इस व्यक्ति की प्रगति जीवन में कठिन ही होगी, साथ ही साथ इस व्यक्ति को जीवन में प्रेम, भोग, सुख आदि सांसारिक गुणों की न्यूनता ही रहेगी। **अंगूठे के पास में से होकर यह रेखा निकले तो उस व्यक्ति की आयु बहुत कम होती है।**

जीवन रेखा जितनी ही ज्यादा गहरी स्पष्ट और बिना टूटी हुई होती है, उतनी ही वह ज्यादा अच्छी कहलाती है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य उन्नत होगा, उसके हृदय में प्रेम और सौन्दर्य की भावना विकसित रहेगी, परन्तु जिसके हाथ में यह रेखा कटी-फटी या टूटी हुई अथवा अस्पष्ट दिखाई दे तो उसका जीवन दुखमय, भावनाशून्य एवं दुर्घटनाओं से युक्त रहता है। ऐसे व्यक्ति तुनक मिजाज़, चिड़चिड़े तथा बात-बात पर क्रोधित होने वाले होते हैं।

यदि गुरु पर्वत के नीचे जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा का पूर्ण मिलन होता है, तो यह शुभ माना जाता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, सतर्क और योजनाबद्ध तरीके से काम करने वाला होता है। परन्तु यदि इन दोनों रेखाओं का उद्गम अलग-अलग होता है, तो व्यक्ति उन्मुक्त विचारों वाला तथा अपनी ही धुन में कार्य करने वाला होता है। **परन्तु यदि किसी के हाथ में जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा तीनों एक ही स्थान से निकलें तो यह एक दुर्भाग्यपूर्ण प्रतीक होता है। ऐसे व्यक्ति की निःसन्देह हत्या हो जाती है।**

जीवन रेखा पर यदि आड़ी-तिरछी लकीरें दिखाई दें तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य कमजोर समझना चाहिए। यदि हृदय रेखा और जीवन रेखा के बीच में त्रिभुज बन जाए तो ऐसा व्यक्ति दमे का रोगी होता है।

यदि जीवन रेखा से कोई पतली रेखा निकल कर गुरु पर्वत की ओर जाती दिखाई दे तो उस व्यक्ति में इच्छाएं, भावनाएं और महत्त्वाकांक्षाएं जरूरत से ज्यादा होती हैं और वह उन इच्छाओं को पूरा करने का भागीरथ प्रयत्न करता है। यदि इस रेखा पर कई रेखाएं उठती हुई दिखाई दें तो वह व्यक्ति परिश्रमी और कर्मठ होता है तथा अपने प्रयत्नों से भाग्य का निर्माण करता है।

यदि जीवन रेखा के प्रारम्भ से ही उसके साथ-साथ सहायक रेखा चल रही हो तो, ऐसा व्यक्ति सोच-समझ कर कार्य करने वाला विवेकपूर्ण योजनाएं बनाने वाला चतुर तथा महत्त्वाकांक्षी होता है। ऐसे व्यक्ति के जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं होता।

यदि जीवन रेखा चलती-चलती अचानक बीच में समाप्त हो जाती है, तो यह आकस्मिक मृत्यु की ओर संकेत करती है।

यदि जीवन रेखा से कोई सहायक रेखा निकल कर चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई दिखाई दे तो वह व्यक्ति वृद्धावस्था में पागल होता है, यदि इस रेखा में शनि रेखा आकर मिल जाए तो वह व्यक्ति प्रतिभावान और तेजस्वी होता है।

जीवन रेखा के अंत में यदि किसी प्रकार का कोई बिंदु या क्रॉस दिखाई दे तो उस व्यक्ति की मृत्यु अचानक होती है। यदि जीवन रेखा अन्त में जाकर कई भागों में बंट जाए तो ऐसे व्यक्ति को बुढ़ापे में निश्चय ही क्षय रोग होगा।

इससे सम्बन्धित कुछ अन्य तथ्य भी नीचे स्पष्ट किए जा रहे हैंः-

१. छोटी रेखा– कम आयु।
२. पीली और चौड़ी रेखा– बीमारी और विवादास्पद चरित्र।
३. लाल रेखा– हिंसा की भावना।
४. पतली रेखा– आकस्मिक मृत्यु।
५. जंजीरदार रेखा– शारीरिक कोमलता।
६. टूटी हुई रेखा– बीमारी।
७. सीढ़ी के समान रेखा– जीवन-भर रूग्णता।
८. बृहस्पति पर्वत के नीचे प्रारम्भ– उच्च सफलता।
९. मस्तिष्क रेखा से मिली हुई– विवेकपूर्ण जीवन।
१०. जीवन, मस्तिष्क तथा हृदय रेखा का मिलन– दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति।
११. धंसी हुई गहरी रेखा– अशिष्टतापूर्ण व्यवहार।
१२. स्वास्थ्य तथा मस्तिष्क रेखाओं के पास नक्षत्र – सन्तानहीनता।
१३. स्पष्ट रेखा– न्यायपूर्ण जीवन।
१४. प्रारम्भ स्थल पर शाखा पुंज– अस्थिर जीवन।
१५. रेखा के मध्य में शाखाएं– क्षयपूर्ण जीवन।
१६. अन्तिम सिरे पर शाखाएं– दुखदायी बुढ़ापा।
१७. अन्त में दो भागों में विभक्त– निर्धनतापूर्ण मृत्यु।
१८. अन्त में जाल– धनहानि के बाद मृत्यु।
१९. रेखा से ऊपर की ओर उठती हुई सहायक रेखा – आकस्मिक धन-प्राप्ति।
२०. रेखा पर काला धब्बा– रोग का प्रारम्भ।
२१. नीचे की ओर जाती सहायक रेखाएं– स्वास्थ्य तथा धन की हानि।
२२. मार्ग में रेखा का टूटना– आर्थिक हानि।
२३. कई जगह पर काटती हुई रेखाएं– स्थायी रोग।
२४. रेखा पर वृत्त का निशान– हत्या।
२५. प्रारम्भ में क्रॉस– दुर्घटना से अंग-भंग।
२६. रेखा के अन्त में क्रॉस– असफल बुढ़ापा।
२७. क्रॉस से काटती हुई जीवन रेखा– मानसिक कमजोरी।
२८. रेखा के प्रारम्भ में द्वीप– तंत्र-विद्या में रुचि।
२९. रेखा के मध्य में द्वीप– शारीरिक कमजोरी।
३०. लहरदार जीवन रेखा और उस पर द्वीप– रोगी जीवन।
३१. जीवन रेखा से हाथ के पार जाती हुई रेखाएं– चिन्ताएं और कष्ट।
३२. जीवन रेखा से गुरु पर्वत को जाती हुई रेखाएं– कदम-कदम पर सफलता।
३३. शनि पर्वत पर जाती हुई रेखाएं– पशु से दुर्घटना एवं मृत्यु।
३४. सूर्य पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं– प्रसिद्धि और सम्मान।
३५. बुध पर्वत की ओर जाती हुई रेखा– अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में सफलता।
३६. चन्द्र पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं– जरूरत से ज्यादा निर्धनता तथा रोगमय जीवन।
३७. निम्न मंगल की ओर जाती हुई रेखाएं– क्रोध में आत्महत्या।
३८. मंगल पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं– प्रेम के कारण युवावस्था में बदनामी।
३९. शुक्र पर्वत की ओर जाती हुई रेखाएं– प्रेमभंग।
४०. जीवन रेखा को कई स्थानों पर काटती हुई रेखाएं– पारिवारिक जीवन में असफलता।
४१. जीवन रेखा को काटकर भाग्य रेखा तक जाने वाली रेखा– व्यापार में पूर्ण असफलता।
४२. जीवन रेखा को काटकर मस्तिष्क रेखा की ओर जाती हुई रेखा– पागलपन।
४३. जीवन रेखा को काटकर हृदय रेखा की ओर जाती हुई रेखा– हृदयरोग से पीड़ित।
४४. जीवन रेखा तथा हृदय रेखा को काटती हुई रेखा– प्रेम कार्यों में असफलता।
४५. हृदय रेखा की ओर जाने वाली रेखा के अन्त में द्वीप– दुखपूर्ण वैवाहिक जीवन।
४६. जीवन रेखा और सूर्य रेखा को काटती हुई रेखा– सामाजिक पतन।
४७. शुक्र पर्वत तथा जीवन रेखा पर नक्षत्र का चिह्न– घरेलू झगड़े।
४८. सूर्य रेखा तथा जीवन रेखा पर नक्षत्र– दुखमय घरेलू जीवन।
४९. मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा तथा जीवन रेखा पर चिह्न– रोगपूर्ण जीवन।
५०. भाग्य रेखा तथा जीवन पर त्रिकोण– आर्थिक हानि।
५१. सूर्य रेखा तथा जीवन रेखा पर त्रिकोण– अपराधपूर्ण जीवन।

(गुरुदेव की पुस्तक – "वृहद हस्त रेखा शास्त्र" से साभार)

जिन्दगी . . . तेरी . . . जुस्तजू करती है!

कोई राह सी मिलती है
औ जिन्दगी तेरी जुस्तजू करती है
कदम बढ़ते जाते हैं न जाने किस ओर
हर सुबह एक नया आगाज करती है
आगाज - ए - मोहब्बत कि या आगाज - ए - नौबहार
दोनों में सूरत मुझे "हयात" की मिलती है

राह मिली या किसी की जुस्तजू (चाहत) की बात हुई दोनों एक ही है, दोनों ही प्रेम की दुनिया की घटनाएं हैं। राह मिलती है जब मोहब्बत की तो कदम खुद-ब-खुद बढ़ कर किसी की जुस्तजू में मसरूफ (व्यस्त) हो जाते हैं और जब जुस्तजू का हौसला जग जाता है तो फिर राह भी खुद-ब-खुद मिलती ही चली जाती है . . . वही राह जो बड़ी संकरी कही गयी है — प्रेम गली अति सांकरी, तामे दो न समाहीं। यह जानते हुए भी मन ठहरा. . . घबरा जाता है, उलझ जाता है, उसे लगता है कि कुछ खोने लग गया है, पकड़ना चाहता है लेकिन जब यही नहीं पता कि खो क्या गया है तब पकड़े भी तो किसको?

और यही उलझन सामने आई अच्युत के, वह गुरुदेव से पूछ बैठा —

गुरुदेव! मुझे ऐसा लगता है कि मैं चल रहा हूं, मेरा पथ प्रेम का पथ है पर घबराहट क्यों हो रही है? मुझसे कुछ खोता सा क्यों जा रहा है? यह राह धुंधली सी क्यों होने लग गयी है?

उत्तर में गुरुदेव ने कहा —

राह नहीं धुंधली हुई है अच्युत! राह वही है जो थी और वही रहेगी भी, हुआ बस यह है कि अब तुम इस राह के पथिक ही नहीं रह गए खुद राह बन गए हो। इसमें इतनी घबराहट क्यों और किसलिए? जब तुम चले थे तो क्या कुछ पाने की चाह रख कर चले थे? क्या तुम्हें पता नहीं था कि इस पर तो सब कुछ खो जाना है तुम्हें भी, तुम्हारे व्यक्तित्व को भी, तुम्हारे नाम को भी और खोया कहां? तुम्हारी दृष्टि में कुछ खो गया है, मेरी दृष्टि में तुम्हें बहुत कुछ मिल गया है। तुम्हारा जो छोटा सा 'मैं' था वह मेरे में विलीन हो गया है और इस के बदले में तुम्हें पता नहीं कि तुम्हें क्या मिला है। तुम्हारा उठना, तुम्हारा बैठना, तुम्हारा चलना, तुम्हारा हंसना, तुम्हारी एक - एक अदा मेरी हो गयी है। तुम "मैं" हो गए हो और मैं "तुम" हो गया हूं— यही तो उत्स है जीवन का। इसी से तो मैं कहता हूं कि अव तुम पथिक भर नहीं रहे, पथ बन गए जिस पर होकर अभी न जाने कितने गुजरेंगे और उस मंदिर तक जा पहुंचेंगे जो प्रेम का देवालय है। तुम देवालय की वह सीढ़ी हो गए हो जिस पर कोई ध्यान नहीं देता, पर जिस पर पांव रख कर ही मंदिर के गर्भ तक पहुंचा जा सकता है। क्या यह कम सौभाग्य है? किसी को तुमने एक मुस्कराहट दी, क्या यह तुम्हारी पूरी जिन्दगी की सार्थकता नहीं है?

गुन्चे तेरी जिन्दगी पे दिल हिलता है
सिर्फ एक तबस्सुम के लिए खिलता है
गुन्चे ने कहा कि इस चमन में बाबा
ये एक तबस्सुम भी किसे मिलता है

(गुन्चे-कली, तबस्सुम - मुस्कराहट)

एक मुस्कान के लिए ही खिलो मगर खिलो जरूर, एक धड़कन के लिए ही जिओ मगर जिओ तो उसी के लिए, नहीं तो तुममें और आम आदमी में फर्क ही कैसा?

कीर्ति को कुछ अस्पष्टता रह गयी . . .

गुरुदेव! व्यक्ति पथ पर चलता-चलता खुद पथ बन जाये यह तो समझ में आता है, लेकिन वह पथ बनकर पहुंचेगा कहां?

गुरुदेव . . . .

तुम मेरी बात का मर्म समझी ही नहीं कीर्ति। पथ भला कब कहां पहुंचा है, पथ तो पहुंचाने वाला होता है और उस पर चलकर कोई कहीं तक, तो कोई कुछ दूर तक पहुंच जाता है. . . पर यह मत समझना कि हर पथिक ही पथ बन जाता है, यह तो बिरल घटना है, कोई- कोई ही पथिक से पथ बन जाता है और फिर उसे कोई चाहत और इच्छा शेष रह ही नहीं जाती, फिर उसी पथ पर कुछ और भी आते हैं, तुम्हारे जैसे, जिन्हें मील का पत्थर कह सकती हो। नये आने वाले इन्हीं मील के पत्थरों को तो देखकर समझ पायेंगे कि वे इस राह पर कितना बढ़े हैं, कितना अभी और चलना शेष है। ऐसा व्यक्ति या शिष्य भी कदम - कदम पर एक यादगार होता है . . .

जो रुके हो कोह - ए - गरां थे हम
जो चले तो जां से गुजर गए
रह - ए - यार हमने कदम कदम
तुझे यादगार बना दिया

(कोह - ए - गरां — पहाड़)

कदम - कदम पर इस गुरु पथ को यूं ही यादगार बनाती हुई, हुलसती हुई, उमंगों से भरकर यूं आओ कि एक मिसाल बन जाए। मंजिलों पर पहुंच कर भी मत रुको, नयी मंजिलें खोज लो

और उनको भी छोड़ कर और भी आगे बढ़ती जाओ, तभी तो गुरु से साक्षात्कार कर पाओगी, तुममें और एक सामान्य व्यक्ति में यही तो अन्तर है . . .

तुझे मंजिले भी रहगुजर, मुझे रहगुजर भी मंजिलें
यही फर्क है मेरे हम सफर, वो तेरा चलन ये मेरा चलन

नितिन — **आपके प्रवचनों से लगता है कि आप रूहानी प्रेम पर कुछ कह रहे हैं।**

गुरुदेव —

रूहानी, गैर रूहानी, शारीरिक, अशारीरिक तुम्हारी दुनिया के गढ़े हुए शब्द हैं, मेरी दुनिया में प्रेम को किसी सांचे में नहीं ढाला गया है, वह उन्मुक्त है और उन्मुक्त होते हुए भी उच्छृंखल नहीं है। वह उन्मुक्त है पवन की तरह, जो सुगन्ध को ले जाने का उपादान बन रहा है। वह नदी की लहरों की तरह है, जो जीवन की एक-एक तरंग को अपने ऊपर थिरका रहा है. . . और एक बात मैं यह भी कह दूं कि जब तुम प्रेम को शारीरिक, अशारीरिक या तुम्हारी भाषा में प्लूटॉनिक लव में ढालने की कोशिश करते हो, तो दरअसल तुम्हारी दृष्टि और चिन्तन का केन्द्र शरीर ही होता है। एक लोलुपता ही होती है, वासनात्मक लेन-देन की भावना ही होती है। तब तुम्हारे प्रेम शब्द कहने से ही उबकाई आती है। तुम्हारे चेहरे पर तैरते कामुक हाव-भाव, विलासिता सब कुछ घृणित लगने लगता है। 'तुम' से मेरा तात्पर्य नितिन तुम नहीं, ये सम्पूर्ण समाज है— क्या स्त्री, क्या पुरुष, क्या युवा, क्या युवती। प्रेम तो कुछ और ही अदा होती है, उसमें तो चेहरे का हाव-भाव ही कुछ और हो जाता है। रंगतें बदलती जाती हैं—

किस तरह मानिए यारों ये आशिक नहीं
रंग उड़ा जाता है टुक चेहरा तो देखो "मीर" का

जब ऐसा हो जाता है, तो चेहरा ही बोलने लग जाता है, बदहवासियां अपना राज खुद बता जाती हैं, जुबां बोले या न बोले क्योंकि प्रेम अपने-आप में सामान्य घटना है ही नहीं, ईश्वर से साक्षात्कार के क्षण हैं। प्रेम में तो बस कोई सामने होता है और जब नहीं होता तो उसका अक्स होता है यह "किसी" का होना ही प्रेम है . . .

नज्जारा - ए - जमाल से जन्नत है जिन्दगी,
वो रू - ब - रू नहीं तो कयामत है जिन्दगी
उनके ख्याल उनकी तमन्ना में मस्त हूं,
मेरे लिए 'शकील' इबादत है जिन्दगी

(नज्जारा - ए - जमाल— सुन्दर दृश्य)

प्रेम तो इबादत है, अकीदत है, हुस्न है और पूरी की पूरी जिन्दगी है।

हर्षा के प्रश्न में सार्थकता थी —

गुरुदेव! आपने कहा कि 'किसी' का होना ही प्रेम है, जबकि प्रेम तो सही अर्थों में गुरुदेव से ही हो सकता है।

गुरुदेव इसके प्रत्युत्तर में मुस्कराए . . . .

हर्षा! तुमने एक महत्वपूर्ण बात कही, किन्तु जिसके दिल में प्रेम का अंकुर ही न फूटा हो, जो कभी प्रेम की रिमझिम फुहार में न भीगा हो, वह सीधे आकर गुरुदेव से प्रेम कर भी कैसे सकता है? **कुछ तो धारणा होनी चाहिए उसके दिल में प्रेम के लिए या फिर क्या वह एकाएक इतना प्रज्ञा सम्पन्न हो गया कि उसने आते ही आते गुरुदेव को समझ लिया और उनके प्रेम में डूब गया?** क्योंकि गुरु कोई शरीर तो है नहीं, वह तो जीवन की एक धारणा, एक चिन्तन है जिसे एकाएक समझा ही नहीं जा सकता। हां! यह हो सकता है कि किसी की चेतना उमड़े, उसके पूर्व जन्मगत संस्कार खिल उठे, और वह मेरे अन्तर्मन से टकराकर आसुंओं के रूप में बरस उठे. . . प्रेम का सैलाब उमड़ पड़े, लेकिन यह रोज की घटना तो नहीं, और जो आते ही आते मेरे "चरणों के दास" बन जाते हैं, मै उनके छद्म और बड़बोलेपन को बस निहारता ही रह जाता हूं।

इसीलिए आवश्यक है कि तुम्हारे जीवन में कहीं से प्रेम का स्फुरण हुआ हो और उसके प्रकाश में तुम गुरु तत्व को समझ सको, उनसे प्रेम कर सको, आकण्ठ तृप्त हो सको, और सबको आकण्ठ तृप्त कर सको क्योंकि गुरु से प्रेम ऐकान्तिक घटना नहीं होती। तुम अपनी सांसारिक परिभाषाओं में उसे ऐकान्तिक घटना समझती हो, उसी प्रकार का आचरण करना चाहती हो जैसा कि लौकिक जीवन में स्त्री-पुरुष के मध्य होता है. . . पर गुरु से प्रेम तो एक सावन की बदली होती है, जो उमड़-घुमड़ कर सारे जग में बरसने को आतुर हो उठती है. . . और यदि ऐसा न हो, तुम्हारे मन में ऐसी हलचल न हो, तो समझ लेना कि तुम अभी प्रेम के सही अर्थ से परिचित नहीं हुई।

"किसी" शब्द से चौंकने की आवश्यकता नहीं है। प्रेम जहां निश्छल है वहां वह मुझसे ही किया गया है, भले ही सामने कोई क्यों न हो, क्योंकि मन में जो भाव उमड़ा है, जो हुलस आयी है, जो हुमक उठी है वह गुरु ही तो है, वह जो सुगन्ध प्रेम के नाम से तुम्हारे मन में छा गई है. . . वह गुरु की ही तो सुगन्ध है, और ऐसे प्रेम से ही जो मन में अंकुर फूटता है, जो बेल उपजती है वही जाकर एक दिन गुरु रूपी वृक्ष से लिपट जाती है। "किसी" शब्द से मेरा भाव संकीर्ण नहीं है, तुम्हारे द्वारा लगाया गया अर्थ संकीर्ण है इसी से तुम "किसी" शब्द से चौंक उठी, पर तुम प्रेम करो और अवश्य करो, अपने हृदय को इस प्रकार सुन्दरतम भावनाओं से भर लो कि मन का पुष्प खिल सके, फिर गुरु वहीं विराजमान मिलेंगे।

सहल यूं राह - ए - जिन्दगी की है,
हर कदम हमने आशिकी की है
हमने दिल में सजा लिए हैं गुलशन,
जब बहारों ने बेरूखी की है ◆

ल्यूकोडर्मा (सफेद दाग)

● डॉ (श्रीमती) साधना
भोपाल

सुविख्यात होमियोपैथिक चिकित्सक **डॉ० श्रीमती साधना सिंह** का **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका द्वारा लिया गया इन्टरव्यू पिछले कई अंकों से प्रकाशित किया जा रहा है। उनके द्वारा प्रस्तुत रोग के लक्षण तथा उनके निदान को पढ़कर हमारे बहुत अधिक पाठकों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है। पाठकों द्वारा भेजे गए शुभकामना पत्रों को हमने डॉ० साधना के सम्मुख रखा और पत्रिका की तरफ से भी बधाई दी। इसके साथ ही साथ हमने पत्रों के दो बड़े बंडल भी उन्हें दिए, जिसमें एक तो भारत के निवासियों का था तथा दूसरा विदेशों से प्राप्त ३०० पत्रों का बंडल था।

हमने अब तक के प्रकाशित लेखों से थोड़ा हटकर एक बीमारी **ल्यूकोडर्मा (सफेद दाग)** के बारे में डॉ० साधना से वार्तालाप किया। पाठकों की समस्या के आधार पर जो वार्तालाप किया गया उसे हम यहां ज्यों का त्यों प्रस्तुत कर रहे हैं।

पत्रिका : डॉ० साधना, ल्यूकोडर्मा एक ऐसा रोग है, जिससे ग्रसित व्यक्ति एक तरह से कहा जाए कि कुरूप हो जाता है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। कृपया आप बताइए कि यह किस तरह की बीमारी है?

डॉ० साधना : ल्यूकोडर्मा एक ऐसी व्याधि है, जिसके कारण त्वचा पर सफेद धब्बे उत्पन्न हो जाते हैं, यह पिछली कई शताब्दियों से ज्ञात है। विभिन्न चिकित्सा विज्ञान में अनेक तरीकों से इसको उपचारित करते हैं।

पत्रिका : क्या यह छूत की बीमारी है, इसके सामान्य लक्षण क्या हैं?

डॉ० साधना : नहीं! ल्यूकोडर्मा छूत का रोग नहीं है, किन्तु यह विशेषतः महिलाओं में शारीरिक विकृति उत्पन्न कर देता है। इससे ग्रसित रोगी समाज से अलग-थलग पड़ जाता है, इसलिए **इस रोग का उपचार सौन्दर्य की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।** इस रोग से ग्रसित होने वाले अंग हैं— श्लेष्मा व त्वचा के संगम वाले स्थानों में जैसे होंठ, नाक, गला, आंख, गुप्तांग व जोड़ वाले स्थान। जो महिलाएं चुस्त वस्त्र व अर्न्तवस्त्र धारण करती हैं, यह रोग उनकी पीठ पर तथा स्तन पर होता है। कसे कपड़ों से होने वाला घर्षण इसके लिए उत्तरदायी है।

पत्रिका : इस रोग की उत्पत्ति का कारण स्पष्ट करें, जिससे हमारे पाठक इस बारे में अच्छी तरह से समझ सकें?

डॉ० साधना : दुनिया के विभिन्न भागों में मानव शरीर, त्वचा भिन्न-भिन्न रंगों की होती है। त्वचा का रंग एक लवक (पिगमेन्ट, जिसे मिलैनिन कहा जाता है) के कारण होता है। यह अश्वेतों में श्वेतों की अपेक्षा अधिक होता है। जब यह लवक त्वचा में कम होता है तब त्वचा सफेद हो जाती है और जब भी ऐसी त्वचा सूर्य की पराबैंगनी प्रकाश के सम्पर्क में आती है, यह लवक बढ़ता है, इसलिए कई चिकित्सक दवा लगाने के बाद धूप में शरीर खुला छोड़ने की राय देते हैं। मेरी विनम्र राय में बाहरी लेपन कुछ समय के लिए ही त्वचा को गहरा करता है। कुछ दवाइयां ऐसी होती हैं, जिसे लगाने से त्वचा पर फफोले पड़ जाते हैं।

आयुर्वेदिक चिकित्सक शताब्दी से "बाउची" पाउडर का प्रयोग इस रोग के इलाज के लिए करते रहे हैं।

पत्रिका : डॉ० साधना आप यह बताएं कि होमियोपैथिक के दृष्टिकोण में इस रोग के क्या कारण हैं?

डॉ० साधना : मेरे अनुसार सबसे महत्वपूर्ण कारण क्रोनिकअमीबिक डिसेन्ट्री व आंत में रहने वाले परजीवी हैं। पीने के पानी का रोगजन्य व दूषित होना, शौच की सुविधा का अभाव भी इसका कारण है। पचास प्रतिशत रोगी डिसेन्ट्री व पेट के कीड़ों का इतिहास देते हैं, जिसकी परीक्षा मल की जांच के बाद प्रामाणिक हो जाती है। इसके अलावा पीलिया व यकृत के रोग भी अन्य कारण हैं।

पत्रिका : डॉ० साधना इसक अलावा अन्य किन कारणों से ल्यूकोडर्मा होता है?

डॉ० साधना : इसके अलावा अन्य ऐसे कई कारण होते हैं, जिन्हें मैं स्पष्ट कर रही हूं—

१. बहुत सी शक्तिशाली त्वचा रोगों पर लगाने वाली दवाइयों के कारण दबा हुआ त्वचा रोग कुछ समय बाद सफेद दागों का रूप ले लेता है।

२. बार-बार जिन लोगों को टीकाकरण हुआ है, वह भी एक कारण है।

३. मधुमेह या शक्कर की बीमारी रोगी के माता-पिता में होना भी इस रोग का एक कारण है। ट्यूबरक्युलोसिस् या दमा के रोगी भी इसका कारण हैं।

४. शोक, चिन्ता, तनाव ऐसे अन्य कारण हैं, जिनमें रोगी उम्र से अधिक बूढ़ा नजर आता है, इस कारण त्वचा कुछ समय बाद सफेद धब्बों से भर जाती है।

पत्रिका : क्या यह वंशानुगत रोग है?

डॉ० साधना : माता-पिता दोनों में से किसी एक को भी ल्यूकोडर्मा होने से उनसे उत्पन्न होने वाले बच्चे भी उस रोग का शिकार हो

सकते हैं, अतः एक प्रकार से यह वंशानुगत रोग भी है।

पत्रिका : डॉ० साधना आप होमियोपैथिक पद्धति के अनुसार ल्यूकोडर्मा की चिकित्सा के लिए किन दवाइयों का प्रयोग करती हैं?

डॉ० साधना : ल्यूकोडर्मा की चिकित्सा के लिए मैं रोगी के लक्षणों के अनुसार अलग - अलग दवाइयों का प्रयोग करती हूं। उनमें से कुछ प्रमुख दवायें इस प्रकार है—

१. थूजा

बच्चों में व उन रोगियों में जिन्हें बार-बार टीकाकरण के कारण सफेद दाग हो जाता है, उनके लिए थूजा का प्रयोग करती हूं। थूजा बच्चों में दिए जाने वाले पोलियो ट्रिपल टीकाकरण के खिलाफ एक एन्टीडोज का कार्य करती है। सिर्फ बच्चों में ही नहीं यह व्यस्कों में भी उनकी मानसिक पृष्ठभूमि को साफ करती है, जैसे गिरने का सपना, निम्न गतिविधियां, शरीर पर, चेहरे पर मस्से, भूख का मरना आदि में थूजा २०० की तीन खुराकें देने पर रोगी की सामान्य दशा सुधरती है।

२. सल्फर

जहां थूजा के सिम्टम्स नहीं हैं वहां प्रथम अथवा द्वितीय औषधि के रूप में यह सबसे महत्वपूर्ण है और साथ ही साथ एन्टीसोरिक, यह जब दबे हुए मानसिक व सिफिलाइटिक मिआस्मेटिक सिम्टम सोरा के साथ हो, तो काम करती है। यह दवा जब त्वचा के रोग को दबाया गया हो, तो दस्त, आंव, पीलिया, मोतीझरा व ऊष्ण प्रदेशों के अन्य बुखार में यह रेमेडी मदद करती है, किन्तु सल्फर के सिम्टम जैसे तलवों, हथेलियों, आंखों, मल द्वार, योनि द्वार व सिर में गर्मी ये लक्षण-सामान्यतः एक गर्म रोगी का होता है, पर चिली भी हो सकते हैं। ऐसे रोगियों में बेचैनी व उत्तेजना भी देखी गई है।

सभी केसेज में सल्फर को एक रेग्ड फिलास्फर की भांति नहीं पाया गया है। गरीबी व शौच की सुविधाएं न होने से रोगी गंदा दिखता है, वह नहाता नहीं है, पर साफ-सुथरे रोगियों में भी यह असर दिखाती है, इसे ३० सी. एम. से शुरू कर २०० सी० एम० तक धीरे-धीरे जा सकते हैं व जैसे ही धब्बे कम होते हैं या रोगी थोड़ा स्वस्थ अनुभव करता है, इसे दुबारा दे सकते हैं।

३. वेसीलियम

तीसरी महत्वपूर्ण औषधि वेसीलियम या ट्यूबरक्यूलायनम है। इसके प्रभावकारी चिन्ह हैं लम्बी खांसी, जुकाम या खून की उल्टी। रोगी के वजन में कमी, भूख का मरना, चपटी छाती वाले युवक या युवती, उभरी पसलियां या कूल्हे की हड्डी हो सकती है। अस्थमा, निमोनिया, ब्रॉकाईटिस या क्षय रोगी का इतिहास भी मिल सकता है, ज्यादातर क्षय रोग या पल्यूरिसी का पारिवारिक इतिहास मिलता है।

४. बेसीलायनम

फेफड़ों की टी० बी० में काम करती है, किन्तु यदि हड्डियों की या ग्रंथियों की टी० बी० हो, तो ड्रोसेरा या ट्यूबरक्यूलायनम असर दिखाती है।

५. सीपिया

इसके लक्षण महिलाओं में दिखाई देते हैं। अनियमित मासिक स्राव (जल्दी या देर से होना) थोड़ा सा दर्द के साथ, युवतियों में श्वेत प्रदर, खुजली देखी गई है, ज्यादातर शिकायत सुबह के समय रहती है तथा उल्टी, सिर दर्द, कार यात्रा के समय या झूले में चक्कर, सीपिया इन लक्षणों को ठीक करती है।

६. ऐसिडनाइट्रिक

श्लेष्मा व त्वचा के संगम स्थान पर सफेद दागों का होना, कानों, आंख, नाक, निपल, पेनिस, वलवा पर ये दाग ज्यादा होते हैं। इन स्थानों पर दरारें भी होती हैं। इससे पीड़ित कुछ रोगियों को चॉक खाने की इच्छा, पेंसिल खाने की इच्छा, विशेषकर बच्चों में होती है।

७. आर्सनिक सल्फ फलेवम

इस दवा को बहुत से लोग इस रोग के नाम पर ही दे देते हैं, जो कि ठीक नहीं है, अगर शारीरिक, मानसिक लक्षण मिल जाएं, तो रोगी पूर्णतः ठीक हो जाता है। इसका रोगी बेचैन, चिड़चिड़ा, झगड़ालू और बहुत भावुक होता है, वह रात्रि में अंधकार से डरता है, उसे शैतान का भय व भूतों का भय होता है तथा वह अपने दोस्त व परिवार को भी शक की नजर से देखता है।

इसके रोगी को तैलीय पदार्थ एवं मांस से अरुचि हो जाती है, बहुत प्यास लगती है, दूध पीने से पेट में गड़बड़ी होती है, वह गर्म चीजों के प्रति रुचि रखता है।

पत्रिका : अब आप अपनी तरफ से ऐसे रोगियों के लिए कुछ अन्य ऐसी बातें बताएं, जिससे उन्हें विशेष लाभ प्राप्त हो सके।

डॉ० साधना : इस बीमारी से ग्रस्त रोगियों को प्रसन्नचित्त रहना चाहिए। अपने शरीर की सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। प्रातः सूर्योदय से पूर्व खुले वातावरण में टहलना चाहिए तथा उपरोक्त बताए हुए लक्षणों में से कोई भी लक्षण उत्पन्न होने पर कुशल चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिए। मैं एक विशेष बात यह बताना चाहती हूं कि सफेद दाग की चिकित्सा, ऐसे रोगियों के लिए जो निर्धन हैं और धनाभाव के कारण अपना इलाज नहीं करा पाते, उन्हें मैं सर्वथा मुफ्त में इलाज देने का प्रयास करती हूं।

पत्रिका : आपके इस प्रकार के शुभ विचार के लिए तथा इस इन्टरव्यू के लिए पत्रिका के समस्त पाठकों की तरफ से हम आपको धन्यवाद देते हैं, और ''पूज्य गुरुदेव'' ने भी आपको आशीर्वाद देते हुए कहा है कि आप चिकित्सा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति करें तथा जन सामान्य को रोग मुक्त करके उन्हें सुखी जीवन प्रदान करने में सहयोगी बनें।

डॉ० (श्रीमती) साधना
शॉप न० २५, छठा बस स्टॉप, सुभाष मार्केट,
शिवाजी नगर, भोपाल (म. प्र.), फोन : ०७५५-५५४६२५

दिनांक १५, १६, १७, १८ नवम्बर

भोपाल शिविर

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिम्
द्वंदातीतम् गगनसदृश्यम् तत्व मस्यादि लक्ष्यम्।।
एकम् नित्यम् विमलम चलम् सर्वधी साक्षीभूतम्।
भावातीतम् त्रिगुणरहितं सदगुरुं त्वं नमामि।।

सद्गुरु की जब अभ्यर्थना की जाती है, तो यही शाश्वत पंक्तियां युगों-युगों से दोहराई जाती हैं, जो ब्रह्मानन्द हैं, ऐसे आनन्द के पर्याय हैं, जिसकी तुलना इस संसार के किसी भी आनन्द से नहीं की जा सकती— "परम सुखदं" जिनका स्मरण मात्र, जिनका चिन्तन मात्र, जिनका दर्शन मात्र, जिनका स्पर्श मात्र ही परम सुख देने वाला है **ब्रह्मानन्द परम सुखदं केवलं ज्ञान मूर्तिं,** जो केवल ज्ञान की ही मूर्ति हैं और इसके अलावा उनके अन्दर कुछ है ही नहीं, शेष जो कुछ भी है वह सब आवरण स्वरूप है, ज्ञानमयता का है, और वे ज्ञान का ही साकार पुञ्ज हैं, जो द्वन्द्व से अतीत हैं, गगन सदृश्य हैं, विशाल हैं, फैले हुए इस ब्रह्माण्ड में, जो अभावों से अतीत हैं, जो त्रिगुण से रहित हैं, मैं ऐसे ही सद्गुरु को प्रणाम करता हूं। जीवन में ऐसे सद्गुरु की प्राप्ति होना, जीवन में ऐसे सद्गुरु के दर्शन होना प्रत्येक युग की घटना नहीं होती, क्योंकि ये गुरु के लक्षण हैं ही नहीं, यह तो **सद्गुरु के लक्षण हैं। सद्गुरु, जो अपने शिष्य को उस पार तक पहुंचाने की क्षमता रखता हो और गुरु वह जो शिष्य को उपदेश देने की क्षमता रखता हो,** दोनों में बहुत अन्तर होता है।

इसे जीवन का एक संधि पर्व कहूं, सौभाग्य कहूं, ब्रह्माण्ड की विलक्षण घटना कहूं या क्या संज्ञा दूं, यह मेरी समझ के बाहर है, मुझमें वह पात्रता ही नहीं है कि मैं इसको व्यक्त कर सकूं। आज पहली बार पूज्यपाद गुरुदेव ने वे दिवस स्पष्ट किए हैं, वे दिन बताए हैं, जो उनके संन्यास के दिवस हैं। दिनांक १५, १६, १७, १८ नवम्बर जिन दिनों में भोपाल मध्य प्रदेश की राजधानी में चार दिवसीय शिविर लग रहा है, उसको पूज्यपाद गुरुदेव ने स्पष्ट किया है, कि **वह उनका संन्यास दिवस पर्व है, जिन्होंने संन्यास को एक मर्यादा दी है, आज इस विषम भौतिक युग में जहां 'संन्यास' एक बड़ा ही विचित्र सा शब्द हो गया है, विचित्र सी संज्ञा हो गई है, उसे एक नया जीवन दिया है, अपनी तेजस्विता से स्पष्ट किया है, उसके स्थापन का पर्व कैसा होगा?** मैं तो समझ ही नहीं पाता, कि उसको कैसे व्यक्त करूं। फिर भी एक कल्पना की जा सकती है, अपने गुरु के व्यक्तित्व को देखकर के एक अनुमान लगाया जा सकता है, कि वे ऐसे अवसर पर क्या कुछ कहने जा रहे हैं, क्योंकि ऐसा नहीं है कि वे इस अवसर पर कोई वर्षगांठ जैसा मनाने जा रहे हों, जो संन्यास का ही पर्याय हो, जो संन्यास का ही मूर्तरूप हो, उसको वर्षगांठ मनाने की क्या जरूरत, उसको इन दिवसों को स्पष्ट करने की क्या जरूरत, यह तो एक बहाना है, और गुरु तो तरह-तरह के बहाने बनाते हैं, कभी अपने जन्मदिन का बहाना बनाते हैं, कभी गुरु पूर्णिमा का बहाना बनाते हैं, कभी कोई और बहाना बनाते हैं, तो क्या इसके पीछे कोई लालसा होती है, कोई पद - पूजन होता है? कदापि नहीं। **इसके पीछे तो एक चिन्तन होता है, कि जीवन में उदात्तता का पूजन कैसे हो? और जहां उदात्तता का पूजन होता है वहीं श्रेयता का जन्म होता है, वहीं श्रेयता पनपती है, फूलती है, पलती है।**

सही अर्थों में तो हम उनको भोपाल शिविर में उन अर्थों में देखेंगे, उस स्वरूप में देखेंगे, जो कि हमारे सामने आज तक अव्यक्त रहा है। हमारे संन्यासीगुरु भाइयों का यह सौभाग्य रहा है, कि उन्होंने प्रत्येक वर्ष पूज्य गुरुदेव के साथ यह दिवस मनाया है, क्योंकि वे उस उच्चता पर थे, क्योंकि वे संन्यास जीवन के उन चरणों को पार कर सके थे, जहां पर कि वे कुछ समझ सकते हैं, जहां जो कुछ गुरु बोले, वे उसका अर्थ लगा सकते हैं, उसको सम्मान दे सकते हैं, उसको हृदय में स्थान दे सकते हैं, परन्तु हम कदाचित इस योग्य अभी तक नहीं थे, हमको इसीलिए यह सौभाग्य नहीं मिला है, लेकिन आज यह दिवस आ गया है। संन्यास जीवन का अर्थ यह नहीं है कि भगवा वस्त्र पहिना देना है, **'सम + न्यास'** समान रूप से न्यास कर देना है, वे मानसिक चेतना से-उस स्वरूप तक पहुंच सकें, जहां समान रूप से न्यास हो सके, अपने गुरु में पूर्णतः लीन हो सकें। संन्यास की अत्यधिक विशद अर्थों में जाकर यही भावना है, **जो कुछ भी हमसे अज्ञात है या जो कुछ हम नहीं समझ सकते हैं, या जिसकी हम व्याख्या नहीं कर सकते हैं, उसी की व्याख्या करने के लिए ही तो यह समारोह रचित किया जा रहा है,** इसलिए तो पूज्य गुरुदेव अपने समस्त संन्यस्त साधकों को इस शिविर में बुला रहे हैं। 'समस्त संन्यस्त साधक' एक बड़ा अपरिचित सा शब्द लगता है। हमको बोलना यूं चाहिए, कि हमारे समस्त संन्यस्त गुरु भ्राता इसमें आ रहे हैं। हम में और आप में से जब चेतना पुरुष निकलेंगे, चेतनावान निकलेंगे, तो समाज

उनको अधिक स्वीकार करेगा, बाह्य आरोपित को स्वीकार करने में उसको कष्ट होता है। अपने ही बीच में से जो लोग उभर कर आते हैं, उनको वह सहज स्वीकार करता है। और यदि आप पूज्यपाद गुरुदेव के शिष्य हैं, तो अब आप का धर्म वहां पर आ गया है जहां पर आप समाज को चेतना दें, अपने व्यक्तित्व से अपने गुरु की प्रखरता को प्रकट करें, उनके संदेश को उन तक ले जाएं, और केवल इतना ही नहीं अपने जीवन को सार्थक बनाते हुए वहां तक ले जाएं, और केवल इतना ही नहीं बल्कि **अपने जीवन को सार्थक बनाते हुए वहां तक ले चलें, उस पुण्य भूमि तक ले चलें, जिसे सिद्धाश्रम कहा गया है, जहां तक ले चलना, जहां तक पहुंचाना ही पूज्य गुरुदेव का स्वप्न है। यदि उनका यह स्वप्न न होता, तो वे इस संस्था का नाम 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' न रखते। वह सिद्धाश्रम, क्या है वह आनन्द, क्या है वह परमानन्द, क्या है वह गुरु के हृदय में उतर जाना, क्या है वह गुरु के साथ नर्तन कर उठना और क्या है वह उस गुरु के हृदय में ही हमेशा-हमेशा के लिए बस जाना, यही सब जानने का ही तो यह शिविर है।**

अब भौतिक स्थितियों से निकल कर जीवन के विचित्र से क्षण आ गए हैं, जो आपको शुभ्र-निरभ्र आकाश में उड़ने की क्षमता तो दे ही रहा है और दी ही है सदा-सदा से, आज वह अपने साथ आपको ले चलने के लिए उद्यत हो चुका है, **यही सब बताने के लिए ही तो भोपाल में चार दिवसीय शिविर का आयोजन किया जाएगा,** और आप स्वयं जब अपने संन्यस्त गुरु भाई-बहिनों से मिलेंगे, उनके उद्दाम वेग को देखेंगे, उनके नर्तन को देखेंगे, कि कैसे वे एक वस्त्र में ही असीम सुखी हैं? कैसे वे सब कुछ प्राप्त करने की सामर्थ्य रखते हुए भी, सब कुछ अपनी मुट्ठियों में भींच लेते हुए भी एकदम शिशु हैं? वे गुरु को देखते ही बच्चों की तरह खिल उठते हैं, तड़फ उठते हैं, तब वे अपने हाव-भाव से, अपने चिन्तन से, अपने आंसुओं से और अपने उन्मुक्त हास्य से आपको दिखायेंगे, कि जीवन तो कुछ और है। जिस गुरु को हम एक देह समझ रहे हैं, डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली समझ रहे हैं, वह तो कुछ और है, उसकी चेतना कुछ और है, हम हृदय की आंखों से देखना भूल ही चुके हैं, हम बुद्धि की आंखों से देखते हैं, और तर्क की दृष्टि से परखते हैं, फिर भी यह चार दिवसीय शिविर ऐसा होगा, जब हमारी तर्क की दृष्टि, बुद्धि की दृष्टि धूमिल पड़ जाएगी, हृदय पक्ष जाग्रत होगा, तब उन उद्दाम वेग से भरे संन्यासियों के साथ - साथ हमारे पांव भी थिरक उठेंगे, तो हम देखेंगे कि हृदय के दर्पण में देखने से वही सामान्य सा दिखता गुरु कितना और दिखने लगता है, वही गुरु जो हमको बहुत दूर दिखता है, वह कितना समीप दिखने लगता है, वही गुरु जिसकी हम जय - जयकार करते हैं, वही हमारे हृदय में बैठा हमें मिलने लगता है, जिसे हम अपनी छोटी-छोटी समस्याएं बताने के लिए व्याकुल रहते हैं, उसको घेरते रहते हैं और वह हमारी समस्याएं सुलझाता हुआ दिखता है। एक विचित्र सी स्थिति हो जाती है, तब समझ में आता है कि दो तो हम थे ही नहीं कभी, हमने दो मान रखा था, हम दो के द्वैत में जी रहे थे।

भोपाल का यह शिविर अपने-आप में एक ऐतिहासिक शिविर है, क्योंकि यह साधना शिविर नहीं है, यह शिष्यों को एक नया जीवन देने की घटना है, उन शिष्यों को, जो कुछ प्राप्त करने को आतुर हैं, जिनके मन में आध्यात्मिकता की कुछ लहर है, जो समझते हैं कि जीवन में गुरु का कुछ और अर्थ होता है, और गुरु से कुछ और प्राप्त कर लिया जाता है, और सीमित समय के भीतर ही उनका पूर्ण लाभ ले लिया जाता है, उनके लिए है यह शिविर। अब इस संक्रमण के काल में पूज्य गुरुदेव किसी भी क्षण वापस सिद्धाश्रम जा सकते हैं, उन क्षणों में ऐसे शिविर का महत्व स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है। **यह अनायास नहीं है, कि गुरुदेव ने ऐसा शिविर आयोजित किया है। हम इस बात को जितना शीघ्र समझ लें उतना ही अच्छा होगा, इसलिए यह शिविर भी एक गरिमा से भरा होने जा रहा है, एक ऐतिहासिक घटना होने जा रहा है,** तो उसमें आश्चर्य ही कैसा? ज्ञान की गरिमा, तप की गरिमा, ओज की गरिमा, मर्यादा की गरिमा, यह सब कब तक जीवन में नहीं लाया जाएगा। यह शिविर तो उनके लिए है, जो कि बहुत कुछ छोड़कर के आयेंगे और गुरु के सामने खड़े होकर कहेंगे, कि अब यह मानव जीवन, यह देह, यह प्राण, यह बुद्धि यह चिन्तन सब आपका है, और आप ही इसको ब्रह्माण्ड में ले चल सकते हैं, आप इसे ब्रह्माण्ड में ले चलिए। यदि आप इसे अपनी सेवा में ले चलना चाहते हैं, तो इसे अपनी सेवा में ले चलिए, यदि आप इसे यंत्र बनाकर कहीं डाल देना चाहते हैं, तो यंत्र बनाकर डाल दीजिए, लेकिन कुछ अलग करिए, कुछ अनहोना करिए, कुछ अनोखा करिए, जो आपकी शैली है, जो आपका जीवन है, जो आपकी मूल धारणा है, जो परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द जी का वास्तविक व्यक्तित्व है, जो आघात करने का स्वभाव है। गुरु का आघात बहुत सख्त होता है और बहुत ही सुखद होता है, इसका अनुभव जिसके जीवन में हुआ, उसका तो जीवन ही धन्य हो गया, उसका तो जीवन ही पावन हो गया, वह अपने-आप में तीर्थ बन गया। **भोपाल का चार दिवसीय शिविर एक ऐसा ही परम पुनीत, परम पावन, परम गम्भीर शिविर होगा, जहां हमारे संन्यस्त गुरु भ्राता, हमारे अग्रज, हमारे सम्माननीय सूक्ष्म रूप में पधारेंगे,** क्योंकि जहां गुरुदेव का आगमन होता है, वहां सिद्धाश्रम के योगी, शिष्य पधारते ही हैं। जहां ऐसा दिव्य वातावरण होता है, फिर वहां की चैतन्यता ही कुछ और होती है। वहां कुछ क्षण बिताना ही अपने-आप में एक अनोखा अनुभव होता है। इस सांसारिक जीवन के राग-रंग के अनेक अनुभव हैं, लेकिन जिसमें चित्त की शांति नहीं है, चित्त की शांति क्या होती है? निर्मलता क्या होती है? पावनता क्या होती है? शीतलता क्या होती है? वह इन्हीं दिनों में पता चलेगा, और इसका पूर्ण अनुभव लेने के आतुर हंसों के लिए ही तो यह अद्वितीय घटना होने जा रही है।

सम्पूर्ण भारत वर्ष के गृहस्थ शिष्यों को इसमें आना ही है – गुरुदेव

दूसरों के पास चांदी के चंद ठीकरे हैं, कागज के टुकड़े हैं, पत्थरों का संग्रह है, पर ये सब तो निर्जीव हैं, मृत हैं, व्यर्थ हैं. . .
पर मेरे पास तो जीवित, जाग्रत सम्पदा है, जो धड़कती है, जिनमें प्रेम है, उच्छवास है, सिसकारियां हैं, वेदना है, आंसू है और प्रेम की पूर्णता है।

– पूज्य गुरुदेव

(शिविर में वे साधक जिन्होंने पूज्य गुरुदेव से दीक्षाएं प्राप्त की)

विश्व का सर्वश्रेष्ट अद्वितीय ज्योतिर्मय चेतना युक्त
दीपावली महोत्सव
२-३ नवम्बर १९९४
जोधपुर (राजस्थान)
सैकड़ों नहीं हजारों लोगों का, साधकों का स्वप्न है, इच्छा है,
भावना है कि वर्ष का श्रेष्ठतम पर्व ''दीपावली पर्व'' पूज्य गुरुदेव के साथ मनाएं,
हंसते हुए, मुस्कराते हुए, छलछलाते हुए, उमंग, उल्लास और मस्ती में अल्हड़ता व्यक्त करते हुए . . .
सिद्धाश्रम स्थित देव लक्ष्मी प्रत्यक्ष क्रिया प्रयोग
और फिर चाहिए ही क्या? इससे ऊंचा प्रयोग और हो भी क्या सकता है, दोनों ही प्रयोग अद्‌भुत, अनिवर्चनीय,
अलौकिक . . . और साथ ही साथ सिंह लग्न मुहूर्त में चारों वेदों के मंत्रों से पूर्ण सिद्धिदात्री लक्ष्मी पूजन
सम्पूर्ण रात्रि पर्यन्त . . . वास्तव में ही वे साधक सोने की कलम से विधाता के हाथों अपना
भाग्य लिखाकर लाये होंगे, जो इस अद्वितीय शिविर में भाग लेंगे।
एक अद्वितीय अनूठा पर्व
सिद्धिदात्री लक्ष्मी पूजन
और कुछ दुर्लभ दीक्षाएं भी
⊙ महालक्ष्मी प्रत्यक्ष दर्शन दीक्षा
⊙ निर्बाध सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा
⊙ सम्पूर्ण रूप - यौवन प्राप्त कायाकल्प दीक्षा
⊙ निखिलेश्वरानन्द ब्रह्म स्वरूप विराट दर्शन दीक्षा
⊙ त्वरित मनोवांछित कार्य पूर्णता सिद्धि दीक्षा
पूरे परिवार के साथ आएं, हम सब गुरुभाई - बहिन आप सबकी इन्तजार कर रहे हैं,
पूरे घर में, जीवन में और दिल में जगमगाहट जगाने के लिए
नियम : प्रत्येक साधक को २ नवम्बर के प्रातः तक जोधपुर पहुंच जाना चाहिए, वापिस ४ नवम्बर को प्रातः प्रस्थान कर सकते हैं। शिविर शुल्क मात्र ३३०/- है। शिविर के नियमों का पालन अनिवार्य है।
: स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : ०२९१-३२२०९

इक्कीस वर्षीय भैरवी ह्रीं जिसके पास दुर्लभ तंत्र है!

वर्तमान काल "तंत्र काल" कहलाता है, समय का चक्र बराबर घूमता रहता है, और उसी प्रकार से युग परिवर्तन होता रहता है, वर्षों पहले पूरे भारतवर्ष में तन्त्र का बोलबाला था और तांत्रिकों को भारत वर्ष में अत्यन्त ही सम्माननीय रूप में देखा जाता था, गुरु गोरखनाथ, मत्स्येन्द्र नाथ, योगी भैरवानन्द, स्वामी औघड़ानन्द आदि को आज भी हम सम्माननीय दृष्टि से देखते हैं, जिन्होंने भारत की प्राचीन तन्त्र विद्या को जीवित रखा और हमारे पूर्वजों की ख्याति को सुरक्षित रूप में हमें प्रदान कर के गये।

पर बाद में कुछ तो पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति हम पर हावी हो गई और इन चीजों को ढकोसला तथा पाखण्ड माना जाने लगा, और फिर कुछ ऐसे पाखण्डी और ढोंगी तांत्रिक भी भारत वर्ष में चारों तरफ फैल गये, जिन्होंने देह सुख को ही तन्त्र मान लिया, लम्बी-लम्बी जटाएं, विचित्र वेशभूषा और ऊटपटांग कार्यों से जनता का विश्वास इन पर से हटने लगा, और 'तांत्रिक' शब्द अपने-आप में घटिया, डरावना और घृणित बन गया।

पर फिर अब युग परिवर्तन हुआ है, भारत की जन चेतना में तांत्रिकों के प्रति आस्था पैदा हुई है, भारतीय जन मानस ने यह समझा है कि **भारतीय तंत्र तो अपने-आप में सही है, उचित है और प्रामाणिक है, परन्तु कुछ भ्रष्ट तांत्रिकों के हाथों में यह विद्या चली जाने से बदनामी हो गई है,** अब उन्होंने पुनः तन्त्र की ओर अपना आकर्षण दिखाया है, उन्होंने तंत्र साधनाएं सम्पन्न की हैं, ये भारतीय किसी मठ या मन्दिर के चक्कर में नहीं पड़े, ये किसी औघड़ या बाबाओं के शब्द जाल में नहीं उलझे और न इन्होंने कोई तन्त्र की दीक्षा ही ली, इन्होंने तो इस बात को समझने की कोशिश की, कि क्या भारतीय तंत्र सही और प्रामाणिक है? क्या हमारे पूर्वजों ने जो विद्या भारत में प्रस्तुत की थी वह प्रामाणिक है, और क्या उन विद्याओं को जन साधारण समझ सकता है?

और इसी भावना के फलस्वरूप उन्होंने कुछ क्रियाएं, साधनाएं प्रारम्भ की थीं, न तो वह श्मशान में गये, न उन्होंने मांस और मदिरा का सेवन किया, और न ही अपने गृहस्थ जीवन में किसी भी प्रकार का व्यतिक्रम आने दिया, उनका अपना गृहस्थ जीवन सुचारु रूप से चलता रहा, और साथ ही साथ अपना व्यापार या नौकरी करते हुए इन साधनाओं की ओर प्रवृत्त हुए तथा अपने घर में ही मामूली उपकरणों के माध्यम से मंत्र-जप एवं साधनाएं सम्पन्न कीं, और इसके माध्यम से उन्होंने आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किये।

इन सब के करने से उनका तांत्रिक बनने का कोई स्वप्न नहीं, वे तो अपनी समस्याओं से ग्रस्त थे और इन समस्याओं का निराकरण विज्ञान के पास नहीं था, वे मानसिक रूप से परेशान थे, अपने पुत्र के व्यवहार से दुखी थे, पुत्री के विवाह में विलम्ब होने से परेशान थे, पति-पत्नी के मतभेद से चिन्तित थे और इनका उत्तर न तो विज्ञान के पास था और न ही अध्यात्म के पास, इसका उत्तर तो तंत्र के द्वारा ही सम्भव हो सकता था और उन्होंने इससे सम्बन्धित मंत्र-जप करना शुरू कर दिया, और उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि वे अपनी स्वयं की समस्याएं स्वयं हल कर सकते हैं, इसके लिए न तो पाखण्डी गुरुओं के चक्कर में पड़ने की जरूरत है, और न मठों, आश्रमों पर माथा रगड़ने की आवश्यकता है, और इसीलिए जन साधारण में इसके प्रति उत्सुकता और चेतना प्रारम्भ हुई, सामान्य और मध्यम स्तर के व्यक्ति ही नहीं अपितु उच्च स्तर के प्रबुद्ध व्यक्ति भी इन साधनाओं में रुचि लेने लगे, अपने - आप को भारतीय और तांत्रिक कहलाने में गौरव अनुभव करने लगे, उनके मन से हीन भावना दूर हो गई और वे पहले से ज्यादा सुखी और पहले से ज्यादा सम्पन्न हो सके।

ऐसी स्थिति में कुछ जिज्ञासु साधकों ने आगे बढ़ कर ऐसे व्यक्तियों की खोज प्रारम्भ की, जो अखबारों में चर्चित तो नहीं थे, जो आश्रमों में महन्त और मठाधीश तो नहीं थे, परन्तु जो सही अर्थों में साधक थे, और उनके पास जाकर

उन्होंने उन साधनाओं को सीखने की कोशिश की, जो उनकी दैनिक जीवन की समस्याओं को सुलझा सके, जो उनके जीवन की कठिनाइयों में मार्ग प्रस्तुत कर सकें, जो उनकी बाधाओं और विपत्तियों का निराकरण कर सके।

और मैंने देखा कि इस मामले में साधिकाएं (स्त्रियां) आगे रहीं, प्रकृति ने हठ और स्वाभिमान का विशेष गुण स्त्रियों को दिया है, जब वे किसी बात का निश्चय कर लेती हैं, तो उसे पूरा करके ही छोड़ती हैं, तंत्र के क्षेत्र में भी स्त्रियों ने जब भाग लेना शुरू किया, तो पिछले कुछ वर्षों में कई स्त्रियों के नाम उभर कर सामने आये, जो अपने-आप में साधना के क्षेत्र में अद्वितीय हैं।

यह आवश्यक नहीं है कि कोई प्रौढ़ा या वृद्धा स्त्री ही साधना में सफलता प्राप्त करे, साधना के लिए न तो किसी वर्ग, जाति और न आयु का बन्धन ही है, कोई भी स्त्री या पुरुष साधना सम्पन्न कर सकता है, इस में तरुणियों ने भी रुचि ली, और जब उन्होंने साधनाएं सम्पन्न कीं, उनके द्वारा चमत्कार दिखाये जाने लगे, तो प्रबुद्ध वर्ग, बुद्धिवादी और महत्वपूर्ण व्यक्ति भी साहस करने लगे कि वास्तव में **तन्त्र पुरुषों की ही बपौती नहीं है, अपितु स्त्रियां भी साधना में सफलता पा सकती हैं, ऐसी ही साधिकाओं में एक नाम उछल कर आया है, जिसे 'हीनू' कहते हैं।**

मैं नहीं कहता कि उसका पूरा नाम क्या है, वह किस की शिष्या है, ये विद्याएं उसने कहां से सीखीं, पर अखबारों में जम कर इसकी प्रशंसा हुई है, वैज्ञानिकों ने उसका परीक्षण किया है, उसके चमत्कारों को देखकर उन लोगों ने दांतों तले उंगली दवाई है, वे यह मानने के लिए बाध्य हुए हैं, कि भारतीय तंत्र अपने-आप में समृद्ध और जीवित है।

''मनाली'' हिमाचल प्रदेश का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है, जहां हजारों सैलानी घूमने जाते हैं, यहीं से एक सड़क रोहतांग दर्रे की ओर जाती है, व्यास मन्दिर से इसी सड़क पर लगभग पन्द्रह मील आगे एक महत्वपूर्ण आश्रम है, जिसमें दो-तीन वृद्ध स्वामी रहते हैं और उसके पास में ही हीनू नाम की तरुणी अपने माता-पिता और भाई के साथ अत्यन्त सामान्य तरीके से रहती है।

पर वह अत्यन्त ही उच्चकोटि की तांत्रिका है, शायद पूर्व-जन्म में वह कोई महत्वपूर्ण तांत्रिका रही है, यों भी हिमाचल में तंत्र अभी तक जीवित है, और कई स्थान तो ऐसे हैं, जहां आज भी विज्ञानी उनके चमत्कारों को देख कर आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

पिछली यात्रा में मैंने इस हीनू को देखा, तो मुझे उसका पूर्वजन्म स्मरण हो आया और मैंने उसके यहां लगभग दो घण्टे बिताये, उसको भी कुछ ऐसा आभास हुआ कि पूर्वजन्म में इस व्यक्तित्व से मेरा किसी न किसी रूप में सम्बन्ध रहा है।

मेरे साथ दस-बारह संन्यासियों और गृहस्थ शिष्यों की टोली थी, और उसने मेरे कहने पर ऐसे कई तांत्रिक कार्य पल भर में सम्पन्न कर दिखाये, जो अपने-आप में आश्चर्यचकित कर देने वाले हैं, ये ऐसे चमत्कार हैं, जिन पर सहसा विश्वास नहीं होता, उसने कुछ ही पलों में सौ-सौ के नोटों की वर्षा कर दी और मेरे साथ जो गृहस्थ शिष्य थे, हरीलाल, कृपा राम, भिवंडी राम, रतन लाल आदि के पास ये नोट आज भी रखे हुए हैं।

''भूतों के द्वारा'' उसने कई कठिन और असम्भव कार्य पल भर में करके दिखा दिये, जब रतन लाल ने कहा कि तुम ऐसी ही तांत्रिका हो, तो मेरे घर में एक बक्सा पड़ा है वह ला कर दिखाओ, तो मैं तुम्हे जानूं, और हीनू ने मात्र दो मिनट में ही वह बक्सा रतन लाल के सामने रख दिया और उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं, यही नहीं अपितु जब मैंने कहा 'हीनू' तुम्हें जमीन पर नहीं अपितु जमीन से छः फीट ऊपर शून्य में आसन लगाना है और साधना करनी है, तो उसने मेरे सामने ही शरीर स्थित सभी चक्रों को जाग्रत किया और अचानक वह जमीन से ऊपर उठ गई, हवा में ही उसने पद्मासन लगाया और ध्यानस्थ हो गई। तीन-चार संन्यासी शिष्यों ने उसको नीचे झुक कर आ-जा कर देखा, तो वास्तव में ही वह शून्य में स्थिर थी, एक-दो गृहस्थ शिष्यों ने तो उसके इस प्रकार के फोटो भी लिये।

उसने कहा मैंने ये साधनाएं कामाक्षा मन्दिर में और उसके पास श्मशान में रह कर सम्पन्न की हैं, **मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य तंत्र को सम्पूर्णता के साथ समझना है, सीखना है, और आज के इस विज्ञान के सामने चुनौती के साथ खड़े हो कर दिखा देना है कि तंत्र वास्तव में ही प्रामाणिक और महत्वपूर्ण है, तंत्र के माध्यम से धनाढ्य और सम्पन्न बना जा सकता है,** किसी भी प्रकार के कार्यों को सम्पन्न किया जा सकता है, और इसके माध्यम से विज्ञान को चुनौती दी जा सकती है।

फिर उसने तांत्रोक्त विधि से गुरु पूजन किया और अपने-आप में पूर्ण समर्पण भाव से विनीत हो कर के कहा— ''ये सभी विद्याएं तो पूर्वजन्म के संस्कारों के फलस्वरूप जल्दी ही प्राप्त हो गई हैं, पर अब मैं गम्भीरता से उच्चकोटि की साधनाएं सम्पन्न करना चाहती हूं, सीखना चाहती हूं, मुझे आपका सान्निध्य और संरक्षण चाहिए।''

वास्तव में ही भारत को अपने पूर्वजों पर, तन्त्र पर और हीनू जैसी साधिकाओं पर गर्व है।

— एम. आर. वशिष्ठ
पण्डोह

लखनऊ शिविर

नवरात्रि का अर्थ ही होता है कि जीवन के नौ रसों को अपने - आप में भर लिया जाए और यह क्रिया केवल साधना के माध्यम से ही सम्भव है। हम इस वर्ष की आश्विन नवरात्रि में साक्षात् पूज्यपाद गुरुदेव के श्री चरणों तले बैठ कर उन रहस्यों को सुन सकेंगे, समझ सकेंगे, जिनकी व्याख्या एक दुर्लभ घटना है और साथ ही उन्हें अपने जीवन में उतार सकेंगे. . .

यदि इस बात की जिज्ञासा प्रकट की जाए कि समस्त साधनाओं के मध्य सर्वोच्च विद्या या साधना कौन-सी है, तो निःसंदेह सभी मतों के उच्चकोटि के साधक एक मत से कहेंगे - **श्री विद्या साधना।** श्री विद्या साधना ही समस्त साधनाओं की मूल मानी गई है और इसकी अधिष्ठात्री है दस महाविद्याओं में से एक **षोडशी त्रिपुर सुन्दरी।** गुरु परम्परा से ज्ञात यह विद्या अर्थात् यह साधना इतनी उच्चकोटि की रही कि भगवत्पाद आद्यशंकराचार्य के पश्चात् इसके ज्ञाता और मर्मज्ञ न रह जाने से लुप्त प्राय हो गई एवं इसके अभाव में ही साधना की सम्पूर्ण परम्परा ही भारत से लुप्त प्राय हो गई। श्री विद्या साधना का सीधा सा तात्पर्य है श्री अर्थात् वैभव एवं विद्या अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान। जीवन के दोनों पक्ष भौतिक एवं आध्यात्मिक को लेकर चलने वाली इस श्रेष्ठतम साधना के विषय में **'योगिनी हृदय'** नामक ग्रंथ में स्पष्ट कहा गया है –

वागुरामूलवलये सुत्रायाः कवलीकृताः
तथा मन्त्राः समस्ताश्च विद्यायामंत्र संस्थिता

अर्थात् "जिस प्रकार मछली को फंसाने के जाल के सभी तन्तु लोहे के वलय में गुंथे होते हैं उसी प्रकार श्री विद्या मंत्र में समस्त मंत्र समाहित हैं।"

यद्यपि श्री विद्या से तात्पर्य मुख्यतः भगवती त्रिपुर सुन्दरी षोडशी से लिया जाता है किन्तु अपने विराट स्वरूप में श्री विद्या मूलतः ब्रह्म विद्या एवं आत्म साक्षात्कार करा देने वाली महाविद्या है, यही कुण्डलिनी जागरण एवं सहस्रार को चैतन्य करने की भी अधिष्ठात्री देवी है एवं पुराणों में इनका स्वरूप इतना अधिक विशाल माना गया है कि देवी के दस मुख्य विग्रहों की उत्पत्ति की आधारभूता भी इन्हीं को माना गया है – **कुमारी, गौरी, रमा, चण्डिका, कात्यायनी, त्रिरूपा, भारती, काली, दुर्गा** एवं तंत्र की अधिष्ठात्री **ललिताम्बा** की उत्पत्ति भी इन्हीं से बताई गई है। कालांतर में इनसे उत्पन्न विग्रहों की पूजा, आराधना ही मुख्य हो गई एवं मूल साधना रहस्य अति दुरूह होने के कारण लुप्त हो गया। यद्यपि कुछ उच्चकोटि के साधक ललिताम्बा की साधना परम्परा से जुड़ कर तंत्र की ऊंचाइयों तक पहुंचे एवं श्री विद्या साधना को जीवित रखने के प्रयास किए, किन्तु मूल रूप में यह विद्या गुरु परम्परा में निहित रही एवं आद्यशंकराचार्य के पश्चात् फिर इतना उच्चकोटि का कोई व्यक्तित्व ही नहीं रहा, जो इसको धारण कर सकता, इसके अर्थ को स्पष्ट कर सकता। **श्री विद्या के मन्त्र सामान्य मंत्र नहीं हैं, एवं इनका सही ज्ञान प्राप्त करना व उसे अपने शिष्य में उतार देना केवल सद्गुरु की ही क्रिया होती है।** श्री विद्या के सम्बन्ध में कहा गया है कि इसका छः प्रकार से तात्पर्य है– भावार्थ, निगमार्थ, सम्प्रदायार्थ, कौलिकार्थ, सर्व रहस्यार्थ एवं महातत्वार्थ।

स्पष्ट है कि इन छः प्रकार के भेदों को केवल सद्गुरु ही अपने शिष्य में उसकी पात्रता के अनुसार उतार सकते हैं और यही क्रिया एक युग बाद इस नवरात्रि में पूज्यपाद गुरुदेव ने साक्षात् सम्पन्न करने का निश्चय किया है। सामान्य रूप में त्रिगुणात्मक शक्तियों – महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी का पूजन करके अथवा भगवती जगदम्बा के तीव्र व प्रकट स्वरूप दुर्गा की साधना के द्वारा, नवार्ण मंत्र की साधना के द्वारा अनेक नवरात्रियां सम्पन्न हो ही चुकी हैं, जबकि यह संक्रमण का काल है और परम्परागत ढंग से कुछ अलग हट कर करने पर ही जीवन में वह सब कुछ नहीं हो सकता है, जिससे एकाएक बहुत कुछ घटित हो सके। श्री विद्या साधना इसी का उत्तर है, **यद्यपि इसको सामान्य करने अथवा पात्रता का विचार किए बिना देने के विषय में शास्त्रों की कठोर आज्ञा है, कि जिस प्रकार स्त्री अपने शील की रक्षा करती है उसी प्रकार इसकी**

रक्षा की जाए, किन्तु पूज्यपाद गुरुदेव ने यह निश्चय इस आधार पर किया कि उनके समस्त शिष्य वर्षों से सामान्य पद्धति से पूजन करने, सतत गुरु साधना करने के उपरान्त आज इस स्थिति में हैं कि उन्हें इस देश की सर्वोच्च विद्या से न केवल परिचित कराया जाए वरन् उसे उनके जीवन में भी उतारा जाए। यही द्वंद्व आज से युगों पूर्व आद्यशंकराचार्य के समक्ष भी आया था, जब उन्होंने अपने देश की प्राचीन विद्याओं को जाग्रत करना प्रारम्भ किया था और समाज ने, रूढ़िवादी वर्ग ने उनकी जमकर आलोचना की थी किन्तु उनका सहज उत्तर था कि मेरे समक्ष काल की एक सीमित अवधि है, जबकि लक्ष्य विशाल है और मैं यह कार्य सम्पन्न करूंगा ही, यदि इस भीड़ में मुझे दो - मोती भी मिल सके तो वे इस देश की परम्पराओं को जीवित रखने के लिए सक्षम होंगे, ठीक इसी प्रकार के वचन, उसी वाणी में पूज्यपाद गुरुदेव ने एक युग बाद उच्चरित किए हैं। उनका भी यही कहना है **''मैं तो एक इंजन की भांति विशाल रेल को खींच रहा हूं, इसमें कहीं कोयला लदा है, कहीं गेहूं, कहीं कोई अन्य पदार्थ, तो कहीं सोना भी। मेरे समक्ष काल की एक सीमित अवधि है और इसी में मुझे इस विशाल रेल जन समूह को लक्ष्य पर पहुंचा देना है।''**

केवल ज्ञान की दृष्टि से ही नहीं वरन् जीवन की व्यवहारिकता की दृष्टि से भी श्री विद्या साधना जीवन की अन्यतम साधना है। जिस साधना के बल पर भारत विश्व का सिरमौर बना, धन एवं ज्ञान दोनों की दृष्टि से वह श्री विद्या साधना ही है, जिसका व्यवहारिक रूप है **श्री चक्र साधना** अथवा **श्री यंत्र साधना**। श्री यंत्र से शायद ही कोई भारतीय होगा जो परिचित नहीं, किन्तु श्री यंत्र की वास्तविक साधना का रहस्य किस प्रकार श्री विद्या साधना में गुरु मुख परम्परा में निहित है, इसका ज्ञान बहुत कम लोगों को है, और इस बार इसी ज्ञान को इस नवरात्रि शिविर में पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा स्पष्ट कर साधकों के जीवन में उतारा जाएगा एवं श्री यंत्र की साक्षात् स्थापना उनके ही अन्दर मंत्रात्मक रूप में इस प्रकार सम्पन्न की जाएगी, जिससे लक्ष्मी का शरीर में आबद्धीकरण हो सके।

यह सम्पूर्ण साधना शिविर एक प्रकार से महाविद्या साधना शिविर ही हो रहा है, क्योंकि जिसने भगवती त्रिपुर सुन्दरी षोडशी की श्री विद्या पद्धति से साक्षात् गुरु - चरणों में बैठ कर साधना कर ली, उसने एक प्रकार से दसों महाविद्याओं की ही साधना सम्पन्न कर ली, क्योंकि दस महाविद्या साधना क्रम में जहां प्रथम महाविद्या महाकाली मानी गई हैं, वहीं षोडशी की साधना अंतिम मानी गई है, क्योंकि यह अत्यन्त ही उच्चकोटि की साधना जो है, अन्य महाविद्याएं तो जीवन में भोग देने में समर्थ हैं अथवा मोक्ष देने में, किन्तु जो दोनों की उपलब्धि एक साथ सम्भव करा सके उसी का नाम षोडशी महाविद्या है —

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः
श्री सुन्दरी सेवनतत् पराणां
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव

अर्थात् जहां भोग है वहां मोक्ष नहीं है एवं जहां मोक्ष है वहां भोग नहीं, किन्तु श्री सुन्दरी (षोडशी) की साधना में तत्पर साधक को ये दोनों ही सुलभ हैं। कालांतर में श्री विद्या के आधार पर ही श्री चक्र साधना का प्रादुर्भाव हुआ, जिसके कारण उच्चकोटि के तंत्र साधकों ने अपना वर्चस्व प्रदर्शित किया और इसके माध्यम से स्वर्ण विज्ञान के क्षेत्र में भी अपना योगदान दिया। तंत्र की अधिष्ठात्री देवी ललिताम्बा का पूजन भी श्री विद्या साधना का ही अंग है, और इसी कारणवश नवरात्रि शिविर में ललिताम्बा साधना को भी मुख्य स्थान दिया गया है, जिससे साधक के जीवन में तंत्रमयता का उदय हो सके और वह भविष्य में जो भी साधनाएं तांत्रोक्त रूप से सम्पन्न करे, उसे उसमें पूर्ण सफलता मिले ही।

नवरात्रि का अर्थ ही होता है कि जीवन के नौ रसों को अपने - आप में भर लिया जाए और यह क्रिया केवल साधना के माध्यम से ही सम्भव है। जहां साधना शब्द का उल्लेख है वहां स्वतः ही गुरुपद की महत्ता स्पष्ट है, और यह तो सौभाग्य है कि हम इस वर्ष की आश्विन नवरात्रि में साक्षात् पूज्यपाद गुरुदेव के श्री चरणों तले बैठ कर उन रहस्यों को सुन सकेंगे, समझ सकेंगे, जिनकी व्याख्या एक दुर्लभ घटना है और साथ ही उन्हें अपने जीवन में उतार सकेंगे।

यह सम्पूर्णता का पर्व है और इसकी पूर्ति के लिए केवल साधनात्मक उपाय ही नहीं अथवा एक ही मंत्र की निरन्तर नौ दिनों तक आवृत्ति ही नहीं वरन् पूज्यपाद गुरुदेव की दीक्षाओं का भी क्रम निरन्तर बना रहेगा। **जो साधक १०८ दीक्षाओं** को प्राप्त करने के क्रम में आगे बढ़ चुके हैं अथवा **२१ दीक्षाओं** के लघु क्रम द्वारा अपने जीवन को संवारने का निश्चय कर चुके हैं, उनके लिए तो अनुपम अवसर होगा, जबकि शक्तिमयता के इन दिनों में **साक्षात् पूज्यपाद गुरुदेव, पूज्यनीया माता जी** एवं **पूज्य श्री नन्दकिशोर जी** की उपस्थिति मे सम्पूर्णता की ओर अग्रसर हुआ जा सकेगा।

वे साधक जो जबान के धनी और पक्के हैं

संकल्प लेने के साथ ही आवश्यक है उस संकल्प को पूरा करना। **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली इन्टरनेशनल फाउण्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट सोसाइटी''** के अन्तर्गत बनने वाले समाजोपयोगी जन हितार्थ **सिद्धाश्रम** एवं अन्य विशेष भवन, जिन्हें पूरा करने के लिए पूज्य गुरुदेव के सभी शिष्य कृत संकल्प हैं। यह कवल स्वप्न नहीं वास्तविकता है, और जिस कार्य को पूरा करने का संकल्प आप सब शिष्यों ने लिया है, जिसे गुरुदेव ने स्वीकृति प्रदान की है, वह कार्य प्रारम्भ हो गया है। इस श्रृंखला में जिन शिष्यों ने अपना संकल्प पूरा किया है, उनकी सूची दी जा रही है। आप भी अपना वचन निभाएं और संकल्प धनराशि **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली इन्टरनेशनल फाउण्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट सोसाइटी''** के नाम से क्रास्ड ड्राफ्ट द्वारा जोधपुर पते पर भेजें। आप द्वारा भेजी हुई धनराशि आयकर अधिनियम ८०-जी. के अन्तर्गत कर-मुक्त है।

नवरात्रि शिविर पर हम संकल्प के धनी इन सभी शिष्यों का सम्मान करेंगे–

नाम	स्थान	नाम	स्थान
श्री सुनील कुमार	नालंदा	श्री शिव राज पाण्डे	मिर्जापुर
श्री जय प्रकाश	अहमदाबाद	श्री अच्छे लाल यादव	फैजाबाद
श्री पंकज कुमार	पटना	श्री यज्ञदत्त शर्मा	दिल्ली
श्री जयनाथ मिश्रा (शर्मा)	आजमगढ़	श्री इन्द्रपाल सिंह	दिल्ली
श्री राम नारायण अग्रवाल	इटारसी	श्री देवेन्द्र कुमार	दिल्ली
श्री प्रेम कुमार लाकहा	५६ ए० पी० ओ०	श्री प्रेम राज	दिल्ली
श्री फतेह बहादुर	पटना	श्री विरेन्द्र गुप्ता	नई दिल्ली
श्री डॉ० प्रमोद भाई पटेल	सूरत	श्री दुर्गादास गांधी	गुड़गांव
के. श्रीनिवासन	तिरूच्चिरापल्ली	श्री रेणु पाठक	नई दिल्ली
श्री आर० एस० कौशिक	अम्बाला	श्री नरेश पाठक	नई दिल्ली
श्री दिनेश चन्द्र	बोकारो	डॉ० (श्रीमती) साधना	भोपाल
श्री जतिन पटेल	खण्डवा	श्री रणजीत बैनर्जी	रोहतास
श्री ओम प्रकाश पाण्डे	फैजाबाद	श्रीमती स्नेह लता बैनर्जी	रोहतास
श्री दीनानाथ यादव	वाराणसी	श्री संजय बैनर्जी	रोहतास
श्री के० एम० रवि कुमार	हैदराबाद	श्री संचिता बैनर्जी	रोहतास
डॉ० एम० एल० घरोटे	लोनावाला	श्री रंचिता बैनर्जी	रोहतास
श्री अशोक कु० कटारिया	चिन्दा वारा	श्री रश्मि बैनर्जी	रोहतास
श्री पी० एस० वर्मा	राजनांद गांव	श्रीमती उर्मिला शुक्ला	रोहतास
श्री एन० एस० शिकारवार	नई दिल्ली	श्री रणवीर कुमार	अम्बाला
कृष्णा देवी	नई दिल्ली	श्री हरिश पी० गोराला	शिमला
श्री एस० एस० करखनिस	हैदराबाद	श्री गोवर्धन एजेन्सी	बंगलौर

दैनिक साधना विधि
डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
मूल्य : १०/-
(डाक व्यय अतिरिक्त)
जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग साधना से प्रारम्भ होकर कुण्डलिनी जागरण की पूर्ण स्थिति में पहुंचना है। साधना के माध्यम से जीवन के कष्ट कटते हैं और उदय होता है नये, श्रेष्ठ, अहोभाव, परिपूर्ण आनन्ददायक जीवन का।
क्या आप नित्य प्रति साधना करते हैं?
– विशिष्ट साधनाओं के प्रारम्भ में क्या प्रक्रिया होनी चाहिए, क्या आपको इसका ज्ञान है?
– क्या निरन्तर पूजा, अर्चना के बाद भी आपको फल- प्राप्ति नहीं होती है?
– स्पष्ट है, कि आप को चाहिए शुद्ध साधनात्मक ज्ञान, दैनिक साधना विधान।
– जिसे सम्पन्न कर आप कोई भी विशेष साधना प्रारम्भ कर सकते हैं।
– हजारों, लाखों शिष्यों, पाठकों, साधकों की मांग को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा में दैनिक साधना का विधान ।
परम पूज्य गुरुदेव ''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी'' के आशीर्वाद से युक्त
उपलब्ध
दैनिक साधना विधि
आशीर्वाद : डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली
प्राप्ति स्थान :
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन - ०२९१-३२२०९
सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४, फोन : ०११-७१८२२४८, फेक्स : ०११-७१८६७००

चण्डी पत्रिका को उत्तर

भुवनेश्वर भारतीय

भुवनेश्वर भारतीय ने पिछले छः महीनों में चार पत्र **''चण्डी''** को लिखे और हमें उसकी प्रतिलिपि भेजी, इस बार भी मूल पत्र 'चण्डी' को भेजकर, उसकी प्रतिलिपि हमें भेजकर प्रार्थना की, कि 'चण्डी' के सम्पादक सत्य बात को, यथार्थ पत्र को छाप नहीं रहे हैं। मैं एक पत्रकार हूं और उनको भली प्रकार से जानता हूं, मुझे मालूम है कि इस पत्र को भी वे छापेंगे नहीं। कृपया इस पत्र को अपनी पत्रिका **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** में अवश्य ही प्रकाशित करें। उनके बार- बार किए गए अनुरोध की वजह से यह पत्र प्रकाशित कर रहे हैं।

परम श्रद्धेय सम्पादक महोदय,

चरणों में शत् - शत् नमन,

पत्र आगे बढ़ाने के पूर्व मैं अपना परिचय दे दूं कि मैं एक पत्रकार तथा विभिन्न आध्यात्मिक संगठनों से जुड़ा एक आध्यात्मिक व्यक्ति हूं। मैं आध्यात्मिक होने के कारण अपने मित्र सेवानन्द जी से ''चण्डी'' नामक पत्रिका का नियमित पाठक बना और **'चण्डी' में ही प्रकाशित आलोचनात्मक टिप्पणियों से प्रेरित होकर मुझे ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका पढ़ने की प्रेरणा मिली। एक पत्रकार होने के नाते मैंने उसकी तह में जाने का प्रयास किया और ''सिद्धाश्रम साधक परिवार'' से भी परिचित हुआ।** मुझे तो इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि विगत १० वर्षों से पूरे हिन्दुस्तान में जबरदस्त आध्यात्मिक वातावरण विनिर्मित हुआ है। प्राचीन मूल्यों धर्म, अध्यात्म - दर्शन, मंत्र-तंत्र, ज्योतिष के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है, यहां तक कि अपनी अंतिम सांस गिन रही लोकप्रिय पत्रिकाओं को भी मंत्र- तंत्र जैसे विषय को लेकर पत्रिका प्रकाशित करनी पड़ रही है। इस आध्यात्मिक वातावरण- सृजन में गायत्री परिवार, प्रजापति ब्रह्मकुमारी, राधा स्वामी, ओशो, सिद्धाश्रम साधक परिवार आदि संगठनों ने अप्रकाशित भूमिका का निर्वाह किया है, और इन आध्यात्मिक क्रांतियों की सफलता का राज समयानुकूल, देशकाल परिस्थिति के अनुकूल, जन अभिरुचियों को ध्यान में रखकर धर्म व अध्यात्म का प्रतिपादन किया जाता रहा है।

वर्तमान समय में प्राचीन ग्रंथों में बनाई हुई बातों का हूबहू अनुसरण करना सम्भव नहीं है। तत्कालीन सभी इन संगठनों से जुड़े संगठन प्रमुखों ने धर्म ग्रन्थों से ली गई साधनाओं व तथ्यों में व्यापक संशोधन अपने विवेकानुसार किये हैं।

रही साधनाओं में सफलता - असफलता की बात, जिसमें आपके पास **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** के असफल साधकों के पत्र पहुंचे हैं, इसके विषय में तो यही कहना है कि आप जैसे सिद्ध पुरुष या स्वयं भगवान शंकर जी भी आ जायें, तो भी आज के अश्रद्धा - अविश्वास के माहौल में कितनी भी अच्छी साधना, कितने भी अच्छे निर्देशन में क्यों न हो, कोई भी साधक सफल नहीं हो सकता, और साधना की सफलता का आधार साधक की मनोभूमि, श्रद्धा , आस्था और समर्पण पर निर्भर करता है।

मैंने मंत्र - तंत्र - यंत्र विज्ञान पत्रिका द्वारा ली जाने वाली राशि के सदुपयोग - दुरुपयोग के बारे में पता लगाने का प्रयास किया, तो पता चला कि उनका आगामी कदम मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका को भारत की ७ प्रमुख भाषाओं में प्रकाशित करने की योजना वन चुकी है, तथा ११ करोड़ की लागत से इस पत्रिका परिवार द्वारा प्राचीन गूढ़ विद्याओं के विस्तार, अनुसंधान हेतु अत्यन्त उपयोगी, भव्य 'सिद्धाश्रम' भवन निर्माण का कार्य भी जारी है।

रही **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका द्वारा आर्थिक शोषण की बात, तो ऐसा कौन- सा क्षेत्र बचा है, जहां आम आदमी का शोषण नहीं हो रहा है, जहां शेयर, शराब, दवाई, व्यवसायियों - दलालों द्वारा ऐसे अनेक सुनियोजित षड्यंत्रों द्वारा आम लोगों को लूटने का उपक्रम न जारी हो? क्या इस तरफ चण्डी पत्रिका का ध्यान गया है?

यदि मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आम जनता द्वारा ली जाने वाली कमाई का उपयोग - सदुपयोग प्राचीन धर्म - दर्शन, अध्यात्म प्रसार - प्रचार, उन्नयन में लगाता है, तो आप जैसे अध्यात्म प्रेमी को तो कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

रही बात **'चण्डी'** के माध्यम से आम लोगों को **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** पत्रिका के षड्यंत्रों से बचाने की, तो मेरे जैसे चण्डी के अनेक जागरूक पाठक, जो यदा - कदा **'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'** पढ़ते थे, उन्हें आपके नियमित आलोचना प्रकाशन से 'चण्डी' के पाठकों को मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पढ़ना पड़ता है, क्योंकि यह मानव की कमजोरी है कि जिस व्यक्ति, संस्था का विरोध किया जाता है, जिस चीज को न करने की मनाही की जाती है, वह वही करता है। आपकी नियमित 'आलोचना' से चण्डी के शत - प्रतिशत पाठक 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' व 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' **''डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी''** से परिचित हो गये हैं। 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पर आपके विरोध का तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ रहा है, **उनके ५ प्रतिशत सदस्य भी 'चण्डी' से नहीं जुड़ पाये हैं,** जबकि आपके पूरे १०० प्रतिशत पाठक ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका से जुड़ गये हैं।

आप जैसे लोगों के विरोध ने ही 'डॉ० श्रीमाली जी' एवं 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' को हीरो बना दिया है। यह उसी का प्रतिफल है, कि मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान लाखों प्रतियों में नित सफलता की ओर अग्रसर है और आगामी ७ भाषाओं में प्रकाशन की तैयारी कर रहा है।

'सिद्धाश्रम साधक परिवार' से जुड़े सदस्यों का कहना था कि इस वर्ष इलाहाबाद में आयोजित साधना शिविर ने पिछले सभी रिकार्ड तोड़कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। जहां विरोध होता है, वहां साधक- सदस्य और अति उत्साहित होकर सक्रिय हो जाते हैं। **आपके विरोध से किसी संगठन का हित संवर्धन होता हो, ऐसी आलोचना किस काम की। एक आध्यात्मिक व्यक्ति होने के कारण मेरी आकांक्षा है कि ''मंत्र - तत्रं - यंत्र विज्ञान'' व ''चण्डी'' एक - दूसरे के पूरक बनें,** आलोचना - प्रत्यालोचना **'सरिता'** जैसी पत्रिकाओं के लिए छोड़ दें, 'चण्डी' जैसी आध्यात्मिक पत्रिका को यह शोभा नहीं देता।

सधन्यवाद,

प्रतिलिपि - प्रेषित

१. सम्पादक, चण्डी , प्रयाग
२. मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, जोधपुर
३. युग निर्माण योजना, मथुरा

भवदीय

भुवनेश्वर भारतीय
सेक्टर - ६, भिलाई नगर (म. प्र.)

कुछ और पत्र

पिछले छः - आठ महीनों से लगभग पांच सौ से भी ज्यादा पत्र कार्यालय में आये, अलग - अलग प्रांतों के, विद्वानों के और साधारण पाठकों के भी, और अब भी बराबर आ रहे हैं। उन सबका आशय यही था कि ''चण्डी'' अपना प्रचार - प्रसार पाने के लिए आपके विरुद्ध बराबर विषवमन कर रही है और ऊटपटांग छाप रही है, आपको भी चाहिए कि आप सक्षमता से इसका जवाब दें। हमने ''चण्डी'' को भी पत्र लिखा है, पर वे हमारे पत्रों को प्रकाशित करते ही नहीं।

'चण्डी' पत्रिका निरन्तर आप जैसे पूज्य विद्वान के प्रति अनर्गल और ऊटपटांग बातें पिछले डेढ़ साल से छाप रही है और आप उसका कुछ भी जवाब नहीं देते। पिछले कुछ दिनों से इन्सानियत के स्तर से भी नीचे उतर कर छिछली बातें और मनगढ़ंत लोगों के झूठे पत्र छाप कर वह अपने ओछेपन का ही प्रमाण दे रही है।

सुभाष शर्मा, दिल्ली

मैं इलाहाबाद में ही रहता हूं और चण्डी तथा उनके सम्पादक महोदय के आचरण, कारगुजारियां और क्रियाकलापों को भली प्रकार से जानता हूं, और आप जैसे विद्वान पुरुष के बारे में छापने से पहले वे अपने गरेबान में झांक कर देख लें, तो ज्यादा उचित रहेगा। आप आज्ञा दें, तो मैं पत्रिका में निरन्तर उनकी कारगुजारियों को लिख कर भेजूं। कृपया आप स्वीकृति दें।

एस. के. मिश्रा, इलाहाबाद

मंत्र-तंत्र-यंत्र पत्रिका का विनम्र उत्तर

प्रिय पाठकों।

आप सब परम पूज्य गुरुदेव से परिचित हैं, और आपने जो पत्र भेजे हैं तथा उनमें जो आक्रोश व्यक्त किया है, उससे भी हम परिचित हैं। सम्पूर्ण भारत वर्ष में पूज्य गुरुदेव उच्चकोटि के विद्वानों में सम्माननीय दृष्टि से देखे जाते हैं और सैकड़ों संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित कर उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया है। रही बात **''चण्डी''** की, इस सम्बन्ध में मैं सभी शुभेच्छुओं से प्रार्थना करता हूं कि वे संयत रहें। 'चण्डी' हमारी पत्रिका की अग्रज है और उनके सम्पादक विद्वान हैं। पिछले लगभग पच्चीस - तीस वर्षों से उन्होंने देश में अध्यात्म का प्रकाश फैलाने का ही प्रयास किया है और कई बाधाओं के बावजूद भी ''चण्डी'' का प्रकाशन सतत चालू रखा है, हमें ऐसी पत्रिका और उनके विद्वान सम्पादक के प्रति सम्मान ही प्रदर्शित करना चाहिए।

रही वात ''चण्डी'' की तरफ से निरन्तर गुरुदेव के प्रति विषवमन और आलोचना की, तो यह अपने - अपने पत्र की नीति है, उनकी नीति आलोचना और विषवमन करके ही श्रेष्ठता प्राप्त करने की है, तो यह उनको समझना चाहिए कि ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' तथा ''चण्डी'' दोनों का ध्येय लगभग एक ही है। उनकी नीति आलोचना की है हमारी नहीं, मैं तो आज भी 'चण्डी' को अग्रज मानता हूं (क्योंकि वह ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' पत्रिका से काफी पहले से प्रकाशित हो रही है) और उसके विद्वान सम्पादक के प्रति सम्मान ही प्रदर्शित करता हूं, और हम सबको भी ऐसा ही सम्मान उनके प्रति रखना चाहिए।

– सम्पादक मण्डल

राजनीतिक भविष्य एवं शेयर मार्केट

विगत माह की ही भांति यह माह राजनीतिक दलों की आंतरिक उथल-पुथल से ही अधिक सम्बन्धित रहेगा। सकारात्मक रूप से जनता के लिए कोई भी दल न तो चिंतातुर होगा न रचनात्मक आंदोलन ही छेड़ेगा। इसके विपरीत अधिकांश राजनीतिक दलों की विश्वसनीयता भी संदिग्ध हो जाएगी। अनेक दल सैद्धान्तिक पक्षों से अलग हटकर हिंदू वोटों को भुनाने की कोशिश करेंगे तथा इससे राजनीतिक रूप से वातावरण अत्यंत कटुता पूर्ण होगा। दूसरी और पिछड़े वर्गों को एकत्रित करने के प्रयास तीव्र होंगे तथा उत्तर प्रदेश व बिहार के अनेक शीर्षस्थ नेता इस प्रक्रिया में समीप आकर राजनीतिक पर्यवेक्षकों को चकित कर देंगे। कश्मीर की स्थिति एक विचित्र से द्वंद्व में जा पड़ेगी, जहां उग्रवादी अत्यन्त सोची समझी नीति के तहत हिंसा की छिटपुट घटनाएं ही करेंगे जबकि मनोवैज्ञानिक दबावों का अधिक सहारा लेंगे। ऐसे द्वंद्वपूर्ण स्थिति में शासन कोई भी कठोर कदम उठाने में असमर्थ ही रहेगा। एक प्रमुख राजनीतिक नेता का (जो वर्तमान में कश्मीर से बाहर है) के सम्बन्ध आतंकवादियों से होने की चर्चा अखबार में प्रमुख रहेगी। महाराष्ट्र में श्री शरद पवार के विरूद्ध आरम्भ किया गया जनांदोलन एवं आरोप शनैः शनैः विस्मृति में खो जाएगा तथा इस प्रकरण से जुड़ी अन्य बातें भी सार्थकता खोती सी लगेंगी। उड़ीसा में आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति सघन बनी रहेगी, जबकि एन० टी० रामाराव पुनः समाचार पत्रों की सुर्खियां ग्रहण करेंगे। पश्चिम बंगाल एवं बिहार के सीमा विवाद गंभीर होंगे। सम्पूर्ण रूप से यह माह राष्ट्र क लिए निस्तेज किन्तु प्रबल भितरघात को देने वाला होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका सर्वथा शांत रहेगा तथा विश्व व्यापार में उसकी घटती साझेदारी उसे नए ढंग से नीतियों को निर्धारित करने के लिए विवश कर देगी, विशेष रूप से भारतीय उपमहाद्वीप तथा दक्षिण पूर्व के देशों के लिए। दक्षिण पूर्व के देशों में सत्ता संघर्ष की स्थितियां भड़क सकती हैं जबकि अफ्रीकी देशों एवं सर्वो समस्या में शांति आएगी। रूस के ऊपर संकट के बादल घने होंगे तथा उसे आंतरिक व बाह्य दोनों ही रूपों से चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। यूरोपीय देशों में सर्वथा शांति का वातावरण रहेगा तथा स्वीडन व भारत के सम्बन्ध सांस्कृतिक व आध्यात्मिक रूप से विशेष प्रगाढ़ होंगे।

शेयर मार्केट

राजनीतिक उहापोह के कारण शेयर होल्डर्स की मनःस्थिति में सुरक्षात्मक रुख प्रबल होगा तथा अफवाहों का वातावरण स्पेसिफाइड शेयर्स की ओर मुड़ने को विवश कर देगा। इसी कारणवश अनेक नान स्पेसिफाइड शेयर्स जो विगत दो माह से अच्छी स्थिति में जा रहे थे, अचानक मंदी का सामना करने को विवश होंगे। होटल व्यवसाय एवं मनोरंजन से सम्बन्धित अनेक शेयर्स अपनी स्थिति को सुदृढ़ करेंगे।

स्पेसिफाइड शेयर्स में जिन शेयर्स की स्थिति निश्चित रूप से मजबूत रहेगी तथा जिनके भाव में एक दम से उछाल आने की सम्भावना है, वे इस प्रकार है— ए० सी० सी०, बजाज आटो, पॉन्ड्स, हिन्दुस्तान लीवर, फाइजर, बाम्बे डाइंग, ओर के, माइको, आई० टी० सी०, ब्रिटानिया, जे० के० इंडस्ट्रीज।

स्पेसिफाइड शेयर्स में ही द्वितीय स्तर के शेयर्स इस प्रकार रहेंगे- टाटा टी, सेंचुरी, हिन्दुस्तान सीबा, रिलायंस, रेकेट एण्ड कोलमेन, ग्रेसिम, जुआरी, रेमण्ड इस्कोर्ट्स एवं ग्लैक्सो।

नानस्पेसिफाइट्स शेयर्स के वर्ग के कुछ शेयर्स न केवल बाजार की स्थिति से अप्रभावित ही रहेंगे वरन वे उन्नति की ओर भी अग्रसर हो सकेंगे। ऐसे ही शेयर्स में कुछ प्रमुख श्रेयर्स के नाम इस प्रकार हैं— डनलप इंडिया, हिन्दुस्तान जिंक, डी० सी० एम० टोयटा, इस्कोर्टस टैक्टर्स, एल्गी टायर्स, होटल लीली, गोदावरी फ़र्टीलाइजर्स, गुजरात लीज एवं हेक्स्ट।

यद्यपि समस्त भारत में स्फेसिफाइड शेयर्स ही वर्चस्व बनाए रखेंगे किन्तु दिल्ली शेयर मार्केट में नए शेयर्स का भी बोल- बाला रहेगा।

महालक्ष्मी विशेषांक : दीक्षा व सामग्री परिशिष्ट

दीपावली पर्व पर विशेष छूट

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
धनाक्ष यंत्र	पीछे पोस्ट कार्ड संलग्न	
स्फटिक माला	११	३००/-
हकीक माला	११	१५०/-
गुणनिधी यंत्र	१३	६०/-
धनवर्षिणी यंत्र	१३	६०/-
प्रति लघु नारियल	१३	२१/-
रत्न पात्र	१४	६०/-
स्वर्ण चक्र	१४	६०/-
सौभाग्यवर्धिनी	१४	४०/-
क्षीरोद्भवा	१४	१५/-
ह्रीं यंत्र	१४	१२०/-
विष्णु प्रिया गुटिका	१५	६०/-
नर्मदेश्वर शिवलिंग	१५	६०/-
कमलगट्टे के बीज	१५	३/-
पद्मावती फल	१५	२१/-
मूंगे की माला	१५	१५०/-
बिल्ली की नाल	१६	३०/-
भोगवरदा	१६	६०/-
सुखदा	१६	६०/-
तांत्रोक्त नारियल	१६	८०/-
सौन्दर्य मुद्रिका	१७	१२०/-
केलन	१७	१२०/-
स्वर्णाकर्षण गुटिका	१७	१२०/-
पारद श्री यंत्र	१७	३००/-
कमल गट्टे की माला	१८	१५०/-
हत्था जोड़ी	१८	३००/-
साबर माला	१८	१२०/-
लक्ष्मी वर-वरद माल्य	१९	१५०/-
हनुमान चित्र	२६	२०/-
हनुमान यंत्र	२६	२४०/-
अष्ट लक्ष्मी यंत्र	२९	२४०/-
प्रति हकीक के दाने	२९	२/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
पीली हकीक माला	२९	१५०/-
पद्मावती यंत्र	३२	२४०/-
रुद्राक्ष माला	३२	३००/-
कनकधारा यंत्र	३३	२४०/-
अखण्ड सौभाग्यवती यंत्र	३४	२४०/-
पुत्रदा यंत्र	३४	२४०/-
आरोग्य यंत्र	३४	२४०/-
आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र	३४	२४०/-
राज्य द्वारा विजय प्राप्ति यंत्र	३४	२४०/-
शत्रु परास्त यंत्र	३४	२४०/-
व्यापार वृद्धि यंत्र	३४	२४०/-
बीजांकृत लक्ष्मी यंत्र	३४	२४०/-
महालक्ष्मी यंत्र	३६	२४०/-
चन्द्रवर्णा यंत्र	३६	२४०/-
लक्ष्मी चक्र	३६	६०/-
लघु कुबेर यंत्र	३६	२४०/-
प्रति सौभाग्य चक्र	३७	१५०/-
शतपत्रिका यक्षिणी गुटिका	३७	८०/-
यक्षिणी माला	३७	१५०/-
श्वेत हकीक माला	४३	१५०/-
एक हकीक पत्थर	४३	११/-
एक गोमती चक्र	४३	२१/-
एक मूंगा रत्न	४३	२५/-
पीला रत्न	४३	२५/-
एक चिरमी का दाना	४३	५/-
एक सिद्धि फल	४३	२१/-
महालक्ष्मी दिव्य यंत्र	४६	२४०/-
तांत्रोक्त कमल गट्टा माला	४६	१५०/-
एक सिद्ध बजरंग विग्रह	५२	१२०/-
तांत्रोक्त फल	५२	२१/-
गौरी-शंकर रुद्राक्ष	५२	८०/-
शंख माला	५३	१५०/-

सामग्री	पृष्ठ	न्यौछावर
नीलम रत्न (सामान्य)	५३	३००/-
कुटिला गुटिका	५३	१२०/-
मधुरूपेण रुद्राक्ष	५३	६०/-
मोती शंख	५३	१२०/-
एक समुखी	५३	६०/-
एक चक्री	५३	६०/-
एक उग्र शंख	५३	६०/-
श्री चक्र	५३	६०/-
चीलन	५३	३०/-
ज्योति चक्र	५३	६०/-
भैरव यंत्र	५८	२४०/-
राजमातंगीश्वरी यंत्र	६२	२४०/-

दीक्षा	न्यौछावर
मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा	३६००/-
आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा	३५००/-
गृहस्थ सुख समृद्धि दीक्षा	२१००/-
गुरु हृदयस्थ धारण दीक्षा	२१००/-
धन प्रदाता अप्सरा दीक्षा	२१००/-
वीर वेताल सिद्धि दीक्षा	५१००/-
अष्ट महालक्ष्मी दीक्षा	५१००/-
भविष्य सिद्धि दीक्षा	५१००/-
कुबेर सिद्धि दीक्षा	३५००/-
क्रिया योग दीक्षा	६०००/-
ऋण मुक्ति दीक्षा	१५००/-
रोग मुक्ति दीक्षा	२१००/-
धनवन्तरी दीक्षा	६००/-
महालक्ष्मी दीक्षा	२१००/-
सम्मोहन दीक्षा	३०००/-
यक्षिणी दीक्षा	२१००/-
ब्रह्माण्ड दीक्षा	६०००/-

नोट : साधना सामग्री आप हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा जोधपुर कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं, **किन्तु डाक द्वारा मंगाने की स्थिति में केवल हमारे जोधपुर केन्द्र से ही सम्पर्क करें,** ऐसी स्थिति में डाक खर्च भी देय होगा। सम्पूर्ण धन राशि पर मनीआर्डर कमीशन के रूप में यथोचित अतिरिक्त धन राशि पोस्ट ऑफिस द्वारा ली जाती है, जिसका संस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

चेक स्वीकार्य नहीं होंगे। ड्राफ्ट किसी भी बैंक का हो, वह **''मंत्र शक्ति केन्द्र''** के नाम से बना हो, जो जोधपुर में देय हो।

मनिऑर्डर या ड्राफ्ट भेजने का पता

मंत्र शक्ति केन्द्र, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी,जोधपुर-३४२००१(राज.),टेलीफोन : ०२९१-३२२०९

दीक्षा के लिए पहले से ही समय एवं स्थान तय कर अनुमति लेकर ही आएं

३०६,कोहाट इन्क्लेव,नई दिल्ली, टेलीफोन : ०११-७१८२२४८

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C. १३ , न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा गुरुधाम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली से प्रकाशित।

स अंक में विशेष
इस बार
तांत्रोक्त रूपेण आश्चर्यजनक
शीघ्र सिद्धि सफलतादायक दीक्षाएं
सर्वथा नये तरीके से, नये प्रकार से,
नयी पद्धति . . . सर्वथा पहली बार . . .
जैन ग्रन्थों में गोपनीय लक्ष्मी प्रयोग
आप मात्र पांच दिनों में प्रसिद्धि
के शिखर पर पहुंच सकते हैं
२१ दिनों में कुबेरवत् हो सकते
हैं : षोडशी स्तोत्र साधना से
सम्भव है यंत्रों के माध्यम से
जीवन के सुख सौभाग्य
आपत्ति उद्धारक : भैरव प्रयोग
हनुमान साधना
दिनांक २२ से २६ अक्टूबर ९४
सम्पर्क
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.), फोन-०२९१:३२२०९
सम्पर्क :गुरुधाम, ३०६, कोहाट
एन्क्लेव,पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४,
फोन : ०११-७१८२२४८
फेक्स : ०११-७१८६७००